प्रारंभिक पालि

(पालि प्राइमर का हिन्दी अनुवाद)

लिली डे सिल्वा
एम.ए., पीएच.डी.

विपश्यना विशोधन विन्यास

प्रारंभिक पालि

(पालि प्राइमर का हिन्दी अनुवाद)

लिली डे सिल्वा, एम. ए., पीएच. डी.

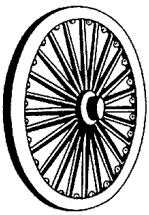

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

H60 - प्रारंभिक पालि

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : मार्च २०११

ISBN 978-81-7414-323-5

प्रकाशक:
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२ ४०३
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोनः ०२५५३-२४४९९८, २४४०७६, २४४०८६,
२४३७१२, २४३२३८; फैक्सः ९१-२५५३-२४४१७६
Email: vri_admin@dhamma.net.in
info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रकः
अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
जी-२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.,
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

प्रारंभिक पालि

विषय-सूची

पृष्ठ १.... **आमुख**

२.... **प्रारंभिक पालि**

५.... **पाठ - १** अ-कारान्त पुल्लिङ्ग संज्ञाओं के रूप
पठमा एकवचन, बहुवचन
वर्तमानकाल, प्रथम पुरुष, एकवचन, बहुवचन
क्रिया रूप

८.... **पाठ - २** अ-कारान्त पुल्लिङ्ग संज्ञाओं के रूप.... क्रमशः
दुतिया एकवचन, बहुवचन

११.... **पाठ - ३** अ-कारान्त पुल्लिङ्ग संज्ञाओं के रूप.... क्रमशः
ततिया - एकवचन, बहुवचन

१५.... **पाठ - ४** अ-कारान्त पुल्लिङ्ग संज्ञाओं के रूप.... क्रमशः
पञ्चमी एकवचन, बहुवचन

१९.... **पाठ - ५** अ-कारान्त पुल्लिङ्ग संज्ञाओं के रूप.... क्रमशः
चतुत्थी एकवचन, बहुवचन

२३.... **पाठ - ६** अ-कारान्त पुल्लिङ्ग संज्ञाओं के रूप.... क्रमशः
छट्ठी एकवचन, बहुवचन

२७.... **पाठ - ७** अ-कारान्त पुल्लिङ्ग संज्ञाओं के रूप.... क्रमशः
सत्तमी एकवचन, बहुवचन

३१.... **पाठ - ८** अ-कारान्त पुल्लिङ्ग संज्ञाओं के रूप.... क्रमशः
आलपन एकवचन, बहुवचन
अ-कारान्त नपुंसकलिङ्ग संज्ञाओं के रूप

३५.... **पाठ - ९** क्रियावाचक संज्ञा (gerund) Absolutive

३९.... **पाठ - १०** क्रियार्थक संज्ञा (Infinitive)

४२.... **पाठ - ११** पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग, वर्तमान कालिक कृदन्त (Present participle)

४६.... **पाठ - १२** क्रिया रूप - वर्तमान काल कर्तरि प्रयोग (active voice)

४९.... **पाठ - १३** क्रिया रूप - वर्तमान काल (active voice).... क्रमशः

५४.... **पाठ - १४** भविष्यत् काल

५७.... **पाठ - १५** विधिलिङ्ग/सत्तमी (Optative/Potential mood)
६०.... **पाठ - १६** आज्ञा / पंचमी (Imperative mood)
६३.... **पाठ - १७** भूतकाल अ-कारान्त वाले क्रिया के रूप
६६.... **पाठ - १८** आ-कारान्त स्त्रीलिङ्ग संज्ञाओं के रूप
६९.... **पाठ - १९** भूतकालिक कृदन्त (Past participle)
७४.... **पाठ - २०** इ-कारान्त स्त्रीलिंङ्ग संज्ञाओं के रूप
७७.... **पाठ - २१** वर्तमान कालिक कृदन्त (Present participle) स्त्रीलिंङ्ग
८२.... **पाठ - २२** भविष्यत् कालिक कर्मवाच्य कृदन्त (Future passive participle), potential participle
८४.... **पाठ - २३** प्रेरणार्थक क्रिया
८७.... **पाठ - २४** उ-कारान्त स्त्रीलिङ्ग संज्ञाओं के रूप
९०.... **पाठ - २५** इ-कारान्त पुल्लिङ्ग संज्ञाओं के रूप
९४.... **पाठ - २६** ई-कारान्त पुल्लिङ्ग संज्ञाओं के रूप
९७.... **पाठ - २७** उ-कारान्त तथा ऊ-कारान्त पुल्लिङ्ग संज्ञाओं के रूप
१००... **पाठ - २८** करने वाले (agent) तथा संबंध बताने वाले संज्ञाओं के रूप
१०४.... **पाठ - २९** इ-कारान्त तथा उ-कारान्त नपुंसक संज्ञाओं के रूप
१०७.... **पाठ - ३०** 'वन्तु' तथा 'मन्तु' प्रत्यांत विशेषणों के रूप
१११.... **पाठ - ३१** पुरुषवाचक सर्वनामों के रूप
११४.... **पाठ - ३२** सर्वनामों (Personal, Relative, Demonstrative तथा Interrogative pronouns) के रूप
१२१.... **पालि क्रियाओं (verbs) की सूची**
१२७.... **पालि शब्द संग्रह (क्रियाओं को छोड़कर)**
१३५.... **शब्दावली (हिन्दी-पालि)**
१४५.... **विपश्यना साहित्य**
१४९.... **विपश्यना साधना केंद्र**

आमुख

यह पुस्तक बहुत पहले ही लिखी जानी चाहिए थी, क्योंकि पालि के मेरे प्रथम गुरु स्वर्गीय जुलियस बेरुगोडा ने मुझसे ऐसी पुस्तक संकलित करने की इच्छा प्रकट की थी या नहीं तो बहुत वर्ष पहले उनके द्वारा लिखी पुस्तक का अनुवाद करने को कहा था। मुझे दुःख है कि मैं इस प्रारंभिक पालि को उनके जीवन काल में न लिख सकी, लेकिन इतने दिनों बाद भी मुझे लगता है मैं एक बड़ा दायित्व पूरा कर रही हूं।

जिस विधि का प्रयोग इस पुस्तक के लिखने में मैंने किया वह मेरी नहीं, मेरे गुरु की है। जब मैं प्रथम बार उनसे १९४९ में मिली तो मैंने उनसे पूछा कि पालि में कितने कारक हैं। मैंने डरते हुए ही पूछा था कि लैटिन की तरह ही मुझे पालि में भी शब्द रूप, धातु रूप याद करने होंगे। उन्होंने बड़ी ही व्यवहार कुशलता के साथ कहा यहां कारक है ही नहीं। मुझे आश्चर्य हुआ और मेरा कौतूहल बढ़ा और उनसे तुरंत अभ्यास आरंभ करने का अनुरोध किया। हम लोगों ने सीधे वाक्य बनाना शुरू किया जो धीरे-धीरे एक अभ्यास से दूसरे अभ्यास में लंबा होता गया, दिलचस्प और जटिल भी। इन अभ्यासों में इतना मजा था कि मुझे पालि पढ़ने में बड़ा आनंद आया। मि. बेरुगोडा ने मुझे पालि सिखाने के लिए सीहल भाषा में एक पालि व्याकरण तैयार किया जिसका नाम था 'पालि सुबोधिनी'। यह पुस्तक १९५० के आरंभिक दशक में प्रकाशित हुयी थी। यह अभी अप्राप्य है। इसकी प्रति मेरे पास भी नहीं है।

१९८० के प्रारंभिक दशक में मि. बेरुगोडा ने सीहल भाषा में एक दूसरा पालि व्याकरण लिखा। उनके अनुसार यह पालि सुबोधिनी से अच्छी थी। उन्होंने मुझे इसे अंग्रेजी में अनुवाद करने को कहा। यद्यपि इसका अनुवाद मैंने सीहल विभाग के पी. बी. भीगसकुम्बुरा की सहायता से किया, लेकिन जिस तरह इसमें अभ्यास सजाये गये थे उससे मुझे संतोष नहीं हुआ। मुझे लगा कि इसमें उन्होंने जो जोश में आकर सुधार किये हैं वे लाभकारक न होकर हानिकारक हैं, लेकिन यह बात मैं उनसे कैसे कहती? जो हो, वह पुस्तक पैसों के अभाव में नहीं छप सकी।

रचना के माध्यम से व्याकरण पढ़ाने की उसी विधि पर आधारित यह पुस्तक एक बिल्कुल नया प्रयास है। यहां भी क्रमशः विस्तृत होने वाली परन्तु वैसी नियमित शब्दावली ली गयी थी जो भाषा में बार-बार प्रयोग में लायी जाती है। प्रारंभ में सिर्फ 'अ'कारान्त पुल्लिग को लेकर एक-एक कर कारकों का परिचय कराया गया। वाक्य रचना के अभ्यास में वर्तमान काल, प्रथम पुरुष,

तथा अकारान्त क्रियाओं के एकवचन तथा बहुवचन रूप ही दिये गये हैं। जिरण्ड (क्रिया वाचक विशेषण) तथा (क्रियार्थक संज्ञा) आदि जो व्याकरणिक रूप हैं और जिनका प्रयोग पालिभाषा में बार-बार होता है इनसे विद्यार्थियों का शीघ्र परिचय कराया गया है ताकि वे लम्बे तथा अधिक जटिल वाक्य बनाने में समर्थ हो सकें। एक बार जब विद्यार्थी आधारभूत संरचना पर अधिकार कर लेता है तो एक-एक कर अन्य व्याकरणिक और वाक्य रचना संबंधी रूप सिखाये जाते हैं। ऐसा करने में उस सिद्धांत को ध्यान में रखा गया है जिसमें सीखे गये शब्दों के आकारिकी रूप में समानता हो, एक प्रकार का घनिष्ठ संबंध हो। पालि से हिन्दी तथा हिन्दी से पालि में अनुवाद प्रत्येक अभ्यास का अंगभूत भाग है।

यह पुस्तक प्रारंभिक पालि सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए है और यह सिर्फ पालि व्याकरण से परिचित कराती है। इसकी रूप रेखा इस तरह बनायी गयी है कि यह अधिक advanced पुस्तक जैसे A. K. Warder's की 'इन्ट्रोडक्शन टु पालि' के लिए सोपान का काम कर सके।

ए. पी. बुद्धदत्त ने न्यू पालि कोर्स पालि भाग १ में जिस शब्दावली को एकत्र किया है उसी से मैंने शब्दों को लिया है। इसलिए मैं उनकी ऋणी हूं। मेरे विश्वविद्यालय के गुरु प्रो. एन. ए. जयविक्रम के प्रति मैं धन्यवाद ज्ञापित करती हूं जिन्होंने इस पुस्तक के प्रथम प्रारूप को बड़ी सावधानीपूर्वक देखा और बहुमूल्य सुझाव दिये।

लिली डे सिल्वा

प्रारंभिक पालि

पालि भाषा की अपनी लिपि थी इसकी जानकारी नहीं। जिन देशों में पालि की पढ़ाई होती है, वहां की लिपि में ही पालि लिखते और पढ़ते हैं। भारत में देवनागरी, श्रीलंका में सिंहली, बर्मा में बर्मी और थायलैंड में कंबोज लिपि का प्रयोग करते हैं। पालि टेक्स्ट सोसायटी, लंदन, रोमन लिपि का प्रयोग करती है। अब इसको अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त है।

पालि वर्णमाला में ४१ अक्षर हैं, ८ स्वर और ३३ व्यंजन।

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ए ओ

व्यंजन

कण्ठ्य	क	ख	ग	घ	ङ
तालव्य	च	छ	ज	झ	ञ
मूर्धन्य	ट	ठ	ड	ढ	ण
दन्त्य	त	थ	द	ध	न
ओष्ठ्य	प	फ	ब	भ	म
प्रकीर्णक	य	र	ल	व	स	ह	ळ	अं

आचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का एवं श्रीमती इलायचीदेवी गोयन्का

शीलवान के ध्यान से, प्रज्ञा जाग्रत होय।
अंतर्तम की ग्रंथियां, सभी विमोचित होंय॥

पाठ - १

शब्दावली

अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द	
बुद्ध/तथागत/सुगत	- बुद्ध
मनुस्स	- मनुष्य
नर/पुरिस	- मनुष्य
कस्सक	- किसान
ब्राह्मण	- ब्राह्मण
पुत्त	- पुत्र, बेटा
मातुल	- मामा
कुमार	- लड़का
वाणिज	- व्यापारी (बनिया)
भूपाल	- राजा
सहाय/सहायक/मित्त	- मित्र
दारक	- लड़का, बच्चा

क्रियापद	
भासति	- बोलता है।
पचति	- पकाता है।
कसति	- जोतता है/ हल चलाता है।
भुञ्जति	- खाता है।
सयति	- सोता है।
पस्सति	- देखता है।
छिन्दति	- काटता है।
गच्छति	- जाता है।
आगच्छति	- आता है।
धावति	- दौड़ता है।

२. अ-कारान्त पुल्लिङ्ग शब्द की विभक्तिरूपसिद्धि

प्रथमा विभक्ति

पालि में प्रथमा विभक्ति को पठमा विभत्ति कहते हैं। प्रथमा विभक्ति एकवचन बनाने के लिए मूल शब्द में 'ओ' जोड़ते हैं। प्रथमा विभक्ति बहुवचन बनाने के लिए मूल शब्द में 'आ' जोड़ते हैं। इस तरह बनाये गये रूप का वाक्य में कर्ता के समान प्रयोग होता है।

एकवचन		बहुवचन	
१. नर + ओ	= नरो	नर + आ	= नरा
२. मातुल + ओ	= मातुलो	मातुल + आ	= मातुला
३. कस्सक + ओ	= कस्सको	कस्सक + आ	= कस्सका

३. नीचे दिये हुए क्रियापदों में जैसे भास, पच, कस मूल धातु है और 'ति' वर्तमानकाल प्रथम पुरुष एकवचन का प्रत्यय है।

मूल धातु में 'अन्ति' प्रत्यय जोड़ने से वर्तमान काल प्रथम पुरुष अनेकवचन का क्रियापद बनता है।

एकवचन		बहुवचन	
भासति	- (वह) कहता है।	भासन्ति	- (वे लोग) कहते हैं।
पचति	- (वह) पकाता है।	पचन्ति	- (वे लोग) पकाते हैं।
कसति	- (वह) जोतता है।	कसन्ति	- (वे लोग) जोतते हैं।

४. वाक्य रचना के उदाहरण

एकवचन

१. नरो भासति। - मनुष्य कहता है।
२. मातुलो पचति। - मामा पकाता है।
३. कस्सको कसति। - किसान जोतता है।

बहुवचन

१. नरा भासन्ति। - मनुष्य कहते हैं।
२. मातुला पचन्ति। - मामा पकाते हैं।
३. कस्सका कसन्ति। - किसान जोतते हैं।

अभ्यास - १

हिन्दी में अनुवाद करें।

१. भूपालो भुञ्जति।
२. पुत्ता सयन्ति।
३. वाणिजा सयन्ति।
४. बुद्धो पस्सति।
५. कुमारो धावति।
६. मातुलो कसति।
७. ब्राह्मणा भासन्ति।
८. मित्ता गच्छन्ति।
९. कस्सका पचन्ति।
१०. मनुस्सो छिन्दति।
११. पुरिसा धावन्ति।
१२. सहायको भुञ्जति।
१३. तथागतो भासति।
१४. नरो पचति।
१५. सहाया कसन्ति।
१६. सुगतो आगच्छति।

पालि में अनुवाद करें।

१. लड़के दौड़ते हैं।
२. मामा देखता है।
३. बुद्ध आते हैं।
४. लड़के खाते हैं।
५. व्यापारी जाते हैं।
६. मनुष्य सोता है।
७. राजा जाते हैं।
८. ब्राह्मण काटते हैं।
९. मित्र बोलते हैं।
१०. किसान जोतता है।
११. व्यापारी आता है।
१२. पुत्र काटते हैं।
१३. मामा बोलते हैं।
१४. लड़का दौड़ता है।
१५. मित्र बोलता है।
१६. बुद्ध देखते हैं।

पाठ - २

शब्दावली

अ-कारान्त पुल्लिङ्ग शब्द		क्रियापद	
धम्म	- धर्म, सत्य, स्वभाव, सदाचार, सिद्धान्त	हरति	- ले जाता है, हरण करता है।
भत्त	- भात, चावल, तण्डुल	आहरति	- ले आता है।
ओदन	- भात	आरुहति	- चढ़ता है।
गाम	- गांव, ग्राम	ओरुहति	- उतरता है।
सुरिय	- सूरज	याचति	- मांगता है।
चन्द	- चाँद	खणति	- खोदता है।
कुक्कुर/ सुनख/सोण	- कुत्ता	विज्झति	- बींधता है, छेदन करता है।
विहार	- विहार	पहरति	- मारता है, पीटता है।
पत्त	- पात्र	रक्खति	- रक्षा करता है।
आवाट	- गड्ढा	वन्दति	- वन्दना करता है, नमस्कार करता है।
पब्बत	- पर्वत		
याचक	- भिखारी		
सिगाल	- गीदड़		
रुक्ख	- वृक्ष, पेड़		

अ-कारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप

द्वितीया विभक्ति

दुतिया विभत्ति एकवचन बनाने के लिए मूल शब्द के अंत में 'अं' जोड़ते हैं। दुतिया विभत्ति अनेकवचन बनाने के लिए मूल शब्द के अंत में 'ए' जोड़ते हैं। इस तरह बनाया गया रूप वाक्य में कर्म के समान प्रयुक्त होता है। निश्चित गति का लक्ष्य भी दुतिया विभत्ति से व्यक्त होता है।

एकवचन		बहुवचन	
१. नर + अं	= नरं	नर + ए	= नरे
२. मातुल + अं	= मातुलं	मातुल + ए	= मातुले
३. कस्सक + अं	= कस्सकं	कस्सक + ए	= कस्सके

वाक्यरचना के लिए उदाहरण

एक वचन

१. पुत्तो नरं पस्सति। - पुत्र मनुष्य को देखता है।
२. ब्राह्मणो मातुलं रक्खति। - ब्राह्मण मामा की रक्षा करता है।
३. वाणिजो कस्सकं पहरति। - व्यापारी किसान को मारता है।

बहुवचन

१. पुत्ता नरे पस्सन्ति। - पुत्र मनुष्यों को देखते हैं।
२. ब्राह्मणा मातुले रक्खन्ति। - ब्राह्मण मामाओं की रक्षा करते हैं।
३. वाणिजा कस्सके पहरन्ति। - व्यापारी किसानों को मारते हैं।

अभ्यास - २

हिन्दी में अनुवाद करें

१. तथागतो धम्मं भासति।
२. ब्राह्मणा ओदनं भुञ्जन्ति।
३. मनुस्सो सुरियं पस्सति।
४. कुमारा सिगाले पहरन्ति।
५. याचका भत्तं याचन्ति।
६. कस्सका आवाटे खणन्ति।
७. मित्तो गामं आगच्छति।
८. भूपालो मनुस्से रक्खति।
९. पुत्ता पव्वतं गच्छन्ति।
१०. कुमारो बुद्धं वन्दति।
११. वाणिजा पत्ते आहरन्ति।
१२. पुरिसो विहारं गच्छति।
१३. कुक्कुरा पब्बतं धावन्ति।
१४. सिगाला गामं आगच्छन्ति।
१५. ब्राह्मणा सहायके आहरन्ति।
१६. भूपाला सुगतं वन्दन्ति।
१७. याचका सयन्ति।
१८. मित्ता सुनखे हरन्ति।
१९. पुत्तो चन्दं पस्सति।
२०. कस्सको गामं धावति।
२१. वाणिजा रुक्खे छिन्दन्ति।
२२. नरो सिगालं विज्झति।
२३. कुमारो ओदनं भुञ्जति।
२४. याचको सोणं पहरति।
२५. सहायका पब्बते आरुहन्ति।

पालि में अनुवाद करें

१. मनुष्य विहार जाते हैं।
२. किसान पर्वतों पर चढ़ते हैं।
३. ब्राह्मण भात खाता है।
४. बुद्ध लड़कों को देखते हैं।
५. मामा पात्र ले जाते हैं।
६. लड़का कुत्ते की रक्षा करता है।
७. राजा बुद्ध की वंदना करते हैं।
८. व्यापारी बच्चे को लाता है।
९. मित्र ब्राह्मण की वंदना करते हैं।
१०. भिखारी भात माँगते हैं।
११. व्यापारी गीदड़ों को मारते हैं।
१२. लड़के पर्वत पर चढ़ते हैं।
१३. किसान गाँव की ओर दौड़ता है।
१४. व्यापारी भात पकाता है।
१५. पुत्र मामा की वंदना करते हैं।
१६. राजा लोगों की रक्षा करते हैं।
१७. बुद्ध विहार आते हैं।
१८. मनुष्य (लोग) उतरते हैं।
१९. किसान गड्ढे (गड्ढों को) खोदते हैं।
२०. व्यापारी दौड़ता है।
२१. कुत्ता चांद को देखता है।
२२. लड़के वृक्षों पर चढ़ते हैं।
२३. ब्राह्मण पात्र लाते हैं।
२४. भिखारी सोता है।
२५. राजा बुद्ध को देखते हैं।

पाठ - ३

शब्दावली

अ-कारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

रथ	- रथ	सग्ग	- स्वर्ग
सकट	- गाड़ी (पुं. और नपुं)	अस्स	- घोड़ा
हत्थ	- हाथ	मिग	- हिरण, पशु, चौपाया
पाद	- पैर, पाँव	सर	- बाण
मग्ग	- मार्ग, पथ	पासाण	- पत्थर, पाषाण,चट्टान
दीप	- दीपक, द्वीप	ककच	- आरा
सावक	- शिष्य, श्रावक	खग्ग	- तलवार
समण	- श्रमण, भिक्षु	चोर	- चोर
		पण्डित	- पण्डित, ज्ञानी

अ-कारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप –

तृतीया विभक्ति

पालि में तृतीया विभक्ति को ततिया विभत्ति कहते हैं। तृतीया विभक्ति एक वचन बनाने के लिए मूल शब्द के अंत में 'एन' जोड़ते हैं। तृतीया विभक्ति बहुवचन बनाने के लिए मूल शब्द के अंत में 'एहि' जोड़ते हैं। कभी-कभी 'एभि' का भी प्रयोग करते हैं। इस तरह से बनाया गया संज्ञा का रूप 'के साथ' 'के द्वारा' अर्थ व्यक्त करता है।

एकवचन

नर + एन	= नरेन	(मनुष्य से, द्वारा)
मातुल + एन	= मातुलेन	(मामा से, द्वारा)
कस्सक + एन	= कस्सकेन	(किसान से, द्वारा)

बहुवचन (अनेकवचन)

नर + एहि/एभि	= नरेहि, नरेभि
मातुल + एहि/एभि	= मातुलेहि, मातुलेभि
कस्सक + एहि/एभि	= कस्सकेहि, कस्सकेभि

सद्धिं/सह का साथ होने के अर्थ में तृतीया विभक्ति में प्रयोग होता है। वस्तु बताने वाले नाम के साथ उनका प्रयोग साधारणतः नहीं होता।

३. वाक्य रचना के उदाहरण

एकवचन

१. समणो नरेन सद्धिं गामं गच्छति।
श्रमण मनुष्य के साथ गाँव जाता है।
२. पुत्तो मातुलेन सह चन्दं पस्सति।
पुत्र मामा के साथ चाँद देखता है।
३. कस्सको ककचेन रुक्खं छिन्दति।
किसान आरी से वृक्ष काटता है।

बहुवचन

१. समणा नरेहि सद्धिं गामं गच्छन्ति।
श्रमण मनुष्यों के साथ गाँव जाते हैं।
२. पुत्ता मातुलेहि सह चन्दं पस्सन्ति।
पुत्र मामाओं के साथ चाँद देखते हैं।
३. कस्सका ककचेहि रुक्खे छिन्दन्ति।
किसान आरियों से वृक्ष काटते हैं।

अभ्यास - ३

हिन्दी में अनुवाद करें

१. बुद्धो सावकेहि सद्धिं विहारं गच्छति।
२. पुरिसो पुत्तेन सह दीपं धावति।
३. कस्सको सरेन सिगालं विज्झति।
४. ब्राह्मणा मातुलेन सह पब्बतं आरुहन्ति।
५. पुत्ता पादेहि कुक्कुरे पहरन्ति।
६. मातुलो पुत्तेहि सद्धिं रथेन गामं आगच्छति।
७. कुमारा हत्थेहि पत्ते आहरन्ति।
८. चोरो मग्गेन अस्सं हरति।
९. कस्सको आवाटं ओरुहति।
१०. भूपाला पण्डितेहि सह समणे पस्सन्ति।
११. पण्डितो भूपालेन सह तथागतं वन्दति।

१२. पुत्ता सहायेन सद्धिं ओदनं भुञ्जन्ति।
१३. वाणिजो पासाणेन मिगं पहरति।
१४. सुनखा पादेहि आवाटे खणन्ति।
१५. ब्राह्मणो पुत्तेन सह सुरियं वन्दति।
१६. कस्सको सोणेहि सद्धिं रुक्खे रक्खति।
१७. सुगतो सावकेहि सह विहारं आगच्छति।
१८. याचको पत्तेन भत्तं आहरति।
१९. पण्डिता सग्गं गच्छन्ति।
२०. कुमारा अस्सेहि सद्धिं गामं धावन्ति।
२१. चोरो खग्गेन नरं पहरति।
२२. वाणिजो सकटेन दीपे आहरति।
२३. अस्सा मग्गेन धावन्ति।
२४. सिगाला मिगेहि सद्धिं पब्बतं धावन्ति।
२५. भूपालो पण्डितेन सह मनुस्से रक्खति।

पालि में अनुवाद करें

१. श्रमण मित्र के साथ बुद्ध को देखते हैं।
२. श्रावक तथागत के साथ विहार जाते हैं।
३. घोड़ा कुत्तों के साथ पर्वत की ओर दौड़ता है।
४. लड़का पत्थर से दीपक को मारता है।
५. व्यापारी बाणों से मृगों को मारते हैं।
६. किसान हाथों से गड्ढे खोदते हैं।
७. लड़के मामा के साथ रथ से विहार जाते हैं।
८. ब्राह्मण मित्र के साथ भात पकाता है।
९. राजा पण्डितों के साथ द्वीप की रक्षा करता है।
१०. राजा पुत्रों के साथ श्रमणों की वन्दना करते हैं।
११. चोर घोड़ों को द्वीप पर लाते हैं।
१२. श्रावक मनुष्यों के साथ पर्वतों पर चढ़ते हैं।
१३. व्यापारी किसानों के साथ वृक्ष काटते हैं।

१४. भिखारी मित्र के साथ गड्ढा खोदता है।
१५. ब्राह्मण मामाओं के साथ चन्द्रमा देखता है।
१६. चोर तलवार से घोड़े को मारता है।
१७. पुत्र पात्र में भात लाता है।
१८. लड़के कुत्तों के साथ पर्वत की ओर दौड़ते हैं।
१९. व्यापारी किसानों के साथ गाड़ियों से गाँव आते हैं।
२०. मामा/चाचा पुत्रों के साथ रथों से विहार आते हैं।
२१. गीदड़ मार्ग से पर्वत की ओर दौड़ते हैं।
२२. कुत्ते पैरो से गड्ढे खोदते हैं।
२३. मनुष्य के हाथ में आरा है।
२४. श्रमण स्वर्ग जाते हैं।
२५. बुद्ध शिष्यों के साथ गाँव आते हैं।

पाठ - ४

शब्दावली -

अ-कारान्त पुल्लिङ्ग शब्द		क्रियापद	
धीवर	- मछुआ, मछलीमार	पतति	- गिरता है।
मच्छ	- मछली	इच्छति	- इच्छा करता है।
पिटक	- टोकरी	पुच्छति	- पूछता है।
अमच्च	- मंत्री	खादति	- खाता है।
उपासक	- उपासक	ओतरति	- उतरता है।
पासाद	- महल	धोवति	- धोता है।
दारक	- लड़का	डसति	- काटता है।
साटक	- वस्त्र	पक्कोसति	- बुलाता है।
रजक	- धोबी	हनति	- मार डालता है, हत्या करता है।
सप्प	- साँप		
पञ्ह	- प्रश्न	निक्खमति	- निकलता है।
सुक/सुव	- तोता		
सोपान	- सीढ़ी		
सूकर/वराह	- सूअर		

अ-कारान्त पुल्लिग शब्द –

पञ्चमी विभक्ति -

पालि में पञ्चमी विभक्ति को पञ्चमी विभत्ति कहते हैं।

पञ्चमी विभक्ति एकवचन बनाने के लिए मूल शब्द के अंत में "आ/म्हा/स्मा" जोड़ते हैं। पञ्चमी विभक्ति बहुवचन बनाने के लिए मूल शब्द के अंत में 'एहि' जोड़ते हैं। 'एभि' का भी प्रयोग होता है।

एकवचन

१. नर + आ/म्हा/स्मा - नरा/नरम्हा/नरस्मा - मनुष्य से
२. मातुल + आ/म्हा/स्मा - मातुला/मातुलम्हा/मातुलस्मा - मामा से
३. कस्सक + आ/म्हा/स्मा - कस्सका/कस्सकम्हा/कस्सकस्मा - किसान से

बहुवचन

१. नर + एहि - नरेहि/नरेभि - मनुष्यों से
२. मातुल + एहि - मातुलेहि/मातुलेभि - मामाओं से
३. कस्सक + एहि - कस्सकेहि/कस्सकेभि - किसानों से

३. वाक्यरचना के उदाहरण –

एकवचन	**बहुवचन**
१. याचको नरम्हा भत्तं याचति।	याचका नरेहि भत्तं याचन्ति।
भिखारी मनुष्य से भात माँगता है।	भिखारी मनुष्यों से भात मांगते हैं।
२. पुत्तो मातुलम्हा पञ्हं पुच्छति।	पुत्ता मातुलेहि पञ्हे पुच्छन्ति।
पुत्र मामा से प्रश्न पूछता है।	पुत्र मामाओं से प्रश्न पूछते हैं।
३. कस्सको रुक्खस्मा पतति।	कस्सका रुक्खेहि पतन्ति।
किसान वृक्ष से गिरता है।	किसान वृक्षों से गिरते हैं।

अभ्यास - ४

४. हिन्दी में अनुवाद करें

१. चोरा गामम्हा पब्बतं धावन्ति।
२. दारको मातुलस्मा ओदनं याचति।
३. कुमारो सोपानम्हा पतति।
४. मातुला साटके धोवन्ति।
५. धीवरा पिटकेहि मच्छे आहरन्ति।
६. उपासका समणेहि सद्धिं विहारस्मा निक्खमन्ति।
७. ब्राह्मणो ककचेन रुक्खं छिन्दति।
८. कुमारा मित्तेहि सह भूपालं पस्सन्ति।
९. वाणिजो अस्सेन सद्धिं पब्बतस्मा ओरुहति।
१०. याचको कस्सकस्मा सोणं याचति।
११. सप्पा पब्बतेहि गामं ओतरन्ति।
१२. अमच्चा सरेहि मिगे विज्झन्ति।
१३. चोरो गामम्हा साकटेन साटके हरति।
१४. भूपालो अमच्चेहि सद्धिं रथेन पासादं आगच्छति।

१५. सूकरा पादेहि आवाटे खणन्ति।
१६. कुमारो सहायकेहि सह साटके धोवति।
१७. समणा गामम्हा उपासकेहि सद्धिं निक्खमन्ति।
१८. कुक्कुरो पिटकम्हा मच्छं खादति।
१९. मित्तो पुत्तम्हा सुनखं याचति।
२०. बुद्धो सावके पुच्छति।
२१. अमच्चा पण्डितेहि पञ्हे पुच्छन्ति।
२२. रजको सहायेन सह साटकं धोवति।
२३. मच्छा पिटकम्हा पतन्ति।
२४. चोरा पासाणेहि वराहे पहरन्ति।
२५. अमच्चो पासादम्हा सुवं आहरति।

पालि में अनुवाद करें

१. घोड़े गाँव से पर्वत की ओर दौड़ते हैं।
२. व्यापारी उपासकों के साथ द्वीप से विहार (को) आते हैं।
३. चोर बाणों से सूअरों को मारते हैं।
४. उपासक श्रमण से धर्म पूछते हैं।
५. लड़का मित्र के साथ चट्टान से गिरता है।
६. कुत्ता लड़के को काटता है।
७. मंत्री राजा के साथ महल से निकलते हैं।
८. मनुष्य द्वीप से मृग को लाता है।
९. किसान वृक्ष से उतरता है।
१०. कुत्ते घोड़ों के साथ मार्ग से दौड़ते हैं।
११. लड़के व्यापारियों से अनेक दीपक लाते हैं।
१२. चोर सीढ़ी से उतरता है।
१३. व्यापारी पर्वतों से तोतों को लाते हैं।
१४. घोड़ा पैर से साँप को मारता है।
१५. मामा मित्रों के साथ पर्वतों से श्रमणों को देखता है।
१६. व्यापारी द्वीप से घोड़ों को महल में लाते हैं।

१७. मंत्री चोर को पूछता है।
१८. किसान धोबी के साथ भात खाता है।
१९. लड़का सीढ़ी से गिरता है।
२०. मछवारा/धीवर मामा के साथ पर्वत पर चढ़ता है।
२१. भिखारी कुत्ते के साथ सोता है।
२२. राजा मंत्रियों के साथ द्वीपों का रक्षण करते हैं।
२३. राजा महल से बुद्ध की वंदना करता है।
२४. मनुष्य तलवार से साँप को मार डालता है।
२५. धीवर/मछवारे गाड़ियों से मछलियाँ गाँव लाते हैं।
२६. सूअर गाँव से पर्वत की ओर दौड़ते हैं।
२७. उपासक पण्डित से प्रश्न पूछते हैं।
२८. पुत्र वृक्ष से तोते को लाता है।
२९. पंडित विहार जाते हैं।
३०. श्रावक मार्ग से गाँव जाते हैं।

पाठ - ५

१. शब्द संग्रह –

अ-कारान्त पुल्लिङ्ग शब्द		क्रियापद	
तापस	- तपस्वी	रोदति	- रोता है।
वेज्ज	- वैद्य	लभति	- प्राप्त करता है।
लुद्दक	- शिकारी	ददाति	- देता है।
वानर/मक्कट	- बन्दर	कीळति	- खेलता है।
मञ्च	- चारपाई	आकड्ढति	- खींचता है।
आचरिय	- आचार्य	हसति	- हँसता है।
सीह	- शेर	पविसति	- प्रवेश करता है।
अज	- बकरी	आददाति	- लेता है।
लाभ	- लाभ, फायदा	नहायति	- नहाता है।
कुद्दाल	- कुदाली	पजहति	- त्याग करता है।

अकारान्त शब्द के रूप –

चतुर्थी विभक्ति –

पालि में चतुर्थी विभक्ति को चतुत्थी विभत्ति कहते हैं।

चतुर्थी विभक्ति एकवचन बनाने के लिए मूल शब्द के अंत में -आय/-स्स जोड़ते हैं। चतुर्थी विभक्ति बहुवचन बनाने के लिए मूल शब्द के अंत में 'आनं' जोड़ते हैं।

एकवचन

१. नर + आय/स्स = नराय/नरस्स = मनुष्य को/के लिए
२. मातुल + आय/स्स = मातुलाय/मातुलस्स = मामा को/के लिए
३. कस्सक + आय/स्स = कस्सकाय/कस्सकस्स = किसान को/के लिए

बहुवचन

१. नर + आनं = नरानं (मनुष्यों को/के लिए)
२. मातुल + आनं = मातुलानं (मामाओं को/के लिए)
३. कस्सक + आनं = कस्सकानं (किसानों को/के लिए)

३. वाक्य रचना के लिए उदाहरण –

एकवचन

१. धीवरो नराय मच्छं आहरति।
धीवर/मछुवारा मनुष्य के लिए मछली लाता है।
२. पुत्तो मातुलस्स ओदनं ददाति।
पुत्र मामा को भात देता है।
३. वाणिजा कस्सकस्स अजं ददाति।
व्यापारी किसान को बकरी देता है।

बहुवचन

१. धीवरा नरानं मच्छे अहरन्ति।
मछवारे मनुष्यों के लिये मछली लाते हैं।
२. पुत्ता मातुलानं ओदनं ददन्ति।
पुत्र मामाओं को भात देते हैं।
३. वाणिजा कस्सकानं अजे ददन्ति।
व्यापारी किसानों को बकरियां देते हैं।

अभ्यास – ५

हिन्दी में अनुवाद करें

१. वाणिजो रजकस्स साटकं ददाति।
२. वेज्जो आचरियस्स दीपं आहरति।
३. मिगा पासाणम्हा पब्बतं धावन्ति।
४. मनुस्सा बुद्धेहि धम्मं लभन्ति।
५. पुरिसो वेज्जाय सकटं आकड्ढति।
६. दारको हत्थेन याचकस्स भत्तं आहरति।
७. याचको आचरियाय आवाटं खणति।
८. रजको अमच्चानं साटके ददाति।
९. ब्राह्मणो सावकानं मञ्चे आहरति।
१०. वानरो रुक्खम्हा पतति, कुक्कुरो वानरं डसति।

११. धीवरा पिटकेहि अमच्चानं मच्छे आहरन्ति।
१२. कस्सको वाणिजाय रुक्खं छिन्दति।
१३. चोरो कुद्दालेन आचरियाय आवाटं खणति।
१४. वेज्जो पुत्तानं भत्तं पचति।
१५. तापसो लुद्दकेन सद्धिं भासति।
१६. लुद्दको तापसस्स दीपं ददाति।
१७. सीहा मिगे हनन्ति।
१८. मक्कटो पुत्तेन सह रुक्खं आरुहति।
१९. समणा उपासकेहि ओदनं लभन्ति।
२०. दारका रोदन्ति, कुमारो हसति, मातुलो कुमारं पहरति।
२१. वानरा पब्बतम्हा ओरुहन्ति, रुक्खे आरुहन्ति।
२२. चोरा रथं पविसन्ति, अमच्चो रथं पजहति।
२३. आचरियो दारकाय रुक्खम्हा सुकं आहरति।
२४. लुद्दको पब्बतस्मा अजं आकड्ढति।
२५. तापसो पब्बतम्हा सीहं पस्सति।
२६. वाणिजा कस्सकेहि लाभं लभन्ति।
२७. लुद्दको वाणिजानं वराहे हनति।
२८. तापसो आचरियम्हा पञ्हे पुच्छति।
२९. पुत्तो मञ्चम्हा पतति।
३०. कुमारा सहायकेहि सद्धिं नहायन्ति।

पालि में अनुवाद करें

१. व्यापारी मंत्रियों के लिए घोड़े लाते हैं।
२. शिकारी व्यापारी के लिए बकरी को मारता है।
३. वह आदमी किसान के लिए आरी से वृक्षों को काटता है।
४. मृग शेर से (डरकर) भागते हैं।
५. राजा उपासकों के साथ बुद्ध की वंदना करते हैं।
६. चोर गांवों से पर्वतों की ओर दौड़ते हैं।
७. धोबी राजा के लिए वस्त्रों को धोता है।

८. मछुवारा/धीवर किसानों के लिए टोकरियों से मछलियाँ लाता है।
९. आचार्य विहार में प्रवेश करता है, भिक्षुओं को देखता है।
१०. साँप बन्दर को डँसता है।
११. लड़के ब्राह्मण के लिए चारपाई घसीटते हैं।
१२. चोर आदमियों के साथ महल में प्रवेश करते हैं।
१३. किसान मछुवारों/धीवरों से मछलियां प्राप्त करते हैं।
१४. सूअर द्वीप से पर्वत की ओर जाते हैं।
१५. राजा महल त्यागता है, पुत्र विहार में प्रवेश करता है।
१६. शेर सोता है, बन्दर खेलते हैं।
१७. आचार्य कुत्ते से पुत्रों की रक्षा करते हैं।
१८. शिकारी मंत्रियों के लिए बाणों से मृगों को मारते हैं।
१९. लड़के मामा से भात की इच्छा करते हैं।
२०. वैद्य तपस्वी के लिए वस्त्र देता है।
२१. व्यापारी आचार्य के लिए गाड़ी से बकरी लाता है।
२२. पुत्र पर्वत से चंद्रमा को देखते हैं।
२३. पण्डित धर्म से लाभ प्राप्त करते हैं।
२४. बन्दर गाँव से निकलते हैं।
२५. पुत्र पर्वत से मित्र के लिए तोता लाता है।
२६. वैद्य विहार में प्रवेश करता है।
२७. गीदड़ गाँव से मार्ग द्वारा पर्वत की ओर दौड़ता है।
२८. गाड़ी मार्ग से गिरती है, बच्चा रोता है।
२९. मंत्री सीढ़ियाँ चढ़ते हैं, वैद्य सीढ़ियाँ उतरते हैं।
३०. पंडित बुद्ध से प्रश्न पूछते हैं।

पाठ - ६

अ-कारान्त पुल्लिङ्ग शब्द –

षष्ठी विभक्ति –

पालि में षष्ठी विभक्ति को छट्ठी विभत्ति कहते हैं। षष्ठी विभक्ति के रूप चतुत्थी विभक्ति के रूप जैसे ही हैं। षष्ठी विभक्ति एकवचन बनाने के लिए मूल शब्द के अंत में "-स्स" जोड़ते हैं, और बहुवचन बनाने के लिए मूल शब्द के अंत में "आनं" जोड़ते हैं।

एकवचन

१. नर + स्स = नरस्स (मनुष्य का/की/के)

२. मातुल + स्स = मातुलस्स (मामा का/की/के)

३. कस्सक + स्स = कस्सकस्स (किसान का/की/ के)

बहुवचन

१. नर + आनं = नरानं (मनुष्यों का/की/के)

२. मातुल + आनं = मातुलानं (मामाओं का/की/के)

३. कस्सक + आनं = कस्सकानं (किसानों का/की/के)

२. वाक्यरचना के लिए उदाहरण –

एकवचन

१. नरस्स पुत्तो भत्तं याचति।
(उस) मनुष्य का बेटा भात मांगता है।

२. मातुलस्स सहायको रथं आहरति।
मामा का मित्र रथ लाता है।

३. कस्सकस्स सूकरो दीपं धावति।
किसान का सूअर द्वीप की ओर दौड़ता है।

बहुवचन

१. नरानं पुत्ता भत्तं याचन्ति।
(उन) मनुष्यों के बेटे भात मांगते हैं।
२. मातुलानं सहायका रथे आहरन्ति।
मामाओं के मित्र (अनेक) रथ लाते हैं।
३. कस्सकानं सूकरा दीपे धावन्ति।
किसानों के सूअर द्वीपों की ओर दौड़ते हैं।

अभ्यास – ६

हिन्दी में अनुवाद करें

१. कस्सकस्स पुत्तो वेज्जस्स सहायेन सद्धिं आगच्छति।
२. ब्राह्मणस्स कुद्दालो हत्थम्हा पतति।
३. मिगा आवाटेहि निक्खमन्ति।
४. वाणिजानं अस्सा कस्सकस्स गामं धावन्ति।
५. मातुलस्स मित्तो तथागतस्स सावके वन्दति।
६. अमच्चो भूपालस्स खग्गेन सप्पं पहरति।
७. वाणिजा गामे मनुस्सानं पिटकेहि मच्छे आहरन्ति।
८. चोरो वेज्जस्स सकटेन मित्तेन सह गामम्हा निक्खमति।
९. उपासकस्स पुत्ता समणेहि सह विहारं गच्छन्ति।
१०. याचको अमच्चस्स साटकं इच्छति।
११. मित्तानं मातुला तापसानं ओदनं ददन्ति।
१२. धीवरस्स ककचेन चोरो कुक्कुरं पहरति।
१३. भूपालस्स पुत्तो अमच्चस्स अस्सं आरुहति।
१४. पण्डितस्स पुत्ता बुद्धस्स सावकेन सह विहारं पविसन्ति।
१५. सुरियो मनुस्से रक्खति।
१६. वेज्जस्स सुनखो आचरियस्स सोपानम्हा पतति।
१७. रजका रुक्खेहि ओरुहन्ति।
१८. याचकस्स दारका रोदन्ति।

१९. लुद्दकस्स पुत्ता चोरस्स दारकेहि सद्धिं कीलन्ति।
२०. तापसो तथागतस्स सावकानं ओदनं ददाति।
२१. समणा आचरियस्स हत्थेन साटके लभन्ति।
२२. चोरो वाणिजस्स सहायकस्मा अस्सं याचति।
२३. उपासका तथागतस्स सावकेहि पञ्हे पुच्छन्ति।
२४. पासाणम्हा मिगो पतति लुद्दको हसति, सुनखा धावन्ति।
२५. वेज्जस्स पत्तो पुत्तस्स हत्थम्हा पतति।
२६. कुमारो मातुलानं पुत्तानं हत्थेन ओदनं ददाति।
२७. सरा लुद्दकस्स हत्थेहि पतन्ति, मिगा पब्बतं धावन्ति।
२८. भूपालस्स पुत्तो अमच्चेहि सद्धिं पासादस्मा ओरुहति।
२९. वेज्जस्स सोणो कस्सकस्स सुकरं डसति।
३०. धीवरो मनुस्सानं मच्छे आहरति, लाभं लभति।

पालि में अनुवाद करें

१. ब्राह्मण के लड़के मंत्री के लड़के के साथ नहाते हैं।
२. मामा का मित्र किसान के लड़के के साथ भात पकाता है।
३. मछुआरा राजा के महल में मछलियां लाता है।
४. राजा महल से मंत्रियों के पुत्रों को बुलाते हैं।
५. व्यापारी का रथ पर्वत से गिरता है।
६. राजा के मंत्री घोड़ों के साथ महल से निकलते हैं।
७. ब्राह्मण के वैद्य तपस्वियों के लिए वस्त्र देते हैं।
८. शिकारी के कुत्ते पर्वत से गाँव की ओर दौड़ते हैं।
९. व्यापारी वैद्य के लड़के के लिए चारपाई लाता है।
१०. मृग पर्वत से गाँव की ओर दौड़ते हैं।
११. आचार्य का लड़का किसान के वृक्ष से गिरता है।
१२. कुत्ता मछुआरे की टोकरी से मछलियां खाता है।
१३. बुद्ध के शिष्य विहार से पर्वत की ओर जाते हैं।
१४. शिकारी मंत्री के मित्रों के लिए बाण से सूअर मारता है।
१५. लड़का आचार्य के हाथों से दीपक प्राप्त करता है।

१६. वैद्यों के आचार्य लड़के के मामा को बुलाते हैं।
१७. लड़का पात्र से श्रमण के लिए भात लाता है।
१८. मनुष्य उपासकों के गाँव जाते हैं।
१९. सूअर गीदड़ों से भागते हैं।
२०. बन्दर मृगों के साथ खेलते हैं।
२१. पण्डित व्यापारियों के साथ राजा के द्वीप पर आते हैं।
२२. किसान के लड़के मामाओं के रथों से पर्वत पर जाते हैं।
२३. वस्त्र व्यापारियों की गाड़ियों से गिरते हैं।
२४. श्रमण राजा के हाथों से पात्र प्राप्त करते हैं।
२५. धोबी (उस) आदमी के मामा के लिए वस्त्र लाता है।
२६. राजा के मंत्री आचार्य के मित्रों के साथ भात खाते हैं।
२७. पण्डित राजाओं के द्वीपों को चोरों से रक्षा करते हैं।
२८. लड़के किसानों से धीवरों/मछलीमारों के लिए टोकरियां लाते हैं।
२९. किसान का घोड़ा वैद्य के रथ को मार्ग से खींचता है।
३०. श्रमण आचार्य के गाँव में प्रवेश करते हैं।

पाठ - ७

शब्द संग्रह

अ-कारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

नाविक	- नाविक
समुद्द	- समुद्र
लोक	- संसार, दुनिया
सकुण	- पंछी
निवास	- घर
असप्पुरिस	- असत्पुरुष
दूत	- दूत
आकास	- आकाश
देव/सुर	- देवता
आलोक	- प्रकाश
काक	- कौआ
सप्पुरिस	- सत्पुरुष
काय	- शरीर
गोण	- बैल

क्रियापद

आहिण्डति	- घूमता है।
निसीदति	- बैठता है।
विहरति	- रहता है।
जीवति	- जीता है।
उप्पतति	- उड़ता है।
उत्तरति	- बाहर आता है। (पानी से)
चरति	- घूमता है, विचरण करता है।
सन्निपतति	- एकत्र होता है।
वसति	- रहता है।
तिट्ठति	- खड़ा होता है।
तरति	- पार करता है।
पसीदति	- खुश होता है, प्रसन्न होता है, श्रद्धावान होता है।

अ-कारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप -

सप्तमी विभक्ति -

सप्तमी विभक्ति एकवचन बनाने के लिए मूल शब्द के अंत में -ए/-म्हि/-स्मिं जोड़ते है और बहुवचन बनाने के लिए 'एसु' जोड़ते हैं।

एकवचन

१. नर + ए/म्हि/स्मिं = नरे/नरम्हि/नरस्मिं (मनुष्य में/पर)
२.मातुल +ए/म्हि/स्मिं = मातुले/मातुलम्हि/मातुलस्मिं (मामा में/पर)
३. कस्सक + ए/म्हि/स्मिं = कस्सके/कस्सकम्हि/कस्सकस्मिं (किसानमें/पर)

बहुवचन

१. नर + एसु = नरेसु (मनुष्यों में/पर)
२. मातुल + एसु = मातुलेसु (मामाओं में/पर)
३. कस्सक + एसु = कस्सकेसु (किसानों में/पर)

३. वाक्यरचना के लिए उदाहरण -

एकवचन

१. सप्पो नरस्मिं पतति - साँप मनुष्य पर गिरता है।
२. पुत्तो मातुलम्हि पसीदति - पुत्र मामा पर प्रसन्न होता है।
३. वाणिजो कस्सकस्मिं पसीदति - व्यापारी किसान पर प्रसन्न होता है।

बहुवचन

१. सप्पा नरेसु पतन्ति - साँप मनुष्यों पर गिरते हैं।
२. पुत्ता मातुलेसु पसीदन्ति - पुत्र मामाओं पर प्रसन्न होते हैं।
३. वाणिजा कस्सकेसु पसीदन्ति - व्यापारी किसानों पर प्रसन्न होते हैं।

अभ्यास - ७

हिन्दी में अनुवाद करें

१. ब्राह्मणो सहायकेनं सद्धिं रथम्हि निसीदति।
२. असप्पुरिसा चोरेहि सह गामेसु चरन्ति।
३. वाणिजो कस्सकस्स निवासे भत्तं पचति।
४. भूपालस्स अमच्चा दीपेसु मनुस्से रक्खन्ति।
५. सुगतस्स सावका विहारस्मिं वसन्ति।
६. मक्कटो रुक्खम्हा आवाटस्मिं पतति।
७. सुरियस्स आलोको समुद्दम्हि पतति।
८. कस्सकानं गोणा गामे आहिण्डन्ति।
९. वेज्जस्स दारको मञ्चस्मिं सयति।
१०. धीवरा समुद्दम्हा पिटकेसु मच्छे आहरन्ति।
११. सीहो पासाणस्मिं तिट्ठति, मक्कटा रुक्खेसु चरन्ति।
१२. भूपालस्स दूतो अमच्चेन सद्धिं समुद्दं तरति।

१३. मनुस्सा लोके जीवन्ति, देवा सग्गे वसन्ति।
१४. मिगा पब्बतेसु धावन्ति, सकुणा आकासे उप्पतन्ति।
१५. अमच्चो खग्गं भूपालस्स हत्थम्हा आददाति।
१६. आचरियो मातुलस्स निवासे मञ्चम्हि पुत्तेन सह निसीदति।
१७. तापसा पब्बतम्हि विहरन्ति।
१८. उपासका समणेहि सद्धिं विहारे सन्निपतन्ति।
१९. काका रुक्खेहि उप्पतन्ति।
२०. बुद्धो धम्मं भासति, सप्पुरिसा बुद्धम्हि पसीदन्ति।
२१. असप्पुरिसो खग्गेन नाविकस्स दूतं पहरति।
२२. पुरिसो सरेन सकुणं विज्झति, सकुणो रुक्खम्हा आवाटस्मिं पतति।
२३. मनुस्सा सुरियस्स आलोकेन लोकं पस्सन्ति।
२४. कस्सकस्स गोणा मग्गे सयन्ति।
२५. गोणस्स कायस्मिं काको तिट्ठति।
२६. मिगा दीपस्मिं पासाणेसु निसिदन्ति।
२७. सकुणो नाविकस्स हत्थम्हा आवाटस्मिं पतति।
२८. सप्पुरिसो नाविकेन सह समुद्दम्हा उत्तरति।
२९. कुद्दालो लुद्दकस्स हत्थम्हा आवाटस्मिं पतति।
३०. सुरियस्स आलोकेन चन्दो भासति।

पालि में अनुवाद करें

१. शेर पर्वत के ऊपर चट्टान पर खड़ा रहता/होता है।
२. चोर आचार्य के घर में प्रवेश करते हैं।
३. लड़के मित्रों के साथ मार्ग से समुन्दर की ओर दौड़ते हैं।
४. मामा के बैल सड़क पर घूमते हैं।
५. चिड़ियाँ वृक्षों पर बैठती हैं।
६. बैल पैर से बकरी को मारता है।
७. गीदड़ पर्वत पर रहते हैं।
८. राजा मंत्रियों के साथ बुद्ध के पैरों की वंदना करते हैं।
९. मामा पुत्र के साथ चारपाई पर सोता है।

१०. मछुआरा/धीवर किसान के घर में भात खाता है।
११. राजा के घोड़े द्वीप पर रहते हैं।
१२. सत्पुरुष तपस्वी के लिए दीपक लाता है।
१३. वैद्य आचार्य के घर वस्त्र लाता है।
१४. बन्दर कुत्ते के साथ चट्टान पर खेलता है।
१५. वस्त्र किसान के शरीर पर गिरता है।
१६. शिकारी पिटारी में वाणों को ले जाता है।
१७. बुद्ध के शिष्य विहार में एकत्र होते हैं।
१८. धोबी मंत्रियों के वस्त्रों को धोता है।
१९. पंछी आकाश में उड़ते हैं।
२०. सत्पुरुष नाविक के साथ समुन्दर से पार उतरता है।
२१. देवता बुद्ध के शिष्यों पर प्रसन्न होते हैं।
२२. व्यापारी नाविकों के साथ समुद्र को पार करता है।
२३. सत्पुरुष साँप से कुत्ते की रक्षा करता है।
२४. कौए पर्वत पर वृक्षों से उड़ते हैं।
२५. सूअर मछुआ/धीवर/मछलीमार की टोकरी से मछली खींचता है।
२६. सूरज का प्रकाश संसार में मनुष्यों पर पड़ता है।
२७. देवता आकाश मार्ग से जाते हैं।
२८. लड़के कुत्ते के साथ मार्ग में खेलते हैं।
२९. असत्पुरुष वृक्ष से बन्दर को खींचता है।
३०. राजा का दूत घोड़े से उतरता है।

पाठ - ८

अ-कारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप

आलपन

आलपन एकवचन के लिए मूल शब्द का प्रयोग करते हैं और बहुवचन बनाने के लिए मूल शब्द के अंत में '-आ' जोड़ते हैं।

एकवचन		बहुवचन	
१. नर	- हे मनुष्य!	नर + आ	= नरा - हे मनुष्यो!
२. मातुल	- हे मामा!	मातुल + आ	= मातुला - हे मामाओ!
३. कस्सक	- हे किसान!	कस्सक + आ	= कस्सका - हे किसानो!

अ-कारान्त शब्द के पूरे रूप

नर - मनुष्य

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	नरो	नरा
दुतिया	नरं	नरे
ततिया	नरेन	नरेहि; नरेभि
चतुत्थी	नराय, नरस्स	नरानं
पञ्चमी	नरा, नरम्हा, नरस्मा	नरेहि, नरेभि
छट्ठी	नरस्स	नरानं
सत्तमी	नरे, नरम्हि, नरस्मिं	नरेसु
आलपन	नर,	नरा

३. अ-कारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

फल

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	फलं	फला, फलानि
दुतिया	फलं	फले, फलानि
आलपन	फल	फलानि

शेष रूप अ-कारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के समान होते हैं।

४. शब्दसंग्रह -

अ-कारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द -	
नयन/लोचन	- आँख
अरञ्ञ/वन	- जंगल
गेह/घर	- घर
पण्ण	- पत्ता
खीर	- दूध
उय्यान	- बगीचा,उद्यान
भण्ड	- सामान
दान	- दान
द्वार	- दरवाजा
उदक/जल	- पानी
पुप्फ/कुसुम	- फूल
आसन	- आसन
तिण	- घास
नगर	- शहर
खेत्त	- खेत
सील	- शील
रूप	- रूप
वत्थ	- वस्त्र

क्रियापद	
विवरति	- खोलता है।
निक्खिपति	- रखता है।
फुसति	- स्पर्श करता है।
ओवदति	- उपदेश देता है।
आसिञ्चति	- सींचता है।
भिन्दति	- तोड़ता है।
नच्चति	- नाचता है।
उट्ठहति	- उठता है।
अनुसासति	- समझाता है।
संहरति	- एकत्र करता है।
अक्कोसति	- डांटता है।
पिबति/पिवति	- पीता है।

अभ्यास - ८

हिन्दी में अनुवाद करें

१. उपासको पुप्फानि आहरति।
२. अरञ्ञे मिगा वसन्ति, रुक्खेसु मक्कटा चरन्ति।
३. गोणा तिणं खादन्ति।
४. मनुस्सा नयनेहि पस्सन्ति।
५. समणो विहारस्मिं आसने निसीदति।
६. रुक्खम्हा पण्णानि पतन्ति।
७. वाणिजा गामम्हा खीरं नगरं हरन्ति।
८. भूपालो कुमारेन सद्धिं उय्याने चरति।
९. कस्सको खेत्तम्हि कुद्दालेन आवाटे खणति।
१०. मातुलो पुत्तस्स भण्डानि ददाति।
११. उपासका समणानं दानं ददन्ति, सीलानि रक्खन्ति।
१२. दारका मित्तेहि सद्धिं उदकस्मिं कीळन्ति।
१३. कस्सका वाणिजेहि वत्थानि लभन्ति।
१४. कुमारो उय्यानम्हा मातुलस्स कुसुमानि आहरति।
१५. ब्राह्मणस्स अजा गोणेहि सह वने आहिण्डन्ति, तिणानि खादन्ति।
१६. सीहो वनस्मिं रुक्खमूले निसीदति।
१७. रजका उदकेन आसनानि धोवन्ति।
१८. अमच्चो दूतेन सद्धिं रथेन अरञ्ञं पविसति।
१९. याचकस्स पुत्तो उदकेन पण्णानि धोवति।
२०. वाणिजा भण्डानि नगरम्हा गामं आहरन्ति।
२१. तथागतस्स सावका असप्पुरिसानं पुत्ते अनुसासन्ति।
२२. उपासका उदकेन पुप्फानि आसिञ्चन्ति।
२३. कुमारो पत्तं भिन्दति, मातुलो अक्कोसति।
२४. लुद्दकस्स पुत्तो मिगस्स कायं हत्थेन फुसति।
२५. गोणो खेत्ते पासाणम्हा उट्ठहति।
२६. रजकस्स पुत्तो साटके मञ्चस्मिं निक्खिपति।
२७. सुगतस्स सावको विहारस्स द्वारं विवरति।
२८. वेज्जस्स दारका गेहे नच्चन्ति।
२९. पण्डितो असप्पुरिसं ओवदति।
३०. चोरो आचरियस्स सकटं पब्बतस्मिं पजहति।

पालि में अनुवाद करें

१. बच्चे कुत्ते के साथ पानी में खेलते हैं।
२. असत्पुरुष वृक्ष से पत्ते तोड़ता है।
३. राजा मंत्रियों के साथ गाड़ियों से उद्यान जाते हैं।
४. व्यापारी सामान लेकर नगर से निकलते हैं।
५. सत्पुरुष भिक्षुओं को भिक्षा देते हैं।
६. बुद्ध के शिष्य उपासकों के साथ बगीचे में एकत्रित होते हैं।
७. चोर जंगल में वृक्ष से उतरता है।
८. असत्पुरुष वृक्षों पर बन्दरों को पत्थरों से मारते हैं।
९. वैद्य का घोड़ा बैल के साथ मार्ग में घास खाता है।
१०. गीदड़ जंगलों में रहते हैं, कुत्ते गाँवों में रहते हैं।
११. ब्राह्मण पण्डित के घर में आसनों पर बैठते हैं।
१२. नाविक घर के दरवाजों को खोलता है।
१३. मछुआारों के पुत्र मित्रों के साथ बगीचे में नाचते हैं।
१४. व्यापारी टोकरियों में मछलियां रखता है।
१५. संसार सूरज से प्रकाश प्राप्त करता है।
१६. नाविक आसनों से उठते हैं।
१७. वैद्य का मित्र कुत्ते के शरीर को पैर से स्पर्श करता है।
१८. बुद्ध विहार में शिष्यों को उपदेश देते हैं।
१९. लड़के बगीचे से फूल एकत्रित करते हैं, उपासक पानी से सींचते हैं।
२०. तोता नाविक के घर से आकाश में उड़ता है।
२१. चोर आरी से वृक्ष को काटता है, किसान गाली देता है/बिगड़ता है।
२२. पंडित व्यापारी को उपदेश देता है, व्यापारी पण्डित पर प्रसन्न होता है।
२३. राजा का दूत नाविक के साथ समुद्र से पार उतरता है।
२४. व्यापारी नगर से किसानों के लिए वस्त्र लाते हैं।
२५. देवता सत्पुरुषों की रक्षा करते हैं, सत्पुरुष शीलों की रक्षा करते हैं।
२६. सूरज के प्रकाश में मनुष्य आँखों से रूप देखते हैं।
२७. वृक्षों से पत्तियाँ मार्ग में गिरती हैं।
२८. उपासक फूलों के आसनों पर फूल रखते हैं।
२९. बकरियाँ खेत में गड्ढों से पानी पीती हैं।
३०. शेर वृक्ष के नीचे चट्टान से उठते हैं।

पाठ - ९

धातु या धातुरूप में कभी-कभी 'इ' स्वर के साथ या बिना 'इ' स्वर को लगाए 'त्वा' प्रत्यय जोड़कर पूर्वकालिक Gerund, Absolutive और Indeclinable Participle बनाते हैं।

१. पूर्वकालवाचक अव्यय

मूल धातु या धातु रूप में 'त्वा' प्रत्यय जोड़ते हैं। कभी स्वर 'इ' जोड़कर या बिना जोड़े हुए पूर्वकाल वाचक अव्यय बनाते हैं।

पच + इ + त्वा = पचित्वा - पकाकर
खाद + इ + त्वा = खादित्वा - खाकर
गम + त्वा = गन्त्वा - जाकर
हन + त्वा = हन्त्वा - मारकर

उपसर्गपूर्वक धातु में कभी-कभी '-य' प्रत्यय जोड़ते हैं।

आ + गम + य = आगम्म - आकर
आ + दा + य = आदाय - लेकर
आ + रुह + य = आरुय्ह - चढ़कर
अव + रुह + य = ओरुय्ह - उतरकर

नीचे के रूपों पर ध्यान दीजिये।

भुञ्जति - भुञ्जित्वा, भुत्वा

आगच्छति - आगन्त्वा, आगम्म

हनति - हनित्वा, हन्त्वा

ददाति - ददित्वा, दत्वा

नहायति - नहायित्वा, नहात्वा

तिट्ठति - ठत्वा

निक्खमति - निक्खमित्वा, निक्खम्म

पजहति - पजहित्वा, पहाय

पस्सति - पस्सित्वा (लेकिन पस्सित्वा के बदले 'दिस' धातु से बना 'दिस्वा' का ज्यादातर उपयोग किया जाता है।

उट्ठहति - उट्ठहित्वा, उट्ठाय

२. वाक्य रचना के उदाहरण

१. कस्सको खेत्तम्हा आगन्त्वा भत्तं भुञ्जति।
किसान खेत से आकर भात खाता है।

२. वानरा रुक्खं आरुय्ह फलानि खादन्ति।
बन्दर वृक्ष पर चढ़कर फल खाते हैं।

३. दारको भत्तं याचित्वा रोदति।
बच्चा भात मांगकर रोता है।

४. समणो बुद्धं पस्सित्वा वन्दति।
श्रमण बुद्ध को देखकर वन्दना करता है।

अभ्यास - ९

हिन्दी में अनुवाद करें

१. उपासको विहारं गन्त्वा समणानं दानं ददाति।
२. सावको आसनम्हि निसीदित्वा पादे धोवति।
३. दारका पुप्फानि संहरित्वा मातुलस्स दत्वा हसन्ति।
४. याचका उय्यानम्हा आगम्म कस्सकस्मा ओदनं याचन्ति।
५. लुद्दको हत्थेन सरे आदाय अरञ्ञं पविसति।
६. कुमारा कुक्कुरेन सद्धिं कीळित्वा समुद्दं गन्त्वा नहायन्ति।
७. वाणिजो पासाणस्मिं ठत्वा कुद्दालेन सप्पं पहरति।
८. सप्पुरिसो याचकस्स पुत्ते पक्कोसित्वा वत्थानि ददाति।
९. दारको आवाटम्हि पतित्वा रोदति।
१०. भूपालो पासादम्हा निक्खमित्वा अमच्चेन सद्धिं भासति।
११. सुनखो उदकं पिबित्वा गेहम्हा निक्खम्म मग्गे सयति।
१२. समणा भूपालस्स उय्याने सन्निपतित्वा धम्मं भासन्ति।
१३. पुत्तो नहायित्वा/नहात्वा भत्तं भुञ्जित्वा/भुत्वा मञ्चं आरुह्य सयति।
१४. वाणिजा दीपम्हा नगरं आगम्म आचरियस्स गेहे वसन्ति।
१५. रजको वत्थानि धोवित्वा पुत्तं पक्कोसति।
१६. वानरा रुक्खेहि ओरुह्य उय्याने आहिण्डन्ति।

१७. मिगा वनम्हि आहिण्डित्वा पण्णानि खादन्ति।
१८. कुमारो नयनानि धोवित्वा सुरियं पस्सति।
१९. नाविकस्स मित्ता नगरस्मा भण्डानि आदाय गामं आगच्छन्ति।
२०. दारको खीरं पिवित्वा गेहम्हा निक्खम्म हसति।
२१. सप्पुरिसा दानानि दत्वा सीलानि रक्खित्वा सग्गं गच्छन्ति।
२२. सूकरो उदकम्हा उत्तरित्वा आवाटं ओरुह्य सयति।
२३. तापसो तथागतस्स सावकं दिस्वा वन्दित्वा पञ्हं पुच्छति।
२४. असप्पुरिसो याचकस्स पत्तं भिन्दित्वा अक्कोसित्वा गेहं गच्छति।
२५. सकुणा गामे रुक्खेहि उप्पतित्वा अरञ्ञं ओतरति।
२६. पण्डितो आसनम्हा उट्ठहित्वा तापसेन सद्धिं भासति।
२७. दारको गेहा निक्खम्म मातुलं पक्कोसित्वा गेहं पविसति।
२८. देवा सप्पुरिसेसु पसीदित्वा ते रक्खन्ति।
२९. कुमारस्स सहायका पासादं आरुह्य आसनेसु निसीदन्ति।
३०. गोणा खेत्तम्हि आहिण्डित्वा तिणानि खादित्वा सयन्ति।

पालि में अनुवाद करें

१. किसान घर से निकलकर खेत में प्रवेश करता है।
२. बुद्ध धर्म उपदेश देकर विहार में प्रवेश करते हैं।
३. राजा बुद्ध पर प्रसन्न होकर महल त्यागकर विहार जाते हैं।
४. बच्चा सीढ़ी से उतरकर हँसता है।
५. लड़का पत्थर से साँप को मारकर घर दौड़ता है।
६. मनुष्य जंगल जाकर वृक्ष पर चढ़कर फल खाता है।
७. पानी से वस्त्रों को धोकर धोबी उन्हें घर लाता है।
८. शेर बकरी को मारकर पत्थर पर बैठकर खाता है।
९. वैद्य व्यापारियों का सामान देख नगर से निकलता है।
१०. घर तोड़कर चोर जंगल की ओर भागते हैं।
११. सूअर खेत में घूमकर गड्ढे में गिरता है।
१२. मछुआ/धीवर/मछुआरा किसानों के लिए समुद्र से मछलियां लाता है।
१३. शहर से सामान लेकर आचार्य घर आते हैं।

१४. पर्वत पर खड़ा होकर शिकारी बाणों से पक्षियों को मारता है।
१५. बगीचे में घास खाकर बैल सड़क पर सोते हैं।
१६. राजा रथ से उतरकर किसानों के साथ बात-चीत करते हैं।
१७. मनुष्य घर छोड़कर विहार में प्रवेश करता है।
१८. मछुआरे व्यापारियों को मछलियाँ देकर लाभ प्राप्त करते हैं।
१९. उपासक भिक्षु से प्रश्न पूछकर आसन पर बैठता है।
२०. बुद्ध के शिष्य असत्पुरुषों को देखकर डांटते हैं।
२१. ब्राह्मण बच्चे को डांटकर मारता है।
२२. देवता बुद्ध से अनेक प्रश्न पूछकर प्रसन्न होते हैं।
२३. कुत्ता आचार्य के पैर को काटकर घर की ओर दौड़ता है।
२४. बन्दर बकरी के साथ मार्ग में खेलकर वृक्ष पर चढ़ता है।
२५. तपस्वी जंगल से आकर सत्पुरुष से वस्त्र प्राप्त करता है।
२६. बच्चा पानी पीकर पात्र तोड़ता है।
२७. भिक्षुगण किसानों के पुत्रों को उपदेश देकर आसन से उठकर विहार जाते हैं।
२८. नाविक समुद्र पारकर दीप पर जाता है।
२९. बच्चा मामाओं को बुलाकर घर में नाचता है।
३०. वस्त्रों को धोकर, नहाकर किसान पानी से बाहर आता है।

पाठ - १०

निमित्तार्थक अव्यय (Infinitive)

निमित्तार्थक अव्यय (Infinitive) बनाने के लिए मूल धातु में 'इ' स्वर के साथ या कभी-कभी बिना स्वर के '-तुं' प्रत्यय जोड़ते हैं।

पच + इ + तुं	= पचितुं	- पकाने के लिए
खाद + इ + तुं	= खादितुं	- खाने के लिए
गम + तुं	= गन्तुं	- जाने के लिए
दा + तुं	= दातुं	- देने के लिए
ठा + तुं	= ठातुं	- खड़े होने के लिए
पा + तुं	= पातुं/पिवितुं	- पीने के लिए

वाक्य रचना के लिए उदाहरण -

१. कस्सको खेत्तं कसितुं इच्छति।
किसान खेत जोतने की इच्छा करता है।

२. दारको फलानि खादितुं रुक्खं आरुहति।
बच्चा फल खाने के लिए वृक्ष पर चढ़ता है।

३. मनुस्सा समणेहि पञ्हे पुच्छितुं विहारं आगच्छन्ति।
लोग श्रमणों से प्रश्न पूछने के लिए विहार आते हैं।

४. कुमारा कीळितुं मित्तेहि सह समुद्दं गच्छन्ति।
लड़के खेलने के लिए मित्रों के साथ समुद्र जाते हैं।

अभ्यास - १०

हिन्दी में अनुवाद करें

१. कुमारा वनम्हि मित्तेहि सह कीळित्वा भत्तं भुञ्जितुं गेहं धावन्ति।

२. मिगा तिणं खादित्वा उदकं पातुं पब्बतम्हा उय्यानं आगच्छन्ति।

३. वाणिजस्स पुत्तो भण्डानि आहरितुं रथेन नगरं गच्छति।

४. याचको मातुलस्स कुद्दालेन आवाटं खणितुं इच्छति।

५. अमच्चा भूपालं पस्सितुं पासादम्हि सन्निपतन्ति।

६. गोणा उय्याने आहिण्डित्वा कस्सकस्स खेत्तं आगच्छन्ति।

७. उपासका समणानं दानं दातुं विहारं पविसन्ति।
८. रथेन नगरं गन्तुं पुरिसो गेहस्मा निक्खमति।
९. ब्राह्मणो वेज्जेन सद्धिं नहायितुं उदकं ओतरति।
१०. चोरो अमच्चस्स गेहं पविसितुं उय्याने आहिण्डति।
११. सीहो पब्बतम्हि सयित्वा उट्ठाय मिगं हन्तुं ओरुहति।
१२. उदकं ओतरित्वा वत्थानि धोवितुं रजको पुत्तं पक्कोसति।
१३. तथागतं पस्सित्वा, वन्दितुं उपासको विहारं पविसति।
१४. खेत्तं कसितुं कस्सको कुद्दालं आदाय गेहा निक्खमति।
१५. सरेहि मिगे विज्झितुं लुद्दका सुनखेहि सह अरञ्ञं पविसन्ति।
१६. नरा गामम्हा निक्खमित्वा नगरे वसितुं इच्छन्ति।
१७. सकुणे पस्सितुं अमच्चा कुमारेहि सह पब्बतं आरुहन्ति।
१८. पब्बतस्मा रुक्खं आकड्ढितुं वाणिजेन सह कस्सको गच्छति।
१९. फलानि खादितुं मक्कटा रुक्खेसु चरन्ति।
२०. पण्डितो सुगतस्स सावकेहि सद्धिं भासितुं इच्छति।
२१. समुद्दं तरित्वा, द्वीपं गन्त्वा वत्थानि आहरितुं वाणिजा इच्छन्ति।
२२. पुप्फानि संहरित्वा उदकेन आसिञ्चितुं उपासको कुमारे ओवदति।
२३. अजस्स कायं हत्थेहि फुसितुं दारको इच्छति।
२४. ब्राह्मणस्स गेहे आसनेसु निसीदितुं रजकस्स पुत्ता इच्छन्ति।
२५. पातुं उदकं याचित्वा दारको रोदति।

पालि में अनुवाद करें

१. बकरियां पत्तियां खाने तथा पानी पीने के लिए बगीचे में घूमती हैं।
२. असत्पुरुष पैर से कुत्ते को मारने की इच्छा करता है।
३. मित्र अपने कुत्तों के साथ खेलने के लिए बगीचा जाते हैं।
४. उपासक घर आकर पुत्रों को उपदेश देने की इच्छा करता है।
५. देवता विहार जाकर बुद्ध के साथ बोलने की इच्छा करते हैं।
६. सत्पुरुष शीलों की रक्षा करके दान देने की इच्छा करते हैं।
७. सूअर जंगल में प्रवेश करने के लिए गाँव से दौड़ते हैं।
८. किसान खेत में गड्ढे खोदने के लिए व्यापारी से कुदाल माँगता है।

९. बुद्ध की वंदना करने के लिए उपासक विहार में एकत्र होते हैं।
१०. मामा मछुआरे को बुलाने के लिए घर से निकलता है।
११. किसान बैलों को प्राप्त करने की इच्छा करते हैं।
व्यापारी घोड़ों को प्राप्त करने की इच्छा करते हैं।
१२. राजा महल छोड़ने की इच्छा करते हैं।
१३. मनुष्य टोकरियां लेकर बच्चों के लिए फलों को एकत्रित करने के लिए जंगल जाते हैं।
१४. किसान बैलों के लिए घास काटने के लिए जंगल में घूमता है।
१५. मनुष्य पुत्रों के साथ नगर में घरों में रहने की इच्छा करते हैं।
१६. चट्टान पर खड़ा होकर बच्चा वृक्षों में फूलों को देखता है।
१७. आचार्य से वस्त्र पाकर वैद्य प्रसन्न होते हैं।
१८. शिकारी जंगल से बकरी को खींच कर लाने के लिए मित्र को बुलाता है।
१९. समुद्र को पार करने के लिए नाविक व्यापारियों को बुलाता है।
२०. सत्पुरुष आसन से उठकर भिक्षु के साथ बोलने की इच्छा करते हैं।
२१. बच्चे पानी में उतरकर नहाने की इच्छा करते हैं।
२२. जंगल जाकर मृगों को मारने के लिए मंत्री घोड़े पर चढ़ते हैं।
२३. लड़का मामा के मित्रों के लिए भात पकाने की इच्छा करता है।
२४. किसानों के खेत में प्रवेश करने के लिए गीदड़ जंगल से निकलते हैं।
२५. मनुष्य सूरज के प्रकाश में, आँखों से, रूपों को देखने की इच्छा करते हैं।

पाठ - ११

शब्द संग्रह -

अ-कारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

आपण	- दुकान, बाजार
पुञ्ञ	- पुण्य
कुसल	- कुशल
धन	- धन, दौलत
बीज	- बीज
चीवर	- चीवर, काषाय वस्त्र
रुक्खमूल	- वृक्ष का मूल
वेतन	- वेतन
गीत	- गाना
सच्च	- सत्य
चित्त	- मन
पाप	- पाप
कम्म	- कर्म, कार्य
अकुसल	- अकुशल
धञ्ञ	- धान
दुस्स	- कपड़ा
मूल	- जड़, मूल (धन)
तुण्ड	- चोंच
पदुम	- कमल
सुवण्ण/हिरञ्ञ	- सोना
पानीय	- पानी (पीने का)

क्रियापद

परियेसति	- खोजता है।
उस्सहति	- प्रयत्न करता है।
अधिगच्छति	- प्राप्त करता है।
आमसति	- स्पर्श करता है।
चवति	- मरता है।
खिपति	- फेंकता है।
आकङ्खति	- आशा करता है।
सिब्बति	- सीता है।
आरभति	- शुरुआत करता है।
उपसङ्कमति	- समीप आता है।
गायति	- गाता है।
भायति	- डरता है।
उप्पज्जति	- जन्मता है।
वपति	- बोता है।

२. वर्तमान कालिक कृदन्त

वर्तमान काल में 'करता हुआ' अर्थ में धातु से परे 'न्त'/'मान' प्रत्यय जोड़कर वर्तमान काल वाचक कृदन्त बनाते हैं। वे विशेषण के समान व्यवहृत होते हैं और इनके लिङ्ग, वचन और कारक उन संज्ञाओं की तरह होते हैं जिनको ये विशेषित करते हैं।

इनके रूप अकारान्त पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग जैसे होते हैं।

अभी स्त्रीलिंङ्ग रूप नहीं सिखाया गया है। स्त्रीलिङ्ग के वर्तमान कालवाचक कृदन्त रूप पाठ २१ में मिलेंगे)

पच + न्त/मान	= पचन्त/पचमान	= पकाता हुआ।
गच्छ + न्त/मान	= गच्छन्त/गच्छमान	= जाता हुआ।
भुञ्ज + न्त/मान	= भुञ्जन्त/भुञ्जमान	= खाता हुआ।
तिट्ठ + न्त/मान	= तिट्ठन्त/तिट्ठमान	= खड़ा होता हुआ।
विहर +न्त/मान	= विहरन्त/विहरमान	= रहता हुआ।

३. वाक्यरचना के लिए उदाहरण –

एकवचन

१. भत्तं पचन्तो/पचमानो पुरिसो हसति। (कत्तुकारक)
भात पकाता हुआ मनुष्य हँसता है।

२. वेज्जो भत्तं पचन्तं/पचमानं पुरिसं पक्कोसति। (कम्मकारक)
वैद्य भात पकाते हुए/पकाने वाले मनुष्य को बुलाता है।

३. वेज्जो भत्तं पचन्तेन/पचमानेन पुरिसेन सह भासति। (करणकारक)
वैद्य भात पकाते हुए मनुष्य के साथ बोलता है।

बहुवचन

१. भत्तं पचन्ता/पचमाना पुरिसा हसन्ति। (कत्तुकारक)
भात पकाते हुए मनुष्य हँसते हैं।

२. वेज्जो भत्तं पचन्ते/पचमाने पुरिसे पक्कोसति। (कम्मकारक)
वैद्य भात पकाते हुए मनुष्यों को बुलाता है।

३. वेज्जो भत्तं पचन्तेहि/पचमानेहि पुरिसेहि सह भासति। (करणकारक)
वैद्य भात पकाते हुए मनुष्यों के साथ बातचीत करता है।

इसी प्रकार वर्तमान कालवाचक सभी विभक्तियों में विशेषण रूप में सिद्ध होता है।

अभ्यास - ११

हिन्दी में अनुवाद करें

३. पानीयं याचित्वा रोदन्तो दारको मञ्चम्हा पतति।
२. वत्थानि लभितुं इच्छन्तो वाणिजो आपणं गच्छति।
३. उपासको पदुमानि आदाय विहारं गच्छमानो बुद्धं दिस्वा पसीदति।
४. सकुणो तुण्डकेन फलं हरन्तो रुक्खस्मा उप्पतति।
५. चीवरं परियेसन्तस्स समणस्स आचरियो चीवरं ददाति।
६. अरञ्ञे अहिण्डन्तो लुद्दको धावन्तं मिगं पस्सित्वा सरेन विज्झति।
७. उय्याने आहिण्डमानम्हा कुमारम्हा ब्राह्मणो पदुमानि याचति।
८. रथेन गच्छन्तेहि अमच्चेहि सह आचरियो हसति।
९. दानं ददमाना सीलानि रक्खमाना मनुस्सा सग्गे उप्पज्जन्ति।
१०. धञ्ञं आकड्ढन्तस्स पुरिसस्स धनं दातुं वाणिजो इच्छति।
११. गोणे हनन्ता रुक्खे छिन्दन्ता असप्पुरिसा धनं संहरितुं उस्सहन्ति।
१२. विहारं उपसङ्कमानो बुद्धो धम्मं भासमाने सावके पस्सति।
१३. रुक्खमूले निसीदित्वा गीतानि गायन्ता कुमारा नच्चितुं आरभन्ति।
१४. सुवण्णं लभितुं उस्सहन्ता मनुस्सा पब्बतस्मिं आवाटे खणन्ति।
१५. उदकं पातुं इच्छन्तो सीहो उदकं परियेसमानो वनम्हि चरति।
१६. वेतनं लभितुं आकड्ढमानो नरो रजकाय दुस्सानि धोवति।
१७. समणेहि भासन्ता उपासका सच्चं अधिगन्तुं उस्सहन्ति।
१८. मग्गे सयन्तं सुनखं उदकेन सिञ्चित्वा दारको हसति।
१९. सीलं रक्खन्ता सप्पुरिसा मनुस्सलोका चवित्वा देवलोके उप्पज्जन्ति।
२०. धनं संहरितुं उस्सहन्तो वाणिजो समुद्दं तरित्वा दीपं गन्तुं आरभति।
२१. गोणे परियेसमानो वने आहिण्डन्तो कस्सको सीहं दिस्वा भायति।
२२. रुक्खेसु निसीदित्वा फलानि भुञ्जमाना कुमारा गीतं गायन्ति।
२३. चित्तं पसीदित्वा धम्मं अधिगन्तुं उस्सहन्ता नरा सग्गे उप्पज्जन्ति।
२४. तुण्डेन पिटकम्हा मच्छं आकड्ढितुं इच्छन्तो काको सुनखम्हा भायति।
२५. खेत्तं कसित्वा बीजानि वपन्तो कस्सको धञ्ञं लभितुं आकङ्खति।
२६. सुरियस्स आलोकेन लोचनेहि रूपानि पस्सन्ता मनुस्सा लोके जीवन्ति।
२७. रुक्खमूले निसीदित्वा चीवरं सिब्बन्तेन समणेन सद्धिं उपासको भासति।
२८. रुक्खमूले सयन्तस्स याचकस्स काये पण्णानि पतन्ति।
२९. वाणिजस्स मूलं दत्वा अस्से लभितुं अमच्चो उस्सहति।

३०. खीरं पिवित्वा हसमानो दारको पत्तं मञ्चस्मिं खिपति।

पालि में अनुवाद करें

१. वस्त्रों को धोता हुआ मनुष्य मार्ग में जाते हुए लड़के के साथ बात करता है।
२. ब्राह्मण पानी पीने के लिए जंगल से निकलते हुए/आते हुए मृग को देखता है।
३. बगीचे में बकरियाँ वृक्षों से गिरते हुए पत्तों को खाती हैं।
४. असत्पुरुष मृगों को मारते हुए शिकारियों को देखने की इच्छा करते हैं।
५. किसान खेत में बीजों को खाते हुए पंछियों को देखता है।
६. नगर में प्रवेश करते हुए भिक्षु विहार में रहते हुए बुद्ध की वंदना करने की इच्छा करते हैं।
७. सीढ़ी पर खड़ा होता हुआ बच्चा वृक्ष पर बैठते हुए बन्दरों को देखता है।
८. लड़के पानी में विचरते हुए मछलियों को भात देते हैं।
९. समुद्र पार करने की आशा करता हुआ नाविक राजा से पैसा मांगता है।
१०. समुद्र पर गिरते हुए चंद्रमा के प्रकाश को मनुष्य आँखों से देखते हैं।
११. उपासक विहार में रहते हुए भिक्षुओं को अनेक चीवर देने का प्रयत्न करते हैं।
१२. पुण्य की इच्छा करते हुए मनुष्य भिक्षुओं को दान देते हैं तथा शीलों की रक्षा करते हैं।
१३. मनुष्य जंगल में वृक्षों से गिरती हुई पत्तियों पर चलता है।
१४. मामा फूल खोजते हुए बच्चे को कमल देता है।
१५. मछुआरा भिखारी को थोड़ा धान देकर घर में प्रवेश करता है।
१६. मंत्री खेत में जोतते हुए किसानों को बीज देता है।
१७. कुत्ता उसके शरीर को स्पर्श करते हुए मनुष्य के हाथ को काटने का प्रयत्न करता है।
१८. बुद्ध के शिष्य मार्ग में रोते हुए बच्चे से प्रश्न पूछते हैं।
१९. मामा का मित्र वृक्ष के नीचे बैठकर गीत गाते हुए लड़को को बुलाता है।
२०. सत्पुरुष घर पर आते हुए भिक्षुओं को भात देते हैं।
२१. स्वर्ग में जन्म लेने की इच्छा करते हुए सत्पुरुष शील की रक्षा करते हैं।
२२. गाँव आते हुए/पहुँचते हुए गीदड़ देखकर किसान पत्थर से उसको मारने का प्रयत्न करता है।
२३. सत्य बोलते हुए उपासक धर्म सीखने का प्रयत्न करते हैं।
२४. पानी से पात्र धोकर तपस्वी पीने का पानी खोजता है।
२५. शीलों की रक्षा करते हुए पंडित सत्य समझना आरंभ करते हैं।

पाठ - १२

क्रियारूपावली/आख्यातरूपसिद्धि

१. वर्तमान काल, कर्तरि प्रयोग -

अभी तक वर्तमान काल, कर्तरि प्रयोग, प्रथम पुरुष एक वचन और बहुवचन का परिचय कराया गया।

इस पाठ में तीनों पुरुषों में धातु का रूप दिया जाएगा।

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	(सो) पचति - वह पकाता है।	(ते) पचन्ति - वे पकाते हैं।
मध्यम पुरुष	(त्वं) पचसि - तू पकाता है।	(तुम्हें) पचथ - तुम पकाते हो।
उत्तम पुरुष	(अहं) पचामि - मैं पकाता हूँ।	(मयं) पचाम - हम पकाते हैं।

२. वाक्यरचना के उदाहरण

एकवचन

१. सो भत्तं पचति। - वह भात पकाता है।
२. त्वं भत्तं पचसि। - तू भात पकाता है।
३. अहं भत्तं पचामि। - मैं भात पकाता हूँ।

बहुवचन

१. ते भत्तं पचन्ति। - वे भात पकाते हैं।
२. तुम्हे भत्तं पचथ। - तुम लोग/आप भात पकाते हो।
३. मयं भत्तं पचाम। - हम लोग/हम भात पकाते हैं।

अभ्यास – १२

हिन्दी में अनुवाद करें

१. त्वं मित्तेहि सद्धिं रथेन आपणम्हा भण्डानि आहरसि।
२. अहं उदकम्हा पदुमानि आहरित्वा वाणिजस्स ददामि।
३. तुम्हे समणानं दातुं चीवरानि परियेसथ।
४. मयं सग्गे उप्पज्जितुं आकङ्खमाना सीलानि रक्खाम।
५. ते धम्मं अधिगन्तुं उस्सहन्तानं समणानं दानं ददन्ति।

६. सो अरञ्ञम्हि उप्पतन्ते सकुणे पस्सितुं पब्बतं आरुहति।
७. मयं सुगतस्स सावके वन्दितुं विहारस्मिं सन्निपताम।
८. आगच्छन्तं तापसं दिस्वा सो भत्तं आहरितुं गेहं पविसति।
९. अहं उदकं ओरुय्ह ब्राह्मणस्स दुस्सानि धोवामि।
१०. त्वं गेहस्स द्वारं विवरित्वा पानीयं पत्तम्हा आदाय पिवसि।
११. अहं हिरञ्ञं परियेसन्तो दीपम्हि आवाटे खणामि।
१२. फलानि खादन्ता तुम्हे रुक्खेहि ओरुहथ।
१३. पासाणस्मिं ठत्वा त्वं चन्दं पस्सितुं उस्सहसि।
१४. मयं मनुस्सलोकम्हा चवित्वा सग्गे उप्पज्जितुं आकङ्खाम।
१५. तुम्हें अरञ्ञे वसन्ते मिगे सरेहि विज्झितुं इच्छथ।
१६. मयं उय्याने चरन्ता सुनखेहि सद्धिं कीळन्ते दारके पस्साम।
१७. त्वं रुक्खमूले निसीदित्वा आचरियस्स दातुं वत्थं सिब्बसि।
१८. मयं पुञ्ञं इच्छन्ता समणानं दानं ददाम।
१९. तुम्हे सच्चं अधिगन्तुं आरभथ।
२०. त्वं गीतं गायन्तो रोदन्तं दारकं रक्खसि।
२१. मयं हसन्तेहि कुमारेहि सह उय्याने नच्चाम।
२२. सो पानीयं पिवित्वा पत्तं भिन्दित्वा मातुलम्हा भायति।
२३. पासादं उपसङ्कमन्तं समणं दिस्वा भूपालस्स चित्तं पसीदति।
२४. मयं अरञ्ञं पविसित्वा अजानं पण्णानि संहराम।
२५. खेत्तं रक्खन्तो सो आवाटे खणन्ते वराहे दिस्वा पासाणेहि पहरति।

पालि में अनुवाद

१. कुत्ते के शरीर को सहलाते हुए बच्चे को मैं बुलाता हूँ।
२. हम लोग विहार में एकत्र होते हुए भिक्षुओं के साथ बोलते हुए सत्य को प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं।
३. बगीचे में बैठे हुए तुम लोग मित्रों के साथ फल खाते हो।
४. तू आसन पर बैठकर खीर पीता है।
५. जंगल जाकर घूमते हुए मृगों को देखने हम लोग घर से निकलते हैं।
६. मैं धर्म जानने की इच्छा करता हूँ।

७. पर्वत पर खड़े होकर हम लोग समुद्र पर पड़ते हुए चाँद के प्रकाश को देखते हैं।

८. मैं किसान की गाड़ी को सड़क से खींचता हूँ।

९. तुम लोग आसन पर बैठते हो, मैं घर से पानी लाता हूँ।

१०. बीज खाते हुए पंछियों को देखते हुए हम लोग खेतों में घूमते हैं।

११. मैं सूअरों को मारते हुए असत्पुरुष को उपदेश देता हूँ।

१२. घर आते हुए साँप को देखकर तुम डरते हो।

१३. मैं जंगल से निकलते हुए मनुष्यों से प्रश्न पूछता हूँ।

१४. रोते हुए लड़के को देखकर हम लोग मार्ग में जाते हुए वैद्य को बुलाते हैं।

१५. शीलों की रक्षा करता हुआ, भिक्षुओं को दान देता हुआ मैं बच्चों के साथ घर में रहता हूँ।

१६. पापकर्मों से डरते हुए सत्पुरुष स्वर्ग में जन्म लेते हैं।

१७. लाभ प्राप्त करने की इच्छा करते हुए हम लोग नगर से सामान लाते हैं।

१८. वृक्ष के नीचे खड़े होकर हम लोग पानी से फूलों को सींचते हैं।

१९. मैं पानी से पात्रों को धोकर वैद्य को देता हूँ।

२०. सत्य को खोजता हुआ मैं घर छोड़कर विहार में प्रवेश करता हूँ।

२१. तुम लोग भिक्षुओं को देखने की इच्छा करते हुए बगीचे में एकत्र होते हो।

२२. मैं कौए की चोंच से गिरते हुए फल को देखता हूँ।

२३. तुम समुद्र पार करके द्वीप से घोड़े को लाते हो।

२४. मैं बाजार से दीपक लाने के लिए घर से निकलता हूँ।

२५. मैं पिटारी लेकर धान्य को एकत्र करने खेत जाता हूँ।

पाठ - १३

क्रियारूप/आख्यातरूप सिद्धि

वर्तमान काल कर्तरि प्रयोग –

अभी तक जो सीखा है उससे ए-कारान्त धातु रूप अलग प्रकार से चलते हैं। उनके दो मूल रूप होते हैं।

अंत में '-ए' और '-अय' होने वाले जैसे चोरेति, चोरयति।

धातु - चुर - चोरी करना

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	(सो) चोरेति	(ते) चोरेन्ति
मध्यम पुरुष	(त्वं) चोरेसि	(तुम्हे) चोरेथ
उत्तम पुरुष	(अहं) चोरेमि	(मयं) चोरेम

धातु - चोरय - चोरी करना

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	(सो) चोरयति	(ते) चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	(त्वं) चोरयसि	(तुम्हे) चोरयथ
उत्तम पुरुष	(अहं) चोरयामि	(मयं) चोरयाम

उक्त प्रकार से बनने वाले कुछ धातु –

देसेति - उपदेश देता है।
चिन्तेति - विचार करता है।
पूजेति - आदर करता है।/पूजा करता है।
पूरेति - भरता है।
पीळेति - पीड़ा देता है।
उड्डेति - उड़ता है।
मन्तेति - मंत्रणा करता है।
आमन्तेति - संबोधित करता है।
निमन्तेति - बुलाता है।
ओलोकेति - (यहाँ वहाँ) देखता है।
जालेति - जलाता है।
छादेति - छिपाता है, ढंकता है।

उदेति - उदय होता है।	मारेति - मारता है।
रोपेति - रोपता है।	नेति - ले जाता है।
आनेति - लाता है।	परिवज्जेति - टालता है।
ठपेति - रखता है।	ओभासेति - प्रकाशित करता है।
पातेति - गिराता है।	देति (ददाति) - देता है।
पालेति - पालता है।	

३. मूल धातु में '-ए' कार रखकर ऊपर के क्रियापदों से gerunds /absolutives और infinitive बनाये जाते हैं।

(Gerunds) - देसेत्वा, चिन्तेत्वा, पूजेत्वा, पूरेत्वा

(Infinitive) - देसेतुं, चिन्तेतुं, पूजेतुं, पूरेतुं

४. अंत में 'ना' आने वाले क्रियापदों के रूप इस प्रकार होते हैं।

धातु - किणा - खरीदना

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	(सो) किणाति	(ते) किणन्ति
मध्यम पुरुष	(त्वं) किणासि	(तुम्हे) किणाथ
उत्तम पुरुष	(अहं) किणामि	(मयं) किणाम

५. कुछ क्रियापद उक्त प्रकार से बनते हैं।

विक्किणाति	- बेचता है।	जानाति	- जानता है।
सुणाति	- सुनता है।	जिनाति	- जीतता है।
मिनाति	- मापता है, तोलता है।	पापुणाति/पप्पोति	- पहुँचता है, प्राप्त होता है।
गण्हाति	- ग्रहण करता है।	ओचिनाति	- चुनता है।
उग्गण्हाति	- सीखता है।	पहिणाति	- भेजता है।

नोटः यहां यह ध्यातव्य है कि Present tense verble terminations अपरिवर्तनीय या नियत रहते हैं। सिर्फ विकरण प्रत्यय या मूल धातु और termination के बीच के conjugational sign में परिवर्तन देखा जाता है।

६. नीचे दिये गये रूपों पर ध्यान दीजिए।

वर्तमान काल	पूर्वकालिक	निमित्तार्थक
जानाति	ञत्वा/जानित्वा	ञातुं
सुणाति	सुत्वा/सुणित्वा	सोतुं/सुणितुं
पापुणाति/पप्पोति	पत्वा/पापुणित्वा	पापुणितुं/पप्पोतुं
गण्हाति	गहेत्वा/गण्हित्वा	गहेतुं/गण्हितुं

७. दो क्रियापदों भवति/होति और करोति का हमेशा प्रयोग होता है। उनके पूर्वकालिक और निमित्तार्थक अव्यय इस प्रकार हैं।

पूर्वकालिक - भवित्वा/हुत्वा, कत्वा
निमित्तार्थक - भवितुं/होतुं, कातुं

किया पद अत्थि (है) 'अस' धातु से और करोति (करना) 'कर' धातु से, ये हमेशा प्रयोग होने वाले विशेष क्रियापद हैं। उनके रूप नीचे दिये गये हैं।

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अत्थि	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	अत्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि/अम्हि	अस्म/अम्ह
प्रथम पुरुष	करोति	करोन्ति
मध्यम पुरुष	करोसि	करोथ
उत्तम पुरुष	करोमि	करोम

अभ्यास - १३

हिन्दी में अनुवाद करें

१. बुद्धो विहारस्मिं सन्निपतन्तानं मनुस्सानं धम्मं देसेति।
२. बुद्धं पूजेतुं चिन्तेन्तो उपासको पुप्फानि ओचिनाति।
३. ते पत्ते उदकेन पुरेन्ता गीतं गायन्ति।

४. तुम्हे अरञ्ञे वसन्ते मिगे पीळेत्वा असप्पुरिसा होथ।
५. मयं आपणं गन्त्वा वाणिजेहि सद्धिं कथेत्वा धञ्ञं विक्किणाम।
६. त्वं उड्डेन्तं सुकं दिस्वा गण्हितुं इच्छसि।
७. पब्बतम्हा उदेन्तं चन्दं पस्सितुं कुमारो घरम्हा धावति।
८. अहं कस्सकेहि सह खेत्तस्मिं रुक्खे रोपेमि।
९. मयं अमच्चेहि सह मन्तेता पासादस्मिं आसनेसु निसीदाम।
१०. तुम्हे तथागतस्स सावके निमन्तेत्वा दानं देथ।
११. उपासका विहारं गन्त्वा दीपे जालेत्वा धम्मं सोतुं निसीदन्ति।
१२. लुद्दको सीसं दुस्सेन छादेत्वा निसीदित्वा सकुणे मारेतुं उस्सहति।
१३. सो वने आहिण्डन्ते गोणे गामं आनेत्वा वाणिजानं विक्किणाति।
१४. त्वं आपणेहि भण्डानि किणित्वा सकटेन आनेत्वा गेहे ठपेसि।
१५. तुम्हे ककचेहि रुक्खे छिन्दित्वा पब्बतम्हा पातेथ।
१६. धम्मेन मनुस्से पालेन्ता भूपाला अकुसलं परिवज्जेन्ति।
१७. सच्चं ञातुं इच्छन्तो अहं समणेहि पञ्हे पुच्छामि।
१८. दानं दत्वा सीलं रक्खन्ता सप्पुरिसा सग्गलोकं पापुणन्ति।
१९. धञ्ञं मिणन्तो कस्सको आपणं नेत्वा धञ्ञं विक्किणितुं चिन्तेति।
२०. अहं पत्तेन पानीयं पिवन्तो द्वारस्मिं ठत्वा मग्गं ओलोकेमि।
२१. सो आपाणम्हा खीरं किणितुं पुत्तं पहिणाति।
२२. मयं धम्मं उग्गण्हितुं उस्सहन्ता पण्डितेन सह मन्तेम।
२३. चोरेहि सद्धिं गेहे भिन्दित्वा, मनुस्से पिळेन्ता तुम्हे असप्पुरिसा होथ।
२४. अहं सुवण्णं परियेसमाने दीपम्हा आगच्छन्ते वाणिजे जानामि।
२५. अहं आचरियो होमि, त्वं वेज्जो होसि।
२६. त्वं असप्पुरिस, बुद्धेन देसितं धम्मं सुत्वा सप्पुरिसो भवितुं उस्सहसि।
२७. अहं पण्डितेहि सद्धिं मन्तेन्तो दीपं पालेन्तो भूपालो अस्मि।
२८. वराहे मारेन्ता चोरा कस्सके पीळेन्ता पापकम्मानि करोन्ति।
२९. सीलं रक्खन्ता पुञ्ञकम्मानि करोन्ता मनुस्सा सग्गं पप्पोतुं आकङ्खन्ति।
३०. अकुसलं पहाय, पापं परिवज्जेत्वा विहरन्ता नरा सप्पुरिसा भवन्ति।

पालि में अनुवाद करें

१. तू वृक्षों से फलों को चुनकर बाजार भेजता है।
२. धर्म उपदेश करते हुए बुद्ध को सुनकर मैं प्रसन्न होता हूँ।
३. धान को एकत्र करने का विचार करता हुआ मैं किसान के साथ खेत जाता हूँ।

४. गीत गाते हुए तुम लोग आकाश में उड़ते हुए पक्षियों को देखते हो।
५. गाँव में किसानों को पीड़ित करते हुए असत्पुरुष को मैं उपदेश देता हूँ।
६. हम लोग बगीचे में वृक्ष रोपने के लिए गड्ढे खोदते हैं।
७. हम लोग विहार में दीपक जलाते हुए मनुष्य को जानते हैं।
८. तुम नाविकों के साथ द्वीप पर पहुँचने के लिए समुद्र पार करते हो।
९. द्वीप की रक्षा करता हुआ राजा जीतता है।
१०. हम लोग गाँव में रहते हुए भिक्षुओं से धर्म सीखने का आरंभ करते हैं।
११. सत्य खोजता हुआ पंडित नगर से नगर जाता है।
१२. सोते हुए कुत्ते को पैर से दूर करके लड़का घर की ओर दौड़ता है।
१३. स्वर्ग में जन्म लेने की इच्छा करने वाले पंडित पाप करने से डरते हैं।
१४. मनुष्य लोक से मरकर असत्पुरुष नरक में जन्म लेते हैं।
१५. पर्वत से तपस्वी को बुलाकर राजा उन्हें चीवर देते हैं।
१६. सत्य सीखने का प्रयत्न करते हुए उपासक श्रमण होते हैं।
१७. धर्म देते हुए श्रमण को सुनने की इच्छा करते हुए उपासक विहार में एकत्र होते हैं।
१८. हम लोग आँखों से देखते हैं, कानों से सुनते हैं, शरीरों से स्पर्श करते हैं।
१९. द्वीपों की रक्षा करता हुआ राजा हूँ।
२०. तुम लोग चोरों के साथ विचार-विमर्श करने वाले असत्पुरुष हो।
२१. सत्पुरुष संसार का संरक्षण करने के लिए वृक्ष रोपन आरंभ करते हैं।
२२. धर्म सुनकर चोर पाप से दूर रहने की इच्छा करता है।
२३. गाँवों से आते हुए किसानों के पास बेचने के लिए व्यापारी बाजार में वस्त्र रखते हैं।
२४. बीमार मनुष्य लोक में देवताओं का दूत है।
२५. असत्पुरुषों को उपदेश करने वाले सत्पुरुष संसार में हैं।
२६. वैद्य पानी से (अनेक) कमल को तोड़कर/चुनकर धर्म सुनने विहार जाता है।
२७. चोर बुद्ध को देखकर प्रसन्न होकर बाणों को दूर फेंकता है।
२८. अकुशल को टालने की इच्छा से मैं शील की रक्षा करता हूँ।
२९. हम लोग विहार से आते हुए श्रमणों को दान देने के लिए भात पकाते हैं।
३०. तुम लोग व्यापारियों के साथ सोना खोजते हुए द्वीप से द्वीप जाते हो।

पाठ - १४

१. **भविष्यत्काल** – मूल धातु या धातु रूप में 'इ' स्वर के साथ या बिना 'इ' स्वर के साथ **'-स्स'** जोड़कर भविष्यत्काल बनाते हैं।

इन पदों के अन्त्य प्रत्यय वर्तमानकाल के समान होते हैं।

धातु - पच - पकाना

एकवचन

प्रथम पुरुष	(सो) पचिस्सति	- वह पकाएगा।
मध्यम पुरुष	(त्वं) पचिस्ससि	- तू पकाएगा।
उत्तम पुरुष	(अहं)पचिस्सामि	- मैं पकाऊँगा।

बहुवचन

प्रथम पुरुष	(ते) पचिस्सन्ति	- वे पकाएँगे
मध्यम पुरुष	(तुम्हे) पचिस्सथ	- तुम लोग पकाओगे। ।
उत्तम पुरुष	(मयं) पचिस्साम	- हम लोग पकाएँगे।

धातु -चोरे - चोरी करना

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	(सो) चोरेस्सति	(ते) चोरेस्सन्ति
मध्यम पुरुष	(त्वं) चोरेस्ससि	(तुम्हे) चोरेस्सथ
उत्तम पुरुष	(अहं) चोरेस्सामि	(मयं) चोरेस्साम

धातु किणा - खरीदना

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	(सो) किणिस्सति	(ते) किणिस्सन्ति
मध्यम पुरुष	(त्वं) किणिस्ससि	(तुम्हे) किणिस्सथ
उत्तम पुरुष	(अहं) किणिस्सामि	(मयं) किणिस्साम

२. नीचे दिए गए रूपों पर ध्यान दीजिए।

गच्छति	- गमिस्सति	- वह जाएगा।
आगच्छति	- आगमिस्सति	- वह आएगा।
ददाति	- ददिस्सति/दस्सति	- वह देगा।
तिट्ठति	- ठस्सति	- वह खड़ा रहेगा।
करोति	- करिस्सति	- वह करेगा।

अभ्यास- १४

हिन्दी में अनुवाद करें

१. सो पब्बतम्हा उदेन्तं चन्दं पस्सितुं पासादं आरुहिस्सति
२. भूपालो चोरेहि दीपं रक्खितुं अमच्चेहि सह मन्तेस्सति।
३. अहं समुद्दं तरित्वा दीपं पापुणित्वा भण्डानि विक्किणिस्सामि।
४. तुम्हे विहारं उपसङ्कमन्ता, मग्गे पुप्फानि विक्किणन्ते मनुस्से पस्सिस्सथ।
५. उदकं ओतरित्वा वत्थानि धोवित्वा नहायित्वा कस्सको गेहं आगमिस्सति।
६. गामे विहरन्तो त्वं नगरं गन्त्वा रथं आनेस्ससि।
७. पुञ्ञं कातुं इच्छन्ता तुम्हे सप्पुरिसा पापमित्ते ओवदिस्सथ।
८. धम्मं सोतुं उय्याने निसीदन्तानं उपासकानं अहं पानीयं दस्सामि।
९. मयं भूपाला धम्मेन दीपे पालेस्साम।
१०. रुक्खं पातेत्वा फलानि खादितुं इच्छन्तं असप्पुरिसं अहं अक्कोसामि।
११. दानं ददमाना सीलं रक्खन्ता मयं समणेहि धम्मं उग्गण्हिस्साम।
१२. धावन्तम्हा सकटम्हा पतन्तं दारकं दिस्वा त्वं वेज्जं आनेसि।
१३. सच्चं अधिगन्तुं उस्सहन्तो तापसो तथागतं पस्सितुं आकङ्खति।
१४. बुद्धे पसीदित्वा उपासको देवपूत्तो हुत्वा सग्गलोके उप्पज्जति।
१५. उदेन्तं सुरियं दिस्वा ब्राह्मणो गेहा निक्खम्म वन्दति।
१६. दीपं पप्पोतुं आकङ्खमाना मयं समुद्दं तरितुं नाविकं परियेसाम।
१७. अमच्चस्स दूतं पहिणितुं इच्छन्तो भूपालो अहं अस्मि।
१८. पुञ्ञकम्मानि करोन्तानं वाणिजानं धनं अत्थि।
१९. मयं गीतानि गायन्ते नच्चन्ते कुमारे ओलोकेस्साम।
२०. पापं परिवज्जेत्वा कुसलं करोन्ते सप्पुरिसे देवा पूजेस्सन्ति।
२१. सच्चं भासन्ता असप्पुरिसे अनुसासन्ता पण्डिता उपासका भविस्सन्ति।
२२. त्वं धञ्ञेन पत्तं पूरेत्वा आचरियस्स दस्ससि।
२३. रुक्खमूले निसीदित्वा चीवरं सिब्बन्ते समणे अहं उपसङ्कमिस्सामि।

२४. अहं सयन्तस्स पुत्तस्स कायं आमसन्तो मञ्चस्मिं निसीदामि।
२५. उय्यानेसु रुक्खे रोपेतुं समणा मनुस्से अनुसासन्ति।

पालि में अनुवाद करें

१. मैं बुद्ध से धर्म सीखकर धर्म से संसार में जीऊँगा।
२. मैं राजा को मंत्रियों के साथ धर्म से द्वीप की रक्षा करने का उपदेश दूंगा।
३. आसन पर कपड़ा रखकर लड़का नहाने के लिए पानी में उतरेगा।
४. तुम लोग धर्म सुनकर तथागत पर प्रसन्न होंगे।
५. फलों को एकत्र करके, जंगल में घूमते हुए वे लोग पानी पीने की इच्छा करेंगे।
६. नगर पहुँचते हुए किसान मार्ग में दौड़ते हुए रथों को देखेंगे।
७. उगता हुआ सूरज संसार को प्रकाशित करेगा।
८. बगीचे में वृक्ष चाँद के प्रकाश से नहायेंगे।
९. पंडित से (अनेक) प्रश्न पूछते हुए पुत्रों को देखकर तू प्रसन्न होगा।
१०. बच्चे वृक्षों पर फल खाते हुए अनेक तोते को देखने की इच्छा करेंगे।
११. हम लोग द्वीप से आते हुए वैद्य हैं, तुम लोग द्वीप जाते हुए आचार्य हो।
१२. वह धन लेकर सामान खरीदने के लिए बाजार जाएगा।
१३. बच्चा पानी से पात्र भरकर भात खाते हुए भिखारी को देगा।
१४. पुण्य प्राप्त करने की इच्छा करते हुए मनुष्य संसार में लोगों के लिए वृक्षारोपण करेंगे।
१५. धन खोजते हुए असत्पुरुष गावों में धर्म से जीते हुए किसानों को तकलीफ देंगे।
१६. पर्वतों में वृक्षों पर अनेक फल होते हैं।
१७. सत्पुरुष कुशल कर्म करते हुए श्रमणों से धर्म सीखेंगे।
१८. पंडित लोग द्वीप पर शासन करते राजाओं को उपदेश देते हैं।
१९. समुद्र से आते हुए मछुआरों से तुम लोग मछलियां खरीदोगे।
२०. हम लोग धर्म सीखने की इच्छा से बुद्ध के पास जाते हैं।
२१. उद्यान में आते हुए गीदड़ देखकर बच्चे डरेंगे।
२२. मंत्रियों के साथ गाँव आते हुए राजा को देखने के लिए लोग जाएँगे।
२३. तू धर्म से जीता हुआ सत्पुरुष है।
२४. मैं चोंच से फल चुनते हुए तोते को देखता हूँ।
२५. हम लोग शील की रक्षा करते हुए सत्पुरुष होंगे।

पाठ - १५

१. विधिलिङ्ग या सत्तमी

यह मुख्यतः संभावना, सलाह तथा वैसे भाव व्यक्त करता है जो 'अगर', 'हो सकता है', इत्यादि द्वारा व्यक्त किया जा सकता है।

यह मूल धातु में '-एय्य' जोड़कर बनाया जाता है।

धातु पच - पकाना

एकवचन

प्रथम पुरुष	(सो) पचेय्य	अगर वह पकाए।
मध्यम पुरुष	(त्वं) पचेय्यासि	अगर तू पकाए।
उत्तम पुरुष	(अहं) पचेय्यामि	अगर मैं पकाऊँ।

बहुवचन

प्रथम पुरुष	(ते) पचेय्युं	अगर वे पकाएँ।
मध्यम पुरुष	(तुम्हे) पचेय्याथ	अगर तुम पकाओ।
उत्तम पुरुष	(मयं) पचेय्याम	अगर हम लोग पकाएँ।

यह ध्यान देना चाहिए कि मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष के रूप वर्तमान काल के समान हैं।

२. वाक्य रचना के लिए नीचे दिये गए निपात बहुत उपयुक्त हैं।

सचे/यदि	- अगर
च	- और
अपि	- भी
न	- नहीं
विय	- जैसे

३. वाक्यरचना के उदाहरण

एकवचन

१. सचे सो भत्तं पचेय्य, अहं भुञ्जेय्यामि।
यदि वह भात पकाए तो मैं खाऊँ।

२. सचे त्वं इच्छेय्यासि अहं चोरं पुच्छेय्यामि।
यदि तू चाहे/ (तो) मैं चोर से पूछूँ।
३. यदि अहं नगरे विहरेय्यामि, सो पि नगरं आगच्छेय्य।
अगर मैं नगर में रहूँ तो वह भी नगर आए।

बहुवचन

१. सचे ते भत्तं पचेय्युं, मयं भुञ्जेय्याम।
अगर वे भात पकाएँ तो हम लोग खाएँ।
२. सचे तुम्हे इच्छेय्याथ मयं चोरे पुच्छेय्याम।
अगर/यदि तुम लोग चाहो तो हम लोग चोरों से पूछें।
३. यदि मयं नगरे विहरेय्याम ते पि नगरं आगच्छेय्युं।
अगर हम लोग नगर में रहें तो वे भी नगर आयें।

अभ्यास - १५

हिन्दी में अनुवाद करें

१. सचे त्वं धम्मं सुणेय्यासि अद्धा त्वं बुद्धस्स सावको भवेय्यासि।
२. यदि ते गीतानि गायितुं उग्गण्हेय्युं, अहं पि उग्गण्हेय्यामि।
३. सचे त्वं बीजानि पहिणेय्यासि, कस्सको तानि खेत्ते वपेय्य।
४. सचे तुम्हे पदुमानि ओचिनेय्याथ कुमारा तानि बुद्धस्स पुजेय्युं।
५. सचे त्वं मूल गण्हेय्यासि अहं दुस्सं आददेय्यामि।
६. यदि मयं भूपालेन सह मन्तेय्याम अमच्चा न आगच्छेय्युं।
७. सचे तुम्हे रुक्खे रोपेय्याथ, दारका फलानि भुञ्जेय्युं।
८. सचे मयं सप्पुरिसा भवेय्याम पुत्ता पि सप्पुरिसा भावेय्युं।
९. सचे भूपाला धम्मेन दीपे पालेय्युं मयं भूपालेसु पसीदेय्याम
१०. सचे कस्सको गोणं विक्किणेय्य, वाणिजो तं किणेय्य।
११. सचे मनुस्से पीळेन्ता असप्पुरिसा गामं आगच्छेय्युं अहं ते ओवदेय्यामि।
१२. यदि अमच्चा पापं परिवज्जेय्युं मनुस्सा पापं न करेय्युं।
१३. सचे तुम्हे पब्बतं आरुहेय्याथ आहिण्डन्ते मिगे च रुक्खेसु चरन्ते मक्कटे च उड्डन्ते सकुणे च पस्सेय्याथ।
१४. सचे त्वं पत्तेन पानीयं आनेय्यासि पिपासितो सो पिवेय्य।
१५. कुसलकम्मानि कत्वा तुम्हे मनुस्सलोके उप्पज्जितुं उस्सहेय्याथ।

१६. सचे सो वेज्जो भवेय्य, अहं तं रोदन्तं दारकं पस्सितुं आनेय्यामि।
१७. यदि पुत्तो पापं करेय्य अहं तं ओवदेय्यामि।
१८. सचे अमच्चो पण्डितं आचरियं आनेय्य मयं धम्मं उग्गण्हेय्याम।
१९. सचे अहं हत्थेन सुवं फुसितुं उस्सहेय्यामि सो गेहा उप्पतेय्य।
२०. यदि सो वेज्जं पक्कोसितुं इच्छेय्य अहं तं आनेय्यामि।

२१. पालि में अनुवाद

१. अगर तू पुत्रों के अकुशल कर्मों को छिपाओगे तो वे चोर बन जायेंगे।
२. अगर तुम लोग सत्पुरुष बनना चाहते हो तो पाप से दूर रहो।
३. अगर हम लोग आँखों (आँख) से देखें तो संसार में रूप को देखेंगे।
४. अगर तू गीत गाना आरंभ करो, तो बच्चे नाचना आरंभ करें।
५. अगर हम लोग मनुष्य लोक से च्युत हो जायं तो मनुष्य लोक में जन्म लेने से डरेंगे नहीं।
६. अगर देवता मनुष्यलोक में जन्म लें तो वे पुण्यकर्म करेंगे।
७. अगर तुम लोग सत्य को खोजते हो तो विहार में रह रहे तथागत के पास जाओगे।
८. अगर तुम लोग व्यापारी को उपदेश दो तो वह सत्पुरुष बन जायगा।
९. अगर मैं श्रमण को बुलाऊँ तो वह धर्म का उपदेश देने के लिए घर आयेंगे।
१०. अगर तुम लोग सत्पुरुष हो, तो जंगल में घूमते हुए बैलों को नहीं मारोगे।
११. अगर तुम लोग खेत में काम करोगे, तुम लोग धन और धान्य प्राप्त करोगे।
१२. अगर राजा धर्म से द्वीप की रक्षा करना चाहेगा, वह पंडितों और मंत्रियों के साथ मन्त्रणा करेगा।
१३. अगर तू खेत में काम करो तो जोतते हुए किसानों को देख पाओगे।
१४. मैं बन्दर के साथ बगीचे में खेलते हुए लड़कों को देखता हूँ।
१५. अगर वे लोग गाते हुए पक्षियों को देखना चाहते हैं तो वे बगीचे में जायेंगे।
१६. अगर तुम लोग धर्म सुनते हो तो धर्म से जी सकोगे।
१७. अगर तू पापी मित्रों को दूर रखता है, तू सत्पुरुष बनेगा।
१८. अगर मंत्री सत्पुरुष नहीं है हम (उनके) पास नहीं जायेंगे।
१९. अगर वृक्ष में फल हैं मैं उनको तोड़ने वृक्ष पर चढ़ूँगा।
२०. अगर मैं फलों को चुनूँगा तुम लोग मित्रों के साथ खाओगे।

पाठ - १६

१. आज्ञा/पञ्चमी

पञ्चमी/आज्ञा, आदेश, प्रार्थना, आशीर्वाद (मंगल कामना) इच्छा व्यक्त करती है।

धातु - पच - पकाना

एकवचन

प्रथम पुरुष	(सो) पचतु	- वह पकाए
मध्यम पुरुष	(त्वं) पच/पचाहि	- तू पकाए
उत्तम पुरुष	(अहं) पचामि	- मैं पकाऊँ

बहुवचन

प्रथम पुरुष	(ते) पचन्तु	- वे पकाएँ
मध्यम पुरुष	(तुम्हे) पचथ	- तुम लोग पकाओ
उत्तम पुरुष	(मयं) पचाम	- हम लोग पकायें

यह ध्यान देना चाहिए कि मध्यम पुरुष बहुवचन और उत्तम पुरुष एकवचन/बहुवचन के रूप वर्तमान काल जैसे ही हैं।

प्रतिबंधात्मक पद मा (मत) भी आज्ञा में प्रयोग होता है।

२. वाक्य रचना के उदाहरण

एकवचन

१. सो वाणिजानं भत्तं पचतु।
वह व्यापारियों के लिए भात पकाए।

२. त्वं रथेन नगरं गच्छ/गच्छाहि।
तुम रथ से नगर जाओ।

३. अहं धम्मं उग्गण्हामि।
मैं धर्म सीखूँ।

बहुवचन -

१. ते वाणिजानं भत्तं पचन्तु।
वे व्यापारियों के लिए भात पकाएँ।
२. तुम्हे रथेन नगरं गच्छथ।
तुम लोग रथ से नगर जाओ।
३. मयं धम्मं उग्गण्हाम।
हम लोग धर्म सीखें।

प्रतिबंधात्मक पद - मा

१. मा तुम्हे सच्चं परिवज्जेथ।
तुम लोग सत्य को मत छोड़ो।
२. मा ते उय्यानम्हि पुप्फानि ओचिनन्तु।
वे लोग बगीचे में फूल न तोड़ें।

अभ्यास - १६

हिन्दी में अनुवाद करें

१. भूपाला धम्मेन दीपं पालेन्तु।
२. मा मनुस्सो भायतु, सचे सो सच्चं जानाति भासतु।
३. तुम्हे पापं करोन्ते पुत्ते ओवदथ।
४. सुगतो धम्मं देसेतु, सावका च उपासका च विहारस्मिं निसीदन्ति।
५. मा ते पापकम्मानि कत्वा मनुस्सलोकम्हा चवित्वा नरके उप्पज्जन्तु।
६. मा चोरा कस्सकानं गोणे मारेन्तु।
७. मा त्वं सुनखं आमसाहि, सो त्वं डसेय्य।
८. तुम्हे दीपे जालेत्वा विहारस्मिं रूपानि ओलोकेथ।
९. तुम्हे असप्पुरिसे आमन्तेत्वा धम्मेन जीवितुं अनुसासथ।
१०. पुत्त, मा त्वं पापमित्ते उपसङ्कम।
११. सचे तुम्हे सच्चं भासितुं उस्सहेय्याथ, तुम्हे सप्पुरिसा भवेय्याथ।
१२. सचे त्वं पासाणे खिपेय्यासि, काका च सकुणा च आकासं उप्पतेय्युं।
१३. मा दारक पानीयं पिवित्वा पत्तं भिन्द।
१४. मा सुवण्णं चोरेत्वा गच्छन्ता चोरा समुद्दं तरन्तु।

१५. उपासक, मा पुत्ते अक्कोसाहि, समणेहि सद्धिं मन्तेत्वा पुत्ते अनुसासाहि।

पालि में अनुवाद करें

१. द्वीप पर शासन करते हुए राजा धर्म से मनुष्यों की रक्षा करें।
२. बगीचे में खेलते हुए बच्चे गिरते हुए पत्तों को एकत्र करें।
३. किसान और व्यापारी राजा के बगीचे में एकत्र हों।
४. सिंहों, मृगों और पंक्षियों को देखने के लिए पुत्र पर्वत पर चढ़े।
५. अगर तुम लोग मृगों को सुरक्षित रखने की इच्छा करते हो तो जंगलों में वृक्षों को मत काटो।
६. बच्चे को सीढ़ी से नीचे मत आने दो, वह गिर जाएगा।
७. किसान खेत जोतकर बीज बोए, वह बकरी को न मारे।
८. चोंच से फल ग्रहण करके तोते उड़ जाएँ।
९. बेटे, पाप नहीं करना, धर्म से जीओ !
१०. सुगत के शिष्य भिक्षा और चीवर प्राप्त करें।
११. बच्चे घर से निकलकर पर्वत से उगते हुए चाँद को देखें।
१२. लड़को, तुम लोग शिकारी के साथ जंगल जाकर मृगों को मत मारो।
१३. तुम लोग दौड़कर घर जाओ और खेत जोतते हुए किसानों के लिए पानी लाओ।
१४. राजा के दूत से प्रश्न मत पूछो।
१५. तुम उपासक अकुशल (कर्म) को टालने का तथा कुशल कर्म करने का प्रयत्न करो।

पाठ - १७

१. भूतकाल -

अ-कारान्त वाले क्रिया के रूप -

धातु - पच - पकाना

एकवचन

प्रथम पुरुष	(सो) अपचि/पचि	- उसने पकाया।
मध्यम पुरुष	(त्वं) अपचि/पचि	- तुमने पकाया।
उत्तम पुरुष	(अहं) अपचिं/पचिं	- मैंने पकाया।

बहुवचन

प्रथम पुरुष	(ते) अपचिंसु/पचिंसु	- उन्होंने पकाए।
मध्यम पुरुष	(तुम्हे) अपचित्थ/पचित्थ	- तुम लोगोंने पकाए।
उत्तम पुरुष	(मयं) अपचिम्ह/पचिम्ह	- हम लोगोंने पकाए।

यह ध्यान देना चाहिए कि 'अपचि' 'अपचिंसु' में 'अ' निषेधात्मक उपसर्ग नहीं है। यह भूतकाल बनाने में धातु से पहले लगने वाला वैकल्पिक स्वर है । 'ना' अंत में आने वाले क्रियापदों के रूप भूतकाल में ऊपर के जैसे होते हैं।

ए-कारान्त क्रिया के रूप

धातु - चोरे - चुराना

एकवचन

प्रथम पुरुष	(सो) चोरेसि, चोरयि	- उसने चुराया।
मध्यम पुरुष	(त्वं) चोरेसि,	- तूने चुराया।
उत्तम पुरुष	(अहं) चोरेसिं, चोरयिं	- मैंने चुराया।

बहुवचन

प्रथम पुरुष	(ते) चोरेसुं, चोरयिंसु	- उन्होंने चुराया
मध्यम पुरुष	(तुम्हे) चोरयित्थ	- तुम लोगों ने चुराया
उत्तम पुरुष	(मयं) चोरयिम्ह	- हमने चुराया

वाक्य रचना के उदाहरण

एकवचन

१. भूपालो दीपे चरि/अचरि। समणो धम्मं देसेसि।
राजा द्वीप पर घूमे। श्रमण ने धर्म का उपदेश दिया।

२. त्वं भण्डानि विक्किणि। त्वं पुप्फेहि बुद्धं पूजेसि।
तूने सामान बेचा। तूने फूलों से बुद्ध की पूजा की।

३. अहं पब्बतं आरुहिं। अहं दीपं जालयिं/जालेसिं
मैं पर्वत पर चढ़ा। मैंने दीपक जलाया।

बहुवचन

१. भूपाला दीपेसु चरिंसु/अचरिंसु। समणा धम्मं देसेसुं/देसयिंसु।
राजा द्वीपों पर घूमे। श्रमणों ने धर्म का उपदेश किया।

२. तुम्हे भण्डानि विक्किणित्थ। तुम्हे पुप्फेहि बुद्धं पूजयित्थ।
तुम लोगों ने सामान बेचे। तुम लोगों ने फूलों से बुद्ध की पूजा की।

३. मयं पब्बते आरुहिम्ह। मयं दीपे जालयिम्ह।
हम लोग पर्वत पर चढ़े। हम लोगों ने दीपक जलाए।

अभ्यास - १७

हिन्दी में अनुवाद करें -

१. कस्सको खेत्तं कसित्वा नहायितुं उदकं ओतरि।
२. उग्गण्हन्तानं दारकानं दातुं आचरिया कुसुमानि आहरिंसु।
३. उपासका आसनेहि उट्ठहित्वा धम्मं देसेतुं उपसङ्कमन्तं समणं वन्दिंसु।
४. नगरेसु कम्मानि कत्वा वेतने लभितुं आकङ्खमाना नरा गामेहि निक्खमिंसु।
५. आचरियो आसनं दुस्सेन छादेत्वा समणं निसीदितुं निमन्तेसि।
६. कुमारो द्वारं विवरित्वा रुक्खम्हा ओरुहन्ते वानरे पस्समानो अट्ठासि।
७. पण्डितो गोणे चोरेत्वा अकुसलं करोन्ते नरे पक्कोसित्वा ओवदि।
८. याचकस्स पुत्ता रुक्खेहि पतन्तानि फलानि संहरित्वा आपणस्मिं विक्किणिंसु।

९. कस्सको धञ्ञं मिणित्वा वाणिजस्स विक्किणितुं पहिणि।
१०. धम्मं उग्गण्हित्वा समणो भवितुं आकङ्खमानो अमच्चो आचरियं परियेसमानो बुद्धं उपसङ्कमि।
११. सचे तुम्हे गामं पापुणेय्याथ मित्ते ओलोकेय्याथ।
१२. पण्डितम्हा पञ्हे पुच्छित्वा सच्चं जानितुं मातुलो उस्सहि।
१३. पासाणम्हि ठत्वा अजं खादन्तं सीहं दिस्वा वानरा भायिंसु।
१४. रुक्खमूले निसीदित्वा गीतानि गायन्तानं कुमारानं कायेसु पण्णानि च पुप्फानि च पतिंसु।
१५. तुम्हे धनं संहरमाना मा समुद्दं तरित्वा दीपं गच्छथ।
१६. आपणस्मिं भण्डानि विक्किणन्तस्स वाणिजस्स रथो अत्थि।
१७. अहं पुत्तस्स दातुं दुस्सं सिब्बन्तो गीतं गायिं।
१८. सूकरा च सुनखा च खेत्ते आवाटे खणिंसु।
१९. पुरिसा रुक्खमूले निसीदित्वा तापसं भासमानं सुणिंसु।
२०. लुद्दकेन सद्धिं वने आहिण्डन्ते पुत्ते आमन्तेत्वा कस्सका अक्कोसिंसु।
२१. मा त्वं सुवण्णपत्तं विक्किणित्वा खग्गे किणाहि।
२२. सो भण्डानि च खेत्तं च गोणे च पुत्तानं दत्वा गेहं पहाय समणो भवितुं चिन्तेसि।
२३. धम्मेन जीवन्ता सप्पुरिसा मिगे न मारेसुं।
२४. अहं सोपानं आरुहिं, ते सोपानम्हा ओरुहिंसु।
२५. सहायका उदकं ओतरित्वा नहायन्ता पदुमानि ओचिनिंसु।

पालि में अनुवाद करें -

१. लड़के ने पानी से (अनेक) कमल (को) सींचकर उनसे बुद्ध की पूजा की।
२. मनुष्यों ने वेतन प्राप्त कर बाजार जाकर सामान खरीदे।
३. मछुआरों ने समुद्र से मछलियां लाकर किसानों को बेचा।
४. अगर तुम नहाने के लिए जाते हो, तो बच्चों के वस्त्रों को धो देना।
५. तोते और कौए वृक्षों से आकाश में उड़ गए।
६. वृक्ष के नीचे कुत्ते के साथ खेलते हुए बच्चों को मत डाँटो।
७. मैंने राजा को देखने के लिए बगीचे में एकत्रित बैठे मनुष्यों को कहा।
८. घर में प्रवेश करते हुए साँप को देखकर हमलोग डर गये।
९. मित्र के साथ भात खाते हुए पुत्र को मैंने पानी दिया।
१०. पापकर्म न करें, मनुष्य लोक से मरकर स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए कुशल कर्म करें।

पाठ - १८

१. आ-कारान्त स्त्रीलिंग शब्द के रूप –

वनिता - स्त्री

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	वनिता	वनिता, वनितायो
दुतिया	बनितं	वनिता, वनितायो
ततिया	वनिताय	वनिताहि/वनिताभि
चतुत्थी	वनिताय	वनितानं
पञ्चमी	वनिताय	वनिताहि/वनिताभि
छट्ठी	वनिताय	वनितानं
सत्तमी	वनिताय/वनितायं	वनितासु
आलपन	वनिते	वनिता/वनितायो

२. नीचे दिये गए नामों के रूप इसी तरह होते हैं।

(अधिकांश आकारान्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं)

कञ्ञा	- लड़की	माला	- माला, हार
गङ्गा	- गंगा, नदी	सुरा	- शराब
नावा	- नौका	साखा	- डाली
अम्मा	- माँ	देवता	- देवता
पञ्ञा	- प्रज्ञा	परिसा	- परिषद
साला	- शाला, भवन	सद्धा	- श्रद्धा
कथा	- बात, भाषण	गीवा	- गला
लता	- बेल, लता	जिह्वा	- जीभ
गुहा	- गुफा	पिपासा	- प्यास
छाया	- छाँव	खुदा	- भूख, क्षुधा
वालुका	- बालू	मञ्जूसा	- पेटी

शब्द संग्रह (शब्दावली) - क्रियापद

सक्कोति	- सकता है।	परिवारेति	- घेरता है।
निवारेति	- रोकता है।	अनुबन्धति	- पीछे जाता है।
कुज्झति	- गुस्सा होता है। क्रोध करता है ।	नमस्सति	- नमन करता है।
पोसेति	- पोषण करता है।	वायमति	- कोशिश करता है।
निलीयति	- छिपता है।	सल्लपति	- बातचीत करता है।
मोदति	- खुश होता है।	पटियादेति	- तैयार करता है।
सुखं विन्दति	- सुख अनुभव करता है।		
दुक्खं विन्दति	- दुःख अनुभव करता है।		
पक्खिपति	- रखता है।		

अभ्यास -१८

हिन्दी में अनुवाद करें ।

१. सचे सभायं कञ्ञायो कथेय्युं अहं पि कथेस्सामि।
२. दारिकायो पुप्फानि ओचिनित्वा सालायं निसीदित्वा मालायो करिंसु।
३. वनिता रुक्खस्स साखायो छिन्दित्वा आकड्ढि।
४. भरिया मञ्जूसासु वत्थानि च सुवण्णं च ठपेसि।
५. दारिका पासादस्स छायायं निसीदित्वा वालुकायं कीळिंसु।
६. भरियाय कथं सुत्वा पसीदित्वा कस्सको सप्पुरिसो अभवि।
७. देवतायो पुञ्ञानि करोन्ते धम्मेन जीवन्ते मनुस्से रक्खन्तु।
८. पब्बतस्मिं गुहासु वसन्ता सीहा वालुकाय किळन्ते मिगे मारयिंसु।
९. अम्मा दारिकाय कुज्झित्वा हत्थेन पहरि।
१०. वनितायो सद्धाय भत्तं पचित्वा विहारं नेत्वा समणानं ददिंसु।
११. तुम्हे मा सुरं पिवथ, मा गिलाना भवितुं उस्सहथ।
१२. धम्मेन धनं संहरमाना, पञ्ञाय पुत्ते पोसेन्ता नरा मनुस्सलोके सुखं विन्दन्ति।
१३. सचे तुम्हे नावाय गङ्ग तरेय्याथ दीपस्मिं वसन्ते तापसे दिस्वा आगन्तुं सक्किस्सथ।
१४. परिसं परिवारेत्वा पासादम्हा निक्खमन्तं भूपालं दिस्वा वनितायो मोदन्ति।
१५. कञ्ञायो सालायं सन्निपतित्वा कुमारेहि सद्धिं सल्लपिंसु।
१६. खुदाय पिळेन्तं गिलानं याचकं दिस्वा अम्मा भत्तं अददि/अदासि।

१७. गुहायं निलीयित्वा सुरं पिवन्ता चोरा सीहं पस्सित्वा भायिंसु।
१८. वराहे मारेत्वा जीवन्तो नरो गिलानो हुत्वा दुक्खं विन्दति।
१९. वाणिजस्स आपणे मञ्जूसायं मूलं अत्थि।
२०. समणा मनुस्से पापा निवारेत्वा सप्पुरिसे कातुं वायमन्ति।

पालि में अनुवाद करें

१. विहार में जाने के लिए माँ से मार्ग पूछता हुआ मनुष्य मार्ग पर खड़ा हुआ।
२. श्रद्धा से श्रमणों के लिए भात पकाकर स्त्री विहार ले गई।
३. तुम धर्म से जीवन जी सकते हो और धन खोज सकते हो।
४. घर की छाया में बैठकर लड़कियों ने बेल (लता) की शाखों को काटा।
५. शराब पीते हुए पुत्रों को असत्पुरुषों ने उपदेश नहीं दिया।
६. लड़की टोकरी और पैसे लेकर धान खरीदने बाजार गयी।
७. अगर तुम दीपक जलाओ तो उपासक विहार में चीजों को देखें।
८. सत्पुरुषो! तुम लोग धर्म सीखो और धर्म से जीने का प्रयत्न करो।
९. अगर तुम प्रयत्न करोगे तो पाप का निवारण कर पुण्य कर सकते हो।
१०. गुफा में सोते हुए शेर को देखकर स्त्री दौड़ी।

पाठ - १९

१. भूतकालिक कृदन्त

धातु मे 'इ' स्वर के साथ या बिना इसके अंत में 'त' जोड़ने से ज्यादातर भूतकालिक कृदन्त बनते हैं।

पचति	- पच् + इ + त	= पचित	= पकाया/पकाया हुआ/पकाया गया
भासति	- भास् + इ + त	= भासित	= बोला गया
याचति	- याच् + इ + त	= याचित	= माँगा हुआ
देसेति	- दिस् + इ + त	= देसित	= उपदेशित किया गया
पूजेति	- पूज् + इ + त	= पूजित	= पूजित किया गया
गच्छति	- गम् + त	= गत	= गया
हनति	- हन् + त	= हत	= मारा हुआ
नयति/नेति	- नी + त	= नीत	= ले जाया गया।

कुछ धातु में 'न' जोड़कर भी भूतकालिक कृदन्त बनाते हैं।

छिन्दति	- छिद् + न	= छिन्न	= तोड़ा हुआ/काटा हुआ
भिन्दति	- भिद् + न	= भिन्न	= टूटा हुआ/तोड़ा हुआ
निसीदति	- नि + सद् + न	= निसिन्न	= बैठा।
तरति	- तर + न	= तिण्ण	= पार किया।

२. भूतकालिक कृदन्त को कर्मणि अर्थ प्राप्त होता है जब वे सकर्मक क्रियापदों से बनाये जाते हैं। लेकिन अकर्मक क्रियापदों से बनाये गये भूतकालिक कृदन्त को कर्तरि अर्थ प्राप्त होता है।

उनके रूप तीनों लिङ्गों में मिलते हैं।

अकारान्त शब्द पुल्लिङ्ग और नपुसकलिङ्ग में और आकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

पचति, छिन्दति, निमन्तेति– ये सकर्मक क्रियापद हैं।

इसलिए -

पचितो ओदनो = पकाया हुआ भात (कर्मणि अर्थ)
छिन्नं पण्णं = तोड़ा हुआ पत्ता (कर्मणि अर्थ)
निमन्तिता कञ्ञा = बुलायी हुई लड़की (कर्मणि अर्थ)

३. अकर्मक

लेकिन गच्छति, पतति, तिट्ठति ये अकर्मक क्रियापद हैं।

इसलिए -

मनुस्सो गतो (होति) - मनुष्य गया है - (कर्तरि)
पुप्फं पतितं (होति) - फल गिरा है - (कर्तरि)
कञ्ञा ठिता (होति) - लड़की खड़ी हो गयी - (कर्तरि)

३. कुछ भूतकालिक कृदन्त

कसति	- कसित, कट्ठ	पिवति	- पीत
पुच्छति	- पुच्छित, पुट्ठ	चवति	- चुत
पचति	- पचित, पक्क	हणति	- हत
डसति	- दट्ठ	निक्खमति	- निक्खन्त
फुसति	- फुट्ठ	जानाति	- ञात
पविसति	- पविट्ठ	सुणाति	- सुत
आमसति	- आमसित, आमट्ठ	मिणाति	- मित
लभति	- लद्ध, लभित	गण्हाति	- गहित
आरभति	- आरद्ध	किणाति	- कीत
भवति	- भूत	पापुणाति	- पत्त
भुञ्जति	- भुञ्जित, भुत्त	करोति	- कत
वपति	- वुत्त	तिट्ठति	- ठित
वसति	- वुत्थ	हरति	- हट
आसिञ्चति	- आसित्त	कुज्झति	- कुद्ध
खिपति	- खित्त	ददाति	- दिन्न
धोवति	- धोवित, धोत	पसीदति	- पसन्न
पजहति	- पहीन	पस्सति	- दिट्ठ
विवरति	- विवट	मुञ्चति	- मुत्त

४. वाक्यरचना के उदाहरण

१. उपासकेहि विहारं पविट्ठो बुद्धो दिट्ठो होति।
उपासकों द्वारा विहार में प्रविष्ट बुद्ध देखे गये हैं।

२. ते बुद्धेन देसितं धम्मं सुणिंसु।
उन लोगों ने बुद्ध द्वारा उपदेशित धर्म (को) सुना।

३. दारिकाय आहटानि भण्डानि अम्मा पिटकेसु पक्खिपि।
लड़की द्वारा लाये गए सामान को माँ ने पेटियों में रखा।

४. वाणिजो पतितस्स रुक्खस्स साखायो छिन्दि।
व्यापारी ने गिरे हुए वृक्ष की शाखाओं को काटा।

५. मयं उदकेन आसित्तेहि पुप्फेहि बुद्धं पूजेम।
हम लोग पानी से सींचे हुए फूलों से बुद्ध की पूजा कर सकते हैं।

६. कस्सकेन कसिते खेत्ते सूकरो सयति।
किसान द्वारा जोते गये खेत में सूअर सोता है।

अभ्यास - १९

हिन्दी में अनुवाद करें

१. अम्माय मञ्जूसायं पक्खित्तं सुवण्णं दारिका न गण्हि।
२. धोतानि वत्थानि गहेत्वा भरिया उदकम्हा उत्तरि।
३. कस्सकेहि उय्याने रोपितेसु रुक्खेसु फलानि भविंसु।
४. बुद्धा देवेहि च नरेहि च पूजिता होन्ति।
५. उदकेन पूरितं पत्तं गहेत्वा वनिता गेहं आगता होति।
६. अधम्मेन दीपं पालेन्तेन भूपालेन पीळिता मनुस्सा कुद्धा होन्ति।
७. पक्कं फलं तुण्डेन गहेत्वा उड्डेन्तं सुवं अहं अपस्सिं।
८. उदेन्तो सुरियो ब्राह्मणेन नमस्सितो होति।
९. अम्माय जालितं दीपं आदाय पुत्तो विहारं पविट्ठो होति।
१०. वनिताय दुस्सेन छादिते आसने समणो निसीदित्वा सन्निपतिताय परिसाय धम्मं देसेसि।
११. कस्सकेन खेत्तं आनीता गोणा तिणं खादन्ता आहिण्डिंसु।
१२. वाणिजा मञ्जूसासु ठपितानि दुस्सानि न विक्किणिंसु।
१३. सचे त्वं सच्चं जानेय्यासि मा पुत्तं अक्कोस।

१४. नावाय निक्खन्ता नरा समुद्दं तरित्वा दीपं पापुणित्वा भरियाहि सद्धिं कथेन्ता मोदन्ति।
१५. मग्गे ठिते वाणिजस्स सकटे अहं कञ्ञाय आनीतानि भण्डानि ठपेसिं।
१६. धम्मेन लद्धेन धनेन पुत्ते पोसेत्वा जीवन्ता मनुस्सा देवताहि रक्खिता होन्ति।
१७. सावकेहि च उपासकेहि च परिवारितो बुद्धो विहारस्स छायायं निसिन्नो होति।
१८. अम्माय पापेहि निवारिता पुत्ता सप्पुरिसा हुत्वा धम्मं सुणन्ति।
१९. कस्सके पीळेन्ता चोरा पण्डितेन अनुसासिता सप्पुरिसा भवितुं वायमन्ता उपासकेहि सद्धिं उय्याने रुक्खे रोपेन्ति।
२०. वनिता पुत्ताय पटियादितम्हा भत्तम्हा खुदाय पीळितस्स याचकस्स थोकं दत्वा पानीयं च ददि/अदासि।
२१. सभायं निसीदित्वा दारिकाय गायितं गीतं सुत्वा कञ्ञायो मोदिंसु।
२२. अमच्चेन निमन्तिता पुरिसा सालायं निसीदितुं असक्कोन्ता उय्याने सन्निपतिंसु।
२३. कस्सकेहि खेत्तेसु वुत्तेहि बीजेहि थोकं सकुणा खादिंसु।
२४. कुमारेहि रुक्खमूले निलीयित्वा सयन्तो सप्पो दिट्ठो होति।
२५. वाणिजेन दीपम्हा आहटानि वत्थानि किणितुं वनितायो इच्छन्ति।
२६. सचे भूपालो धम्मेन मनुस्से रक्खेय्य ते कम्मानि कत्वा दारके पोसेन्ता सुखं विन्देय्युं।
२७. पुत्तेन याचिता अम्मा मित्तानं ओदनं पटियादेसि।
२८. अमच्चेन पुट्ठं पञ्हं अधिगन्तुं असक्कोन्तो चोरानं दूतो चिन्तेतुं आरभि।
२९. चोरेहि गुहायं निलीयितानि भण्डानि पस्सित्वा वानरा तानि आदाय रुक्खे आरुहिंसु।
३०. अहं परियेसितं धम्मं अधिगन्त्वा मोदामि।

पालि में अनुवाद करें

१. सभा मे आया मनुष्य मंत्रियों के साथ बोल नहीं सका।
२. माँ द्वारा दिये गए पैसे लेकर बच्चा बाजार की ओर दौड़ा।
३. राजा घोड़ों द्वारा खींचे गए रथ में बैठा हुआ है।
४. किसानों ने पण्डित के साथ विचार-विमर्श करके राजा के पास दूत भेजा।
५. बच्चे खोले गए द्वार से निकल गये।
६. पानी में उतरी स्त्रियों ने कपड़े धोकर स्नान किया।
७. बुद्ध और श्रावक, देव और मनुष्यों द्वारा पूजित होते हैं।

८. व्यापारी ने स्त्रियों द्वारा सिले कपड़ो को बेचा।
९. मैंने लड़की द्वारा जंगल से लाए गए फूलों और फलों को नहीं लिया।
१०. कुत्ते द्वारा पीछा की गई लड़कियाँ शीघ्र घर भागीं।
११. आचार्य ने लड़की द्वारा किये गए पापकर्म को देखकर (उसे) उपदेश किया।
१२. हमने स्त्रियों द्वारा तैयार किये गये दीपकों को नहीं जलाया।
१३. तुम किसान द्वारा काटे गये शाखाओं को पर्वत से मत खींचो।
१४. (स्त्री द्वारा) किये गए काम का वेतन न मिलने पर स्त्री क्रोधित है।
१५. शाखा पर बैठे हुए लड़के से फलों को मत माँगो।
१६. ब्राह्मण द्वारा डाँटी गई स्त्री द्वार पर बैठी रोती है।
१७. माँ द्वारा बुलाई गई बच्ची भात खाने के लिए घर दौड़ी।
१८. बेलों को काटने में प्रयासरत/प्रयत्नशील मनुष्यों ने शाखाओं को खींचना प्रारंभ किया।
१९. धर्म से जीता हुआ किसान खेतों को जोतता हुआ पत्नी और बच्चों के साथ सुख अनुभव करता है।
२०. देवता देवलोक से मरकर मनुष्यलोक में जन्म लेकर बुद्ध द्वारा उपदेशित धर्म सुनकर प्रसन्न होते हैं।
२१. श्रमण द्वारा उपदेशित चोर सत्पुरुष हो गये।
२२. किसान द्वारा लगाये गए वृक्षों पर फल नहीं थे।
२३. कुत्ते द्वारा काटी गई बच्ची घर दौड़ी और रोयी।
२४. अमात्य वैद्य के लिए अपरिचित है।
२५. वृक्ष के नीचे बैठी हुई लड़कियाँ बालू से खेलीं।
२६. पुत्रो! शराब मत पीओ।
२७. माताए लड़कों को बुरे कर्मों से रोकती हैं।
२८. मैंने प्यास से पीड़ित कुत्ते को पानी दिया।
२९. हम लोग आते हुए शिकारी को देखकर वृक्षों में छिप गए।
३०. हम लोगों ने श्रद्धा से दान तैयार करके श्रमणों को दिया।

पाठ - २०

१. इ-कारान्त स्त्रीलिंग शब्द के रूप –

भूमि - पृथ्वी, जमीन

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	भूमि	भूमी/भूमियो
दुतिया	भूमिं	भूमी/भूमियो
ततिया	भूमिया	भूमीहि/भूमीभि
चतुत्थी	भूमिया	भूमीनं
पञ्चमी	भूमिया	भूमीहि/भूमीभि
छट्ठी	भूमिया	भूमीनं
सत्तमी	भूमिया/भूमियं	भूमीसु
आलपन	भूमि	भूमी/भूमियो

ई-कारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप इसी तरह होते हैं, सिर्फ प्रथमा और आलपन एकवचन अपवाद हैं जो ई-कारान्त होते हैं।

शब्द संग्रह -

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द		**ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द**	
अङ्गुलि	- ऊँगली	नदी	- नदी
अटवि	- जंगल	तरुणी	- तरुणी
रत्ति	- रात	वापी	- तालाब
दोणि	- नाव, डोंगी	कदली	- केला
युवति	- तरुणी	गावी	- गाय
यट्ठि	- लाठी	कुमारी	- लड़की, कुमारी
असनि	- बिजली/वज्र	नारी/इत्थी	- स्त्री
नालि	- परिमाण	भगिनी	- बहन
रस्मि	- किरण (सूर्य की)	पोक्खरणी	- तालाब
इद्धि	- ऋद्धि	ब्राह्मणी	- ब्राह्मण स्त्री
सम्मज्जनि	- झाड़ू	राजिनी	- देवी, रानी

क्रियापद

व्याकरोति	- स्पष्ट करता है।
पत्थेति	- इच्छा करता है, प्रार्थना करता है।
विस्सज्जेति	- खर्च करता है, भेजता है, उत्तर देता है।
आरोचेति	- सूचना देता है।
मुञ्चति	- मुक्त करता/होता है।
नीहरति	- (बाहर) ले जाता है।
पेसेति	- भेजता है।
पटिच्छादेति	- छिपाता है, ढकता है।
वेठेति	- लपेटता है।
विहेठेति	- कष्ट देता है।

अभ्यास - २०

हिन्दी में अनुवाद करें

१. भूपालो राजिनिया सद्धिं नावाय नदिं तरन्तो उदके चरन्ते मच्छे ओलोकेन्तो अमच्चेहि सद्धिं कथेति।
२. पानीयं पिवित्वा दारिकाय भूमियं निक्खितो पत्तो भिन्नो होति।
३. कस्सकानं गावियो अटवियं आहिण्डित्वा खेत्तं आगमिंसु।
४. रत्तिया समुद्दस्मिं पतिता चन्दस्स रस्मियो ओलोकेत्वा तरुणियो मोदिंसु।
५. उपासका इद्धिया आकासे गच्छन्तं तापसं दिस्वा पसन्ना होन्ति।
६. भगिनिया सद्धिं पोक्खरणिया तीरे ठत्वा सो पदुमानि ओचिनितुं वायमि।
७. नारियो वापीसु नहायितुं वा वत्थानि धोवितुं वा न इच्छिंसु।
८. युवतिया पुट्ठं पञ्हं व्याकातुं असक्कोन्तो अहं ताय सद्धिं सल्लपितुं आरभिं।
९. असप्पुरिसेन पुत्तेन कतं पापकम्मं पटिच्छादेतुं अम्मा न उस्सहि।
१०. भगिनिया दुस्सेन वेठेत्वा मञ्चस्मिं ठपितं भण्डं इत्थी मञ्जूसायं पक्खिपि।
११. मा तुम्हे मग्गे सयन्तं कुक्कुरं विहेठेथ।
१२. सप्पुरिसो अमच्चो धनं विस्सज्जेत्वा याचकानं वसितुं सालायो गामेसु करित्वा भूपालस्स आरोचेसि।
१३. कुमारो सुवं हत्थम्हा मुञ्चित्वा तं उड्डेन्तं पस्समानो रोदन्तो रुक्खमूले अट्ठासि।

१४. सद्धाय दानं ददमाना कुसलं करोन्ता सप्पुरिसा पुन मनुस्सलोके उप्पज्जितुं पत्थेन्ति।

१५. कुमारो मञ्जूसं विवरित्वा साटकं नीहरित्वा अम्माय पेसेसि।

पालि में अनुवाद -

१. राजा के बगीचे के तालाबों में कमल और मछलियां हैं।

२. तुरुणियों ने तालाब से कमल एकत्र कर जमीन पर रखे।

३. नाव से नदी पार कर आयी हुई बहनों के साथ रानी ने बातें की।

४. मैंने खेत में गाय का पीछा करते हुए कुत्ते को देखा।

५. स्त्रियाँ और लडकियाँ फल और फूल चुनने के लिए वृक्ष पर नहीं चढ़ीं।

६. तुम लोग नहाने नदी गये और बिजली की कड़क सुनकर डर गये।

७. तुम लोग मित्रों के साथ किए पाप को नहीं छिपाओ।

८. अगर तूने वस्त्र खरीदने के लिए पैसे खर्च किये तो, माँ को सूचना दो।

९. भवन में बैठी हुई जवान लड़कियों के लिए कमल के पत्तियों में लपेटे हुए कमल भेज दो।

१०. हम लोग सभा में स्त्रियों द्वारा पूछे गये प्रश्नों को स्पष्ट कर सकते हैं।

पाठ - २१

१. वर्तमानकालिक कृदन्त -

पाठ क्र. २१. पाठ क्र. ११ का ही आगे का भाग है इसलिए इन दोनों पाठों को एक साथ पढ़ना चाहिए। पाठ क्रमांक ११ में पढ़ा गया है कि पुल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग वर्तमान कृदन्त बनाने के लिए अकारान्त धातु के आगे 'न्त' तथा 'मान' प्रत्यय लगाते हैं। जैसे कि - पच + अन्त - पचन्त, पच + मान = पचमान इनके रूप इन दोनों लिङ्गों में अकारान्त शब्दों के रूप के समान होते हैं।

आगे यह ध्यान रखना चाहिए कि जिस क्रियापद के मूल का अंत 'ए' से होता है उसमें 'अय' तथा 'न्त' लगाते हैं और जिस क्रियापद के मूल का अंत 'अय' से होता है उसके आगे 'मान' प्रत्यय लगाते हैं।

जैसे कि

चोरे + अन्त = चोरेन्त
चोरय + मान = चोरयमान

जिन क्रियापदों के धातु का अंत 'ना' से होता है उनमें अन्त/मान दोनो प्रत्यय लगाते हैं लेकिन 'ना' का 'न' हो जाता है। जैसे –

किणा + न्त = किणन्त
किणा + मान = किणमान
सुणा + न्त = सुणन्त
सुणा + मान = सुणमान

'न्त' से अंत होने वाली वर्तमान कालिक कृदन्त का प्रयोग 'मान' से अंत होने वाले वर्त्तमान कालिक कृदन्त से पालि साहित्य में ज्यादातर पाया जाता है।

क्रियापद के धातु में 'न्ती' 'माना' जोड़कर स्त्रीलिङ्ग वर्तमान कालिक कृदन्त बनाते हैं। जैसे–

पच + न्ती = पचन्ती
पच + माना = पचमाना
चोरे + न्ती = चोरेन्ती
चोरय + माना = चोरयमाना
किणा + माना = किणमाना

'अन्ती' प्रत्यय के लगने पर वर्तमान कालिक स्त्रीलिंग कृदन्त के रूप ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग संज्ञा जैसे होते हैं तथा 'माना' प्रत्यय के लगने पर उनके रूप आकारान्त स्त्रीलिङ्ग संज्ञा जैसे होते हैं।

पचन्ती के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	पचन्ती	पचन्ती, पचन्तियो
दुतिया	पचन्तिं	पचन्ती, पचन्तियो
ततिया	पचन्तिया	पचन्तीहि, पचन्तीभि
चतुत्थी	पचन्तिया	पचन्तीनं
पञ्चमी	पचन्तिया	पचन्तीहि, पचन्तीभि
छट्ठी	पचन्तिया	पचन्तीनं
सत्तमी	पचन्तिया, पचन्तियं	पचन्तीसु
आलपन	पचन्ती	पचन्ती, पचन्तियो

३ वाक्यरचना के उदाहरण

एकवचन

१. अम्मा भत्तं पचन्ती कञ्ञाय सद्धिं कथेति।
भात पकाती हुई माँ लड़की के साथ बात करती है।
२. कञ्ञा भत्तं पचन्तिं अम्मं पस्सति।
लड़की भात पकाती हुई माँ को देखती है।
३. कञ्ञा भत्तं पचन्तिया अम्माय उदकं देति।
लड़की भात पकाती हुई माँ को पानी देती है।

बहुवचन

१. भत्तं पचन्तियो अम्मायो कञ्ञाहि सद्धिं कथेन्ति।
भात पकाती हुई माताएँ लड़कियों के साथ बात करती हैं।
२. कञ्ञायो भत्तं पचन्तियो अम्मायो पस्सन्ति।
लड़कियाँ भात पकाती हुई माताओं को देखती हैं।
३. कञ्ञायो भत्तं पचन्तीनं अम्मानं उदकं दोन्ति।
लड़कियाँ भात पकाती हुई माताओं को पानी देती हैं।

ऐसे ही वर्तमान कालिक कृदन्त के रूप, जिन संज्ञाओं को वे विशेषित करते हैं, उनके लिंग, वचन और कारक के अनुसार होते हैं।

अभ्यास - २१

हिन्दी में अनुवाद करें ।

१. खेत्ते फलानि चोरेन्ती दारिका कस्सकं दिस्वा भायित्वा धावितुं आरभि।

२. बुद्धस्स सावकेन देसितं धम्मं सुत्वा युवती सच्चं अधिगन्तुं इच्छन्ती अम्माय सद्धिं मन्तेसि।

३. सयन्तं सुनखं आमसन्ती कुमारी गेहद्वारे निसिन्ना होति।

४. राजिनी नारीहि पुट्ठे पञ्हे व्याकरोन्ती सभायं निसिन्ना परिसं आमन्तेत्वा कथं कथेसि।

५. अटविं गन्त्वा रुक्खं छिन्दित्वा साखायो आकड्ढन्तियो इत्थियो सिगाले दिस्वा भायिंसु।

६. गेहद्वारे निसीदित्वा दुस्सं सिब्बन्ती भगिनी गीतं गायति।

७. असप्पुरिसो पापकम्मानि पटिच्छादेत्वा उपासकेहि सद्धिं सल्लपन्तो विहारस्मिं आसने निसिन्नो होति।

८. साटकेन वेठेत्वा निलीयितं सुवण्णं पस्सितुं आकङ्खमाना युवती ओवरकस्स द्वारं विवरि।

९. सचे त्वं मूलं विस्सज्जेतुं इच्छेय्यासि मा वत्थं किणाहि।

१०. सचे तुम्हे भूपालस्स दूतं पेसेथ अमच्चे पि आरोचेथ।

११. कस्सको छिन्ना साखायो खेत्तम्हा नीहरित्वा अटवियं पक्खिपि।

१२. पोक्खरणिया तीरे ठत्वा कदलिफलं खादन्ती कञ्ञा भगिनिया दिन्नं पदुमं गण्हि।

१३. अम्हाकं हत्थपादेसु वीसति अङ्गुलियो सन्ति।

१४. रत्तिया गेहा निक्खमितुं भायन्ती कञ्ञा द्वारं न विवरि।

१५. सचे त्वं यट्ठिया कुक्कुरं पहरेय्यासि सो डसेय्य।

१६. मयं सप्पुरिसा भवितुं आकङ्खमाना समणे उपसङ्कम्म धम्मं सुत्वा कुसलं कातुं आरभिम्ह।

१७. पापकम्मेहि अनुबन्धिता असप्पुरिसा चोरा निरये उप्पज्जित्वा दुक्खं विन्दन्ति।

१८. मा पुञ्ञं परिवज्जेत्वा पापं करोथ, सचे करेय्याथ मनुस्सलोकम्हा चवित्वा दुक्खं विन्दिस्सथ।

१९. सचे तुम्हे सग्गे उप्पज्जित्वा मोदितुं पत्थेथ पुञ्ञानि करोथ।
२०. सच्चं ञातुं उस्सहन्ता ब्राह्मणा सहायकेहि सह मन्तयिंसु।
२१. नारिया पञ्जरे पक्खित्ता सुका कदलीफलं खादन्ता निसिन्ना होन्ति।
२२. गोणं विहेठेतुं न इच्छन्तो वाणिजो सकटम्हा भण्डानि नीहरित्वा भूमियं निक्खिपित्वा कस्सकं आरोचेसि।
२३. अटवियं विहरन्ता मिगा च गोणा च वराहा च सीहम्हा भायन्ति।
२४. समणा सद्धाय उपासकेहि दिन्नं भुञ्जित्वा सच्चं अधिगन्तुं वायमन्ता सीलानि रक्खन्ति।
२५. रत्तिया निक्खन्ता दोणि नदिं तरित्वा पभाते दीपं पापुणि।
२६. गेहस्स छायाय ठत्वा दारिकाय भूमियं निक्खित्तं ओदनं सुनखो खादितुं आरभि।
२७. भरियाय नालिया मितं धञ्ञं आदाय कस्सको आपणं गतो होति।
२८. उड्डेन्ते काके दिस्वा वालुकाय च उदकेन च कीळन्ती दारिका हसमाना धावि।
२९. रथं पाजेतुं उग्गण्हन्तो पुरिसो दक्खो रथाचरियो भवितुं वायमि।
३०. विवटम्हा द्वारम्हा निक्खन्ता कुमारा पञ्जरेहि मुत्ता सकुणा विय उय्यानं धाविंसु।

पालि में अनुवाद करें–

१. मञ्च पर बैठी हुई लड़की ने उसकी माँ द्वारा दिया गया दूध पीया।
२. स्त्रियाँ गागर लेकर वार्तालाप करती हुई पानी लाने नदी गईं।
३. पंछी को पीड़ा देना न चाहती हुई स्त्री ने (उसको) पिंजरे से मुक्त किया।
४. वृक्ष से फूलों को तोड़ने में असमर्थ युवती ने किसान को बुलाया।
५. रोते हुए बच्चे के पात्र में दूध नहीं है।
६. वृक्ष के नीचे गाती हुई लड़कियों ने नाचना शुरू किया।
७. शिकारी और कुत्तों द्वारा पीछा किये गए मृग वन में दौड़े।
८. लाभ प्राप्त करना चाहती हुई स्त्रियों ने बाजारों में वस्त्र बेचा।
९. लड़का दीपक जलाने के लिए तेल खरीदने एक दूकान से दूसरी दूकान आया।
१०. मैंने वृक्ष की छाया में बैठी हुई लड़की को पेटी दी।
११. लड़कियाँ वृक्ष से बेल खींचती हुई हँसीं।
१२. स्त्रियों तथा बच्चों को तकलीफ देनेवाले लोग असत्पुरुष होते हैं।
१३. हम लोग आँखों से जमीन पर गिरती सूरज की रश्मियों को देखते हैं।

१४. स्त्री ने घर में प्रवेश करते हुए साँप को लाठी से प्रहार करके मार डाला।

१५. बहनें फलों और फूलों को पेटियों में रखती हुईं खुले दरवाजे पर बैठीं।

१६. अगर तुम पानी से बाहर आकर बच्चे की रक्षा करोगे मैं तालाब में उतरकर नहाऊँगा।

१७. हम पापकर्म करती स्त्रियों से गुस्सा होकर भवन से चले गये।

१८. तुम लोग बगीचे में घूमते हुए गाय और मृगों को मत मारो, राजा और रानी गुस्सा करेंगे।

१९. राजा और मंत्री द्वीप में रहते हुए मनुष्यों को कष्ट न दें।

२०. मैंने मार्ग में घूमते हुए भूख से कष्ट पाते हुए कुत्तों को भात दिया।

पाठ - २२

१. भविष्यत कालिक कर्मवाच्य कृदन्त

धातु के आगे 'तब्ब' 'अनीय' प्रत्यय लगाने पर भविष्यकाल वाचक कर्मवाच्य कृदन्त बनते हैं। ज्यादातर '-इ' स्वर के बाद 'तब्ब' प्रत्यय लगाने पर इनके रूप पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिंङ्ग में अ-कारान्त शब्द के समान और स्त्रीलिङ्ग में आ-कारान्त के समान होते हैं। ये सामान्यतः 'अवश्य' 'होना चाहिए' और 'योग्य है' इस भाव को व्यक्त करते हैं।

पचति - पचितब्ब/पचनीय
भुञ्जति - भुञ्जितब्ब/भोजनीय
करोति - कातब्ब/करणीय

वाक्य रचना के उदाहरण

१. अम्मा पचितब्बं/पचनीयं तण्डुलं पिटके ठपेसि।
माँ ने पकाने योग्य चावल को पेटी में रखा।

२. दारिकाय भुञ्जितब्बं/भोजनीयं ओदनं अहं न भुञ्जिस्सामि।
लड़की द्वारा खाने योग्य भात मैं नहीं खाऊँगा।

३. कस्सकेन कातब्बं/करणीयं कम्मं कातुं त्वं इच्छसि।
किसान द्वारा करने योग्य काम को करने की तुम इच्छा करते हो।

अभ्यास - २२

हिन्दी में अनुवाद करें ।

१. उपासकेहि समणा वन्दितब्बा होन्ति।
२. मञ्जूसायं निक्खिपितब्बं सुवण्णं मा मञ्चस्मिं ठपेसि।
३. सप्पुरिसा पूजनीये पूजेन्ति असप्पुरिसा तथा न करोन्ति।
४. भूपालेन रक्खितब्बं दीपं अमच्चा न सम्मा पालेन्ति।
५. मनुस्सेहि धम्मो उग्गण्हितब्बो, सच्चं अधिगन्तब्बं होति।
६. कुमारीहि आहटानि पुप्फानि उदकेन आसिञ्चितब्बानि होन्ति।
७. चोरेन गण्हितं भगिनिया धनं परियेसितब्बं होति।
८. उय्याने रोपिता रुक्खा न छिन्दितब्बा होन्ति।
९. धोतब्बानि दुस्सानि गहेत्वा युवतियो हसमाना पोक्खरणिं ओतरिंसु।

१०. समणेहि ओवदितब्बा कुमारा विहारं न गमिंसु।
११. कस्सकेन कसितब्बं खेत्तं विक्किणितुं वाणिजो उस्सहि
१२. आपणेसु ठपितानि विक्किणितब्बानि भण्डानि किणितुं ते न इच्छिंसु।
१३. अम्मा खादनीयानि च भोजनीयानि च पटियादेत्वा दारकानं देति।
१४. मनुस्सेहि दानानि दातब्बानि सीलानि रक्खितब्बानि पुञ्ञानि कातब्बानि।
१५. गोणानं दातब्बानि तिणानि कस्सको खेत्तम्हा आहरि।
१६. मिगा पानीयं उदकं परियेसन्ता अटवियं आहिण्डिसु।
१७. दारिकाय दातुं फलानि आपणाय वा खेत्तम्हा वा आहरितब्बानि होन्ति।
१८. कथेतब्बं वा अकथेतब्बं वा अजानन्तो असप्पुरिसो मा सभाय निसीदतु।
१९. तुम्हे भूपाला अमच्चेहि च पण्डितेहि च समणेहि च अनुसासितब्बा होथ।
२०. उपासकेन पुट्ठो पञ्हो पण्डितेन व्याकातब्बो होति।
२१. भूपालस्स उय्याने वसन्ता मिगा च सकुणा च लुद्दकेहि न हन्तब्बा होन्ति।
२२. कुसलं अजानित्वा पापं करोन्ता कुमारा न अक्कोसितब्बा। ते समणेहि च पण्डितेहि च सप्पुरिसेहि च अनुसासितब्बा।
२३. असप्पुरिसा परिवज्जेतब्बा, मा तुम्हे तेहि सद्धिं गामे आहिण्डथ।
२४. सुरा न पातब्बा, सचे पिवेय्याथ तुम्हे गिलाना भविस्सथ।
२५. धम्मेन जीवन्ता मनुस्सा देवेहि रक्खितब्बा होन्ति।

पालि में अनुवाद

१. रात में मनुष्य को दीपक जलाना चाहिए।
२. व्यापारी ने किसानों के पास बेचने योग्य घोड़ों को खरीदा।
३. आँखों से रूप देखना चाहिए, जिव्हा से रस का आनन्द लेना चाहिए।
४. कुत्तों को लाठियों तथा पत्थरों से नहीं मारना चाहिए।
५. द्वीप पर रहने वाले लोग राजा और उसके मंत्रियों द्वारा रक्षा करने योग्य होते हैं।
६. बगीचे में घूमते हुए मनुष्यों को फूल नहीं चुनना चाहिए।
७. किसान को पत्नी के साथ धान मापना चाहिए।
८. मनुष्य को पाप नहीं करना चाहिए।
९. बैल और बकरी को घास और पानी दिया जाना चाहिए।
१०. आचार्य की बहन द्वारा परिषद को संबोधित किया जाना चाहिए।
११. गुफाओं में सोते हुए शेरों के पास मनुष्यों को नहीं जाना चाहिए।
१२. माँ के वस्त्र लड़की द्वारा धोये जाने चाहिए।

पाठ - २३

प्रेरणार्थक क्रिया –

धातु में -ए/-अय/-आपे/-आपय प्रत्यय लगाकर प्रेरणार्थक क्रियापद बनाते हैं। कभी-कभी प्रत्यय लगने से धातु का स्वर दीर्घ होता है। -ए/-अय से अन्त होने वाले धातु में प्रेरणार्थक क्रिया बनाने के लिए -आपे/-आपय प्रत्यय लगाते हैं।

पचति - पाचेति/पाचयति/पचापेति/पाचापयति
भुञ्जति - भोजेति/भोजापेति
चोरेति - चोरापेति/चोरापयति
किणाति - किणापेति/किणापयति
करोति - कारेति/कारापयति
ददाति/देति - दापेति/दापयति

प्रेरणार्थक वाक्य में काम करने वाले एजेन्ट/प्रतिनिधि के साथ दुतिया/ततिया विभक्ति का प्रयोग करते हैं।

२. वाक्यरचना के उदाहरण

१. अम्मा भगिनिं भत्तं पाचापेति।
माँ बहन से भात पकवाती है।

२. भूपालो समणे च याचके च भोजापेसि।
राजा ने श्रमण और भिखारियों को खाना खिलवाया।

३. चोरो मित्तेन ककचं चोरापेत्वा वनं धावि।
चोर मित्र से आरी चुरवाकर जंगल भागा।

४. वेज्जो पुत्तेन आपणम्हा खीरं किणापेसि।
वैद्य ने पुत्र द्वारा बाजार से दूध खरीदवाया।

५. उपासका अमच्चेन समणानं विहारं कारापेसुं।
उपासकों ने मंत्री द्वारा श्रमणों के लिए विहार बनवाया।

६. युवती भगिनिया आचरियस्स मूलं दापेत्वा सिप्पं उग्गण्हि।
युवती ने बहन द्वारा आचार्य को धन दिलवाकर कला सीखी।

७. ब्राह्मणो चोरं/चोरेन सच्चं भासापेतुं वायमि।
ब्राह्मण ने चोर से सत्य बुलवाने के लिए प्रयत्न किया।

अभ्यास - २३

हिन्दी में अनुवाद करें ।

१. अम्मा समणेहि असप्पुरिसे पुत्ते अनुसासापेसि।
२. तुम्हे मुनस्से पिळेन्ते चोरे आमन्तापेत्वा ओवदथ।
३. वाणिजो कस्सकेन रुक्खे छिन्दापेत्वा/छेदापेत्वा सकटेन नगरं नेत्वा विक्किणि।
४. समणो उपासके सन्निपातापेत्वा धम्मं देसेसि।
५. मातुलो कुमारेहि पुप्फानि च फलानि च ओचिनापेसि।
६. दारिका सुनखं पोक्खरणिं ओतरापेसि।
७. अमच्चो वाणिजे च कस्सके च पक्कोसापेत्वा पुच्छिस्सति।
८. कञ्ञाहि आहटानि पुप्फानि वनितायो आसिञ्चापेसुं।
९. भरियाय कातब्बं कम्मं अहं करोमि।
१०. लुद्दको मित्तेन मिगं विज्झित्वा मारापेसि।
११. ब्राह्मणो आचरियेन कुमारिं धम्मं उग्गण्हापेसि।
१२. अम्मा दारिकं खीरं पायेत्वा मञ्चे सयापेसि।
१३. वाणिजा अस्सेहि भण्डानि गाहापेत्वा विक्किणितुं नगरं गमिंसु।
१४. वनिता सहायकेन रुक्खस्स साखायो आकड्ढापेत्वा गेहं नेसि।
१५. अम्मा पुत्तेन गेहं आगतं समणं वन्दापेसि।
१६. उपासका समणे आसनेसु निसीदापेत्वा भोजापेसुं।
१७. भगिनी भिन्नपत्तस्स खण्डानि आमसन्ती रोदन्ती गेहद्वारे अट्ठासि।
१८. उदकं आहरितुं गच्छन्तियो नारियो सल्लपन्तियो रुक्खमूलेसु पतितानि कुसुमानि ओलोकेत्वा मोदिंसु।
१९. लुद्दको तुण्डेन फलं ओचिनितुं वायमन्तं सुवं सरेन विज्झि ।
२०. सप्पुरिसेन कारापितेसु विहारेसु समणा वसन्ति।

पालि में अनुवाद करें।

१. असत्पुरुष पुत्रों द्वारा पक्षियों को मरवाता है।
२. उपासक श्रमण द्वारा धर्म देशना दिलवायेंगे।
३. स्त्रियाँ अपने बच्चों से बुद्ध के शिष्यों की वन्दना करवाती हैं।
४. युवती सभा में बहन से कहलवाएगी।
५. किसान ने वृक्ष को गड्ढे में गिरवाया।
६. तुम लोग पानी से फूलों को सिंचवाओगे।
७. राजा ने मंत्रियों द्वारा विहार बनवाया।
८. रानी राजा द्वारा बनवाए गए महल में रहेगी।
९. व्यापारी ने पत्नी द्वारा सामान पेटियों में रखवाया।
१०. ब्राह्मण ने बुद्ध के शिष्य द्वारा रिश्तेदारों को उपदेश दिलवाया।

पाठ - २४

१. उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप।

धेनु - गाय

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	धेनु	धेनू, धेनुयो
दुतिया	धेनुं	धेनू, धेनुयो
ततिया	धेनुया	धेनूहि, धेनूभि
चतुत्थी	धेनुया	धेनूनं
पञ्चमी	धेनुया	धेनूहि, धेनूभि
छट्ठी	धेनुया	धेनूनं
सत्तमी	धेनुयं, धेनुया	धेनूसु
आलपन	धेनु	धेनू, धेनुयो

नीचे दिए गए शब्दों के रूप भी इसी तरह होंगे।

यागु	- खिचड़ी	कणेरु	- हथिनी
कासु	- गड्ढा	धातु	- धातु
विज्जु	- बिजली	सस्सु	- सास
रज्जु	- रस्सी	वधू	- बहू
दद्दु	- दाद		

शब्द संग्रह - क्रियापद

थकेति	- बंद करता है।	नासेति	- नष्ट करता है।
भजति	- साथ रहता है। संगति करता है।	ओभासेति	- चमकता है।
सम्मज्जति	- झाड़ू मारता है।	बन्धति	- बाँधता है।
विभजति	- बाँटता है।	भञ्जति	- तोड़ता है।
मापेति	- निर्माण करता है।	विहिंसति	- कष्ट पहुँचाता है।
छड्डेति	- छोड़ता है, फेंकता है।	पत्थरति	- फैलाता है।

अभ्यास - २४

हिन्दी में अनुवाद करें ।

१. वधू सस्सुया धेनुं रज्जुया बन्धित्वा खेत्तं नेसि।
२. अम्मा यागुं पचित्वा दारकानं दत्वा मञ्चे निसीदि।
३. युवतिया हत्थेसु च अङ्गुलीसु च दद्दु अत्थि।
४. मयं अटवियं चरन्तियो कणेरुयो अपस्सिम्ह।
५. इत्थी युवतिया भत्तं पचापेत्वा दारिकानं थोकं थोकं विभजि।
६. तुम्हे विज्जुया आलोकेन गुहायं सयन्तं सीहं पस्सित्थ।
७. युवतिया हत्थेसु कुमारेहि दिन्ना मालायो सन्ति।
८. वधू खेत्ते कासूसु पतितानि फलानि संहरि।
९. ब्राह्मणो बुद्धस्स धातुयो विभजित्वा भूपालानं अददि/अदासि।
१०. वधू सस्सुया पादे वन्दि।
११. युवतिया गेहं सम्मज्जितब्बं होति।
१२. देवतायो सकलं विहारं ओभासेन्तियो बुद्धं उपसङ्कमिंसु।
१३. अटवीसु वसन्तियो कणेरुयो साखायो भञ्जित्वा खादन्ति।
१४. अहं रुक्खस्स छायायं निसिन्नानं धेनूनं च गोणानं च तिणानि अददिं/अदासिं।
१५. इत्थी मग्गे गच्छन्तिं अम्मं पस्सित्वा रथम्हा ओरुह्य तं वन्दित्वा रथस्मिं आरोपेत्वा गेहं नेसि।
१६. वधू गेहस्स द्वारं थकेत्वा नहायितुं नदिं उपसङ्कमित्वा युवतीहि सद्धिं सल्लपन्ती नदिया तीरे अट्ठासि।
१७. भूपालो मनुस्से विहिंसन्ते चोरे नासेत्वा दीपं पालेसि।
१८. अम्मा असप्पुरिसे भजमाने पुत्ते समणेहि ओवादापेसि।
१९. सप्पुरिसेन किणित्वा आहटेहि भण्डेहि छड्डेतब्बं नत्थि।
२०. मा तुम्हे गामे वसन्ते कस्सके विहिंसथ।

पालि में अनुवाद करें।

१. माँ ने पेटी में रखे गये सोना लेकर बेटी को दिया।
२. बहू ने मालाओं और फूलों से देवताओं की पूजा की।
३. अगर तू गड्ढे खोद दे (तो) मैं पौधे लगाऊँ/लगाऊँगा।
४. तुम लोग खेत जाओ और अनाज घर लाओ।
५. हथिनियाँ केले के वृक्षों को खाती हुई जंगल में घूमीं।
६. मैंने नाव से नदी पार करती हुई लड़कियों को देखा।
७. तरुणियों ने गड्ढे में गिरी हुई शाखाओं को खींचा।
८. सूरज की रश्मियाँ संसार को प्रकाशित करती हैं।
९. गीत गाती हुई बहनें नहाने के लिए तालाब पर गयीं।
१०. गाय को रस्सी से बाँधकर स्त्री ने खेत पर लाया।
११. बहू सास के साथ तथागत की धातुओं की वंदना करने अनुराधपुर गयी।
१२. शील और प्रज्ञा संसार में मनुष्यों के चित्त को प्रकाशित करें।

पाठ - २५

१. इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप –

अग्गि - आग

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	अग्गि	अग्गी/अग्गयो
दुतिया	अग्गिं	अग्गी/अग्गयो
ततिया	अग्गिना	अग्गीहि/अग्गीभि
चतुत्थी	अग्गिनो/अग्गिस्स	अग्गीनं
पञ्चमी	अग्गिना/अग्गिस्मा/अग्गिम्हा	अग्गीहि/अग्गीभि
छट्ठी	अग्गिनो/अग्गिस्स	अग्गीनं
सत्तमी	अग्गिम्हि/अग्गिस्मिं	अग्गीसु
आगपन	अग्गि	अग्गी/अग्गयो

२. इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द –

मुनि/इसि	- ऋषि	कपि	- बन्दर
कवि	- कवि	अहि	- साँप
अरि	- शत्रु	दीपि	- चीता
भूपति	- राजा	रवि	- सूरज
पति	- पति	गिरि	- पर्वत
गहपति	- स्वामी, मालिक	मणि	- रतन
अधिपति	- राजा, मालिक, स्वामी	असि	- तलवार
		रासि	- ढेर
अतिथि	- अतिथि	पाणि	- हाथ
व्याधि	- रोग	कुच्छि	- पेट
उदधि	- समुद्र	मुट्ठि	- मुट्ठी
निधि	- संपत्ति		
वीहि	- धान		

अभ्यास - २५

हिन्दी में अनुवाद करें ।

१. मुनयो सीलं रक्खन्ता गिरिम्हि गुहासु वसिंसु।
२. आचरियेन सद्धिं विहरन्तो कवि इसि होति।
३. भूपति असिना अरिं पहरित्वा मारेसि।
४. पति भरियाय पटियादितं ओदनं भुञ्जित्वा खेत्तं अगमासि/अगमि।
५. सप्पुरिसा गहपतयो भरियाहि च पुत्तेहि च गेहेसु वसन्ता सुखं विन्दन्ति।
६. निधिं परियेसन्तो अधिपति सहायकेहि सद्धिं दीपं अगच्छि।
७. अतिथीनं ओदनं पचन्ती इत्थी अग्गिं जालेसि।
८. व्याधिना पीळितो नरो मञ्चे सयति।
९. गहपति वीहीनं रासिं मिनन्तो भरियाय सद्धिं कथेसि।
१०. दारिका गिरिम्हा उदेन्तं रविं ओलोकेन्ती हसन्ति।
११. भूपतिनो मुट्ठिम्हि मणयो भवन्ति।
१२. अरि कविनो सोणं यट्ठिया पहरित्वा धावि।
१३. कवि पतिना दिन्नं मणिं पाणिना गण्हि।
१४. नारियो पतीहि सद्धिं उदधिं गन्त्वा नहायितुं आरभिंसु।
१५. अधिपति अतिथिं खादनीयेहि च भोजनीयेहि च भोजापेसि।
१६. भूपतिना कातब्बानि कम्मानि अधिपतयो न करिस्सन्ति।
१७. मुनीहि परियेसितब्बं धम्मं अहं पि उग्गण्हितुं इच्छामि।
१८. अहं दीपं जालेत्वा उदकेन आसित्तेहि पदुमेहि बुद्धं पूजेमि।
१९. त्वं गिरिम्हि वसन्ते दीपयो ओलोकेतुं लुद्दकेन सह गिरिं आरुहसि।
२०. देवी परिसाय सह सभायं निसिन्ना होति।
२१. गहपतयो पञ्हे पुच्छितुं आकङ्खमाना इसिं उपसङ्कमिंसु।
२२. गहपतीहि पुट्ठो इसि पञ्हे व्याकरि।
२३. नारिया धोतानि वत्थानि गण्हन्ते कपयो दिस्वा कुमारा पासाणेहि ते पहरिंसु।
२४. उय्याने आहिण्डित्वा तिणं खादन्तियो गावियो च गोणा च अजा च अटविं पविसित्वा दीपिं दिस्वा भायिंसु।
२५. गहपतीहि मुनयो च अतिथयो च भोजेतब्बा होन्ति।

२६. अम्मा मञ्जूसाय पक्खिपित्वा रक्खिते मणयो दारिकाय च वधुया च अददि/अदासि।
२७. यदि तुम्हें भूपतिं उपसङ्कमेय्याथ मयं रथं पटियादेस्साम।
२८. गहपति चोरं गीवाय गहेत्वा पादेन कुच्छिं पहरि।
२९. सकुणेहि कतानि कुलावकानि मा तुम्हे भिन्दथ।
३०. गीतं गायन्ती युवती गाविं उपसङ्कम्म खीरं दुहितुं आरभि।
३१. बुद्धस्स धातुयो वन्दितुं मयं विहारं गमिम्ह।
३२. मयं कञ्ञायो धम्मसालं सम्मज्जित्वा किलञ्जासु निसीदित्वा धम्मं सुणिम्ह।
३३. मयं लोचनेहि रूपानि पस्साम, सोतेहि सद्दं सुणाम जिव्हाय रसं सादियाम।
३४. ते अटविया अहिण्डन्तियो गावियो रज्जूहि बन्धित्वा खेत्तं आनेसुं।
३५. भरिया व्याधिना पीळितस्स पतिनो हत्थं आमसन्ती तं समस्सासेसि।
३६. गहपति अतिथिना सद्धिं सल्लपन्तो सालाय निसिन्नो होति।
३७. मुनि सच्चं अधिगन्त्वा मनुस्सानं धम्मं देसेतुं पब्बतम्हा ओरुह्य गामे विहारे वसति।
३८. रज्जुया बन्धिता गावी तत्थ तत्थ आहिण्डितुं असक्कोन्ती रुक्खमूले तिणं खादति।
३९. देवी भूपतिना सद्धिं रथेन गच्छन्ती अन्तरामग्गे कसन्ते कस्सके पस्सि।
४०. मा तुम्हे अकुसलं करोथ, सचे करेय्याथ सुखं विन्दितुं न लभिस्सथ।

पालि में अनुवाद करें ।

१. पतियों ने पत्नियों के लिए दीप से मणि लाये।
२. व्याधियाँ संसार में रहने वाले मनुष्यों को कष्ट देती हैं।
३. स्त्री ने भूमि पर बैठकर माप से धान मापा।
४. अकुशल करते हुए गृहपति ऋषियों की वंदना नहीं करते हैं।
५. अगर तुम खजाने को खोदते हो तो मणि प्राप्त करोगे।
६. मैंने पत्नी द्वारा धुले जाने जानेवाले वस्त्रों को धोया।
७. हमने माँ द्वारा तैयार किया गया यवागू पीया।
८. नगर से आते हुए अतिथियों के लिए भात और यवागू पकाने के लिए तुमने आग जलायी।
९. गृहपति ने घर में घुसे चोर को तलवार से मारा।
१०. लड़की ने वृक्ष की छाया में खड़ी हुई गायों को घास दिया।
११. बन्दर वृक्षों पर रहते हैं, शेर गुफाओं में सोते हैं, साँप भूमि पर घूमते हैं।

१२. अगर तुम लोग नगर से सामान खरीदकर लाओ तो, मैं उनको किसानों को बेचूँ।
१३. असत्पुरुष! अगर तू कुशल कर्म करता है तो सुख अनुभव करेगा।
१४. माँ के घर में पेटियों में मणि और सोना है।
१५. ऋषि ने भूमि पर बैठे हुए राजा की परिषद को धर्म उपदेश दिया।
१६. श्रमण, ऋषि और कवि सत्पुरुषों द्वारा पूजित होते हैं।
१७. हमलोग अधिपति द्वारा रक्षित धन प्राप्त करेंगे।
१८. तुमलोग बगीचे में लगाये गए वृक्षों की शाखाओं को मत काटो।
१९. पिंजरे से मुक्त हुए पक्षी आकाश में उड़े।
२०. हमलोगों ने ऋद्धि से नदी पार करते हुए ऋषियों को नहीं देखा।

पाठ - २६

१. ई-कारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप –

पक्खी - पंछी

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	पक्खी	पक्खी/पक्खिनो
दुतिया	पक्खिं	पक्खी/पक्खिनो
ततिया	पक्खिना	पक्खीहि/पक्खीभि
चतुत्थी	पक्खिनो/पक्खिस्स	पक्खीनं
पञ्चमी	पक्खिना/पक्खिम्हा/पक्खिस्मा	पक्खीहि/पक्खीभि
छट्ठी	पक्खिनो/पक्खिस्स	पक्खीनं
सत्तमी	पक्खिनि/पक्खिम्हि/पक्खिस्मिं	पक्खीसु
आलपन	पक्खी	पक्खी/पक्खिनो

यह ध्यान देना चाहिए कि पक्खी का विभक्ति रूप 'अग्गि' से पठमा, आलपन और दुतिया कारकों में ही भिन्न है । शेष इससे मिलते हैं केवल सत्तमी विभक्ति एकवचन का रूप 'पक्खिनि' यह अपवाद है क्योंकि 'अग्गि' के रूप में इसके अनुरूप कोई दूसरा रूप नहीं है।

२. ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द -

हत्थी/करी	- हाथी	दाठी	- दाँतवाला हाथी
सामी	- पति/मालिक/स्वामी	दीघजीवी	- दीर्घजीवी
सेट्ठी	- श्रेष्ठी	बली	- बलवान
सुखी	- सुखी	वड्ढकी	- सुतार, बढ़ई
मन्ती	- मंत्री	सारथी	- सारथी
सिखी	- मोर	कुट्ठी	- कोढ़ी
पाणी	- प्राणी	पापकारी	- पापी

अभ्यास - २६

हिन्दी में अनुवाद करें ।

१. पक्खी गायन्तो साखायं निसीदति।

२. गावि रज्जुया मुञ्चमाना अम्मा खेत्ते ठिता होति।

३. कञ्ञायो सभायं नच्चन्तियो गायिंसु।

४. सेट्ठी महन्तं धनं विस्सजेत्वा समणानं विहारं कारापेसि।

५. हत्थिनो च कणेरुयो च अटवियं आहिण्डन्ति।

६. पापकारी पापानि पटिच्छादेत्वा सप्पुरिसो विय सभायं निसिन्नो सेट्ठिना सद्धिं कथेसि।

७. सप्पुरिसा दीघजीविनो होन्तु, पुत्ता सुखिनो भवन्तु।

८. वाणिजो नगरम्हा भण्डानि किणित्वा पिटकेसु पक्खिपित्वा रज्जुया बन्धित्वा आपणं पेसेसि।

९. सारथिना आहटे रथे वड्ढकी निसिन्नो होति।

१०. सब्बे पाणिनो दीघजीविनो न भवन्ति/होन्ति।

११. अम्मा वड्ढकिना गेहं कारापेत्वा दारिकाहि सह तत्थ वसि।

१२. मयं मणयो वत्थेन वेठेत्वा मञ्जूसायं निक्खिपित्वा भरियानं पेसयिम्ह।

१३. मुनि पापकारिं पक्कोसापेत्वा धम्मं देसेत्वा ओवदि।

१४. बलिना भूपतिनो दिन्नं करिं ओलोकेतुं तुम्हे सन्निपतित्थ।

१५. अहं सेट्ठी कुट्ठिं पकोसापेत्वा भोजनं दापेसिं।

१६. सचे गिरिम्हि सिखिनो वसन्ति, ते पस्सितुं अहं गिरिं आरुहितुं उस्सहिस्सामि।

१७. भूपति सप्पुरिसो अभवि/अहोसि, मन्तिनो पापकारिनो अभविंसु/अहेसुं।

१८. बलिना कारापितेसु पासादेसु सेट्ठिनो पुत्ता न वसिंसु।

१९. सब्बे पाणिनो सुखं परियेसमाना जीवन्ति, कम्मानि करोन्ति।

२०. सामी मणयो च सुवण्णं च किणित्वा भरियाय अददि/अदासि।

२१. असनिसद्दं सुत्वा गिरिम्हि सिखिनो नच्चितुं आरभिंसु।

२२. मा बलिनो पापकारी होन्तु/भवन्तु।

२३. सप्पुरिसा कुसलं करोन्ता मनुस्सेहि पुञ्ञ कारेन्ता सुखिनो भवन्ति।

२४. कवि असिना अरिं पहरि; कविं पहरितुं असक्कोन्तो अरि कुद्धो अहोसि।

२५. कपयो रुक्खेसु चरन्ता पुप्फानि च छिन्दिंसु।

पालि में अनुवाद करें ।

१. पापकारी शिकारी द्वारा पीछा किए गए हाथी जंगल में दौड़े।

२. कोढ़ी ने पति द्वारा दिए गए वस्त्रों को लिया।

३. जंगल में रहने वाले चीते गुफाओं में रहने वाले शेरों से नहीं डरते हैं।

४. गीत गाते हुए लड़के भवन में बच्चियों के साथ नाचे।

५. माँ ने बेटियों के साथ वेदी/पुष्पासन पर कमल-फूलों को फैलाया।

६. अगर लड़के शराब पीते हों तो लड़कियाँ गुस्सा होकर नहीं गायेंगी।

७. किसान ने खेत में घास खाती हुईं गायों (गौवों) को मारते हुए/कष्ट देते हुए पापकारी पर क्रोध किया।

८. सेठ ने सुतार से पुत्रों के लिए महल बनवाया।

९. द्वीप पर धर्मपूर्वक शासन करते हुए सत्पुरुष राजा की रक्षा देवताएं करें।

१०. सभी प्राणी दीर्घकाल तक सुखपूर्वक जीएँ!

पाठ - २७

१. उ-कारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

गरु - गुरु

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	गरु	गरू, गरवो
दुतिया	गरुं	गरू, गरवो
ततिया	गरुना	गरूहि/गरूभि
चतुत्थी	गरुनो/गरुस्स	गरूनं
पञ्चमी	गरुना, गरुस्मा, गरुम्हा	गरूहि/गरूभि
छट्ठी	गरुनो/गरुस्स	गरूनं
सत्तमी	गरुम्हि/गरुस्मिं	गरूसु
आलपन	गरु	गरू/गरवो

२. उकारान्त पुल्लिंग शब्द –

भिक्खु - भिक्षु
बन्धु - रिश्तेदार
तरु - वृक्ष
बाहु - हाथ
सिन्धु - समुद्र
फरसु - कुल्हाड़ी
पसु - पशु

आखु - चूहा
उच्छु - गन्ना
वेळु - बाँस
कटच्छु - चम्मच
सत्तु - शत्रु
सेतु - पुल
केतु - पताका
सुसु - शिशु

३. ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप -

विदू - जानने वाला

	एकवचन	**बहुवचन**
पठमा	विदू	विदू, विदुनो
दुतिया	विदुं	विदू, विदुनो
आगपन	विदू	विदू, विदुनो

शेष रूप 'गरु' शब्द के समान होते हैं।

४. ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द -

पभू - प्रभु
विञ्ञू - विज्ञ
अत्थञ्ञू - अर्थज्ञ
सब्बञ्ञू - सर्वज्ञ
वदञ्ञू - उदार
मत्तञ्ञू - मात्रज्ञ

अभ्यास - २७

हिन्दी में अनुवाद करें ।

१. भिक्खवो तथागतस्स सावका होन्ति।
२. बन्धवो अम्मं पस्सितुं नगरम्हा गामं आगमिंसु।
३. चोरो अरञ्ञे तरवो छिन्दितुं फरसुं आदाय गच्छि/अगमि।
४. सीहा च दीपयो च अटवियं वसन्ते पसवो मारेत्वा खादन्ति।
५. सप्पुरिसा विञ्ञुनो भवन्ति।
६. भूपति मन्तीहि सद्धिं सिन्धुं तरित्वा सत्तवो पहरित्वा जिनितुं उस्सहि।
७. अम्मा कटच्छुना दारिकं ओदनं भोजापेसि।
८. हत्थिनो च कणेरुयो च उच्छवो आकड्ढित्वा खादिंसु।
९. भूपतिस्स मन्तिनो सत्तूनं केतवो आहरिंसु।
१०. सेतुम्हि निसिन्नो बन्धु तरुनो साखं हत्थेन आकड्ढि।

११. उय्याने रोपितेसु वेळूसु पक्खिनो निसीदित्वा गायन्ति।
१२. सचे पभुनो अत्थञ्ञू होन्ति मनुस्सा सुखिनो गामे विहरितुं सक्कोन्ति।
१३. सब्बञ्ञू तथागतो धम्मेन मनुस्से अनुसासति।
१४. मत्तञ्ञू सप्पुरिसा दीघजीविनो च सुखिनो च भवेय्युं।
१५. विञ्ञूहि अनुसासिता मयं कुमारा सप्पुरिसा भवितुं उस्सहिम्ह।
१६. मयं रविनो आलोकेन आकासे उड्डेन्ते पक्खिनो पस्सितुं सक्कोम।
१७. तुम्हे पभुनो हुत्वा धम्मेन जीवितुं वायमेय्याथ ।
१८. अहं धम्मं देसेन्तं भिक्खुं जानामि।
१९. अहयो आखवो खादन्ता अटविया वम्मिकेसु वसन्ति।
२०. वनिताय सस्सु भगिनिया उच्छवो च पदुमानि च अददि/उदासि।

पालि में अनुवाद करें

१. शत्रु पुल पार कर द्वीप पर गया।
२. तुम लोग कुल्हाड़ियों से बांस मत काटो, आरियों से काटो।
३. राजा के मंत्रियों ने सेतु और वृक्षों पर पताकाओं को बाँधा।
४. पशुओं ने अपने बच्चों को चूहे खिलाए।
५. विद्वान लोग प्रभु हुए।
६. भिक्षु द्वीप पर शासन करनेवाले राजा का रिश्तेदार था।
७. शत्रु द्वारा काटे गये वृक्ष समुन्दर में गिरे।
८. लड़की को काटने का प्रयत्न करते कुत्ते को माँ ने मुट्ठी से मारा।
९. राजा द्वीप पर रहते हुए श्रमण, ब्राह्मण, मनुष्य और पशुओं की रक्षा करते हैं।
१०. माँ की बहन ने बाँस से चूहे को मारा।
११. आचार्य ने हाथी के बच्चों के लिए गन्ना भेजा।
१२. घर में प्रवेश करने का प्रयत्न करते हुए पति ने बन्दर देखकर दरवाजा बंद किया।

पाठ - २८

१. उ-कारान्त/'अर' कारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप –

कुछ पुल्लिङ्ग शब्द -उ/-अर कारान्त होते हैं। वे 'करनेवाला' या 'संबंध' इस अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

सत्थु/सत्थर - शास्ता

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	सत्था	सत्थारो
दुतिया	सत्थारं	सत्थारो,
ततिया	सत्थारा	सत्थारेहि/सत्थूहि
चतुत्थी	सत्थु/सत्थुनो/सत्थुस्स	सत्थारानं/सत्थूनं
पञ्चमी	सत्थारा	सत्थारेहि/सत्थूहि
छट्ठी	सत्थु/सत्थुनो/सत्थुस्स	सत्थारानं/सत्थूनं
सत्तमी	सत्थरि	सत्थारेसु/सत्थूसु
आलपन	सत्थ/सत्था	सत्थारो

२. इसी तरह के कुछ और शब्द जिनके रूप इसी तरह होते है –

कत्तु	- कर्त्ता	जेतु	- जीतनेवाला
गन्तु	- जाने वाला	विनेतु	- विनय सिखानेवाला
सोतु	- सुननेवाला	विञ्ञातु	- जाननेवाला
दातु	- देने वाला	भत्तु	- पति
नेतु	- नेता	नत्तु	- नाती
वत्तु	- वक्ता		

'भत्तु' और 'नत्तु' संबंधवाचक नाम हैं, अतः इनके रूप 'सत्था' के समान होते हैं, जैसे कि संस्कृत में होते हैं।

३. संबंधवाचक पुल्लिङ्ग शब्द जैसे 'पितु' तथा 'भातु' के रूप थोड़े भिन्न प्रकार के होते हैं।

पितु/पितर - पिता

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	पिता	पितरो
दुतिया	पितरं	पितरो
ततिया	पितरा	पितरेहि/पितूहि
चतुत्थी	पितु/पितुनो/पितुस्स	पितरानं/पितूनं
पञ्चमी	पितरा	पितरेहि/पितूहि
छट्ठी	पितु/पितुनो/पितुस्स	पितरानं/पितूहि
सत्तमी	पितरि	पितरेसु/पितूसु
आलपन	पित/पिता	पितरो

भातु/भातर् - भाई

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	भाता	भातरो
दुतिया	भातरं	भातरो
ततिया	भातरा	भातरेहि/भातूहि
चतुत्थी	भातु/भातुनो/भातुस्स	भातरानं/भातूनं
पञ्चमी	भातरा	भातरेहि/भातूहि
छट्ठी	भातु/भातुनो/भातुस्स	भातरानं/भातूनं
सत्तमी	भातरि	भातरेसु/भातूसु
आलपन	भात, भाता	भातरो

४. संबंधवाचक स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप निम्नलिखित प्रकार से चलते हैं

मातु/मातर - माँ

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	माता	मातरो
दुतिया	मातरं	मातरो
ततिया	मातरा/मातुया	मातरेहि/मातूहि
चतुत्थी	मातु/मातुया/माताय	मातरानं/मातूनं/मातानं
पञ्चमी	मातरा/मातुया	मातरेहि/मातूहि
छट्ठी	मातु/मातुया/माताय	मातरानं/मातूनं/मातानं
सत्तमी	मातरि/मातुया/मत्या,मात्यं	मातरेसु/मातूसु
आलपन	माता/मात/माते	मातरो

धीतु (लड़की) और दुहितु (लड़की) के रूप भी इसी प्रकार होते हैं।

अभ्यास २८

हिन्दी में अनुवाद करें ।

१. सत्था भिक्खूनं धम्मं देसेन्तो रुक्खस्स छायाय निसिन्नो होति।
२. पुञ्ञानि कत्तारो भिक्खूनं च तापसानं च दानं देन्ति।
३. सचे सत्था धम्मं देसेय्य विञ्ञातारो भविस्सन्ति।
४. भूपति दीपस्मिं जेता भवतु।
५. पिता धीतरं आदाय विहारं गन्त्वा सत्थारं वन्दापेसि।
६. विञ्ञातारो लोके मनुस्सानं नेतारो होन्तु/भवन्तु।
७. भाता-पितरा सद्धिं मातुया पचितं यागुं भुञ्जि।
८. भत्ता नत्तारेहि सह कीळन्तं कपिं दिस्वा हसन्तो अट्ठासि।
९. सेतुं कत्तारो वेलवो बन्धित्वा नदिया तीरे ठपेसुं।
१०. सिन्धुं तरित्वा दीपं गन्तारो सत्तूहि हता होन्ति।

११. भरिया भत्तु साटके रजकेन धोवापेसि।
१२. नेतुनो कथं सोतारो उय्याने निसिन्ना सुरियेन पीळिता होन्ति।
१३. दातारेहि दिन्नानि वत्थानि याचकेहि न विक्किणितब्बानि होन्ति।
१४. रोदन्तस्स नत्तुस्स कुज्झित्वा वनिता तं हत्थेन पहरि।
१५. विनेतुनो ओवादं सुत्वा बन्धवो सप्पुरिसा अभविंसु/अहेसुं।
१६. गेहेसु च अटवीसु च वसन्ते आखवो अहयो खादन्ति।
१७. नत्ता मातरं यागुं याचन्तो भूमियं पतित्वा रोदति।
१८. तुम्हे भातरानं च भगिनीनं च मा कुज्झथ।
१९. दीपं गन्तारेहि नावाय सिन्धु तरितब्बो होति।
२०. पुब्बका इसयो मन्तानं कत्तारो च मन्तानं पवत्तारो च अभविंसु/अहेसुं।
२१. मत्तञ्ञू दाता नत्तारानं थोकं थोकं मोदके ददिंसु/अदंसु।
२२. अथञ्ञु नेतारो मनुस्से सप्पुरिसे करोन्ता विनेतारो भवन्ति।
२३. माता धीतरं ओवदन्ती सीसं चुम्बित्वा बाहुं आमसित्वा समस्सासेसि।
२४. वदञ्ञू ब्राह्मणो खुदाय पीलेन्ते याचके दिस्वा पहूतं भोजनं दापेसि।
२५. सारथिना आहटे वेलवो गहेत्वा वड्ढकी सालं मापेसि।

पालि में अनुवाद करें ।

१. पिता और माता भाई के साथ बहन को देखने गए।
२. पापकारी सुखी और दीर्घजीवी नहीं होंगे।
३. राजा परिषद के साथ विजेता हो।
४. मां का भाई मामा होता है।
५. भाइयों के शत्रु ने वृक्षों और बाँसों पर पताकाएं बाँधी ।
६. सुतार/घर बनाने वाले ने नातियों को बाँस दिए।
७. भाई ने चम्मच से बेटी को भात दिया।
८. बुद्ध देवताओं और मनुष्यों के शास्ता होते हैं।
९. तुम लोग सत्य कहने वाले बनो/हो।
१०. अच्छे पति अपनी पत्नियों के प्रति देवता के समान कारुणिक होते हैं।
११. अच्छे पुरुष द्वीप पर शासन करने हेतु बलवान अमात्य बने!
१२. बलवान राजा जेता हुए।

पाठ - २९

१. इ-कारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप –

अट्ठि - हड्डी, बीज

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	अट्ठि	अट्ठी/अट्ठीनि
दुतिया	अट्ठिं	अट्ठी/अट्ठीनि
ततिया	अट्ठिना	अट्ठीहि/अट्ठीभि
चतुत्थी	अट्ठिनो/अट्ठिस्स	अट्ठीनं
पञ्चमी	अट्ठिना	अट्ठीहि/अट्ठीभि
छट्ठी	अट्ठिनो/अट्ठिस्स	अट्ठीनं
सत्तमी	अट्ठिम्हि/स्मिं	अट्ठीसु
आलपन	अट्ठि	अट्ठी/अट्ठीनि

पठमा दुतिया तथा आलपन को छोड़ शेष विभत्ति रूप 'अग्नि' शब्द के समान होते हैं।

२. इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द -

वारि - पानी	दधि - दही
अक्खि - आँख	अच्चि - ज्वाला, लपट
सप्पि - घी	सत्थि - जाँघ

३. उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप -

चक्खु - आँख

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	चक्खु	चक्खू/चक्खूनि
दुतिया	चक्खुं	चक्खू/चक्खूनि
आलपन	चक्खु	चक्खू/चक्खूनि

शेष रूप 'गरु' के समान है।

४. उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द -

धनु	- धनुष	दारु	- लकड़ी
मधु	- मधु	अम्बु	- पानी
अस्सु	- आँसू	वसु	- धन/सम्पत्ति
जण्णु/जाणु	- घुटना	वत्थु	- वस्तु, स्थान, भूमि

५. शब्दसंग्रह – क्रियापद

अनुकम्पति	- अनुकम्पा करता है।
वाचेति	- पढ़ाता है।
सम्मिस्सेति	- मिश्रित करता है।
पब्बजति	- प्रव्रजित होता है, संन्यास के लिए घर त्यागता है।
विप्पकिरति	- विखेरता है, (कृदन्त-विप्पकिण्ण-विखेरा हुआ)
पराजेति	- पराजित करता है, हराता है।
अनुगच्छति	- पीछे चलता है।
पत्थेति	- इच्छा/कामना/प्रार्थना करता है।
समिज्झति	- सफल होता है, पूर्ण करता है।
पवत्तेति	- प्रवर्तित करता है, चालू रखता है।
(अस्सूनि) पवत्तेति	- (आँसू) बहाता है।
विभजति	- बाँटता है, वर्गीकरण करता है।

अभ्यास - २९

हिन्दी में अनुवाद करें ।

१. गेहं पविसन्तं अहिं दिस्वा कञ्ञा भायित्वा अस्सुनि पवत्तेन्ती रोदितुं आरभि।
२. दीपिना हताय गाविया अट्ठीनि भूमियं विप्पकिण्णानि होन्ति।
३. नदिया वारिना वत्थानि धोवन्तो पिता नहापेतुं पुत्तं पक्कोसि।
४. त्वं सप्पिना च मधुना च सम्मिस्सेत्वा ओदनं भुञ्जिस्ससि।
५. मयं खीरम्हा दधिं लभाम।
६. भिक्खु दीपस्स अच्चिं ओलोकेन्तो अनिच्चसञ्ञं वड्ढेन्तो निसीदि।
७. पापकारी लुद्दको धनुं च सरे च आदाय अटविं पविट्ठो।
८. सत्तु अमच्चस्स सत्थिं असिना पहरित्वा अट्ठिं छिन्दि।
९. अहं सप्पिना पचितं ओदनं मधुना भुञ्जितुं न इच्छामि।

१०. नत्ता हत्थेहि च जण्णूहि च गच्छन्तं याचकं दिस्वा अनुकम्पमानो भोजनं च वत्थं च दापेसि।
११. दारूनि संहरन्तियो इत्थियो अटवियं आहिण्डन्ती गायिंसु।
१२. अम्बुम्हि जातानि पदुमानि न अम्बुना उपलित्तानि होन्ति।
१३. मनुस्सा नानाकम्मानि कत्वा वसुं संहरित्वा पुत्तदारे पोसेतुं उस्सहन्ति।
१४. भत्ता मातुया अक्खीसु अस्सूनि दिस्वा भरियाय कुज्झि।
१५. पिता खेत्तवत्थूनि पुत्तानं च नत्तारानं च विभजित्वा विहारं गन्त्वा पब्बजि।
१६. पक्खीहि खादितानं फलानं अट्ठीनि रुक्खमूले पतितानि होन्ति।
१७. आचरियो सिस्सानं सिप्पं वाचेन्तो ते अनुकम्पमानो धम्मेन जीवितुं अनुसासि।
१८. बोधिसत्तो समणो मारं पराजेत्वा बुद्धो भवि/अहोसि।
१९. बुद्धं पस्सित्वा धम्मं सोतुं पत्थेन्ता नरा धम्मं चरितुं वायमन्ति।
२०. सचे सप्पुरिसानं सब्बा पत्थना समिज्झेय्युं मनुस्सा लोके सुखं विन्देय्युं।
२१. व्याधिना पीळिता माता अस्सूनि पवत्तेन्ती धीतुया गेहं आगन्त्वा मञ्चे सयित्वा यागुं याचि।
२२. मातरं अनुकम्पमाना धीता खिप्पं यागुं पटियादेत्वा मातुया मुखं धोवित्वा यागुं पायेसि।
२३. पितरा पुट्ठं पञ्हं भत्ता सम्मा विभजित्वा उपमाय अत्थं व्याकरि/व्याकासि।
२४. लुद्दको अटविया भूमियं धञ्ञं विप्पकिरित्वा मिगे पलोभेत्वा मारेतुं उस्सहि।
२५. धञ्ञं खादन्ता मिगा आगच्छन्तं लुद्दकं दिस्वा वेगेन धाविंसु।

पालि में अनुवाद

१. उसने जंगल में चीते द्वारा मारे गए पशुओं की हड्डियों को देखा।
२. तुम लोग नदी के पानी में नहाओगे।
३. युवती बेटी की आँखों में आँसू हैं।
४. किसान घी और दही व्यापारियों के पास बेचता है।
५. दीपकों की लौ हवा से कांपी/हवा में नाची।
६. शत्रु के पैरों में दाद है।
७. भौंरा/भ्रमर फूलों को बिना कष्ट दिये मधु एकत्रित करता है।
८. जंगल से लकड़ियाँ लाती हुई स्त्री नदी में गिरी।
९. मनुष्य खेतों और बगीचों में पेड़ लगाकर धन जमा करने का प्रयत्न करते हैं।
१०. पति ने शहर से पत्नी के लिए मणि लाया।

पाठ - ३०

-वन्तु/-मन्तु प्रत्ययान्त विशेषणों के रूप

वन्तु/मन्तु प्रत्ययान्त गुणवाचक विशेषणों के रूप तीनों लिङ्गों में होते हैं। ये विशेषण लिङ्ग, वचन तथा विभक्ति में संज्ञा का (विशेष्य का) अनुगमन करते हैं/ समान होते हैं।

पुल्लिङ्ग -

गुणवन्तु - गुणवाला

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	गुणवा, गुणवन्तो	गुणवन्तो, गुणवन्ता
दुतिया	गुणवन्तं	गुणवन्तो, गुणवन्ते
ततिया	गुणवता, गुणवन्तेन	गुणवन्तेहि, गुणवन्तेभि
चतुत्थी	गुणवतो/गुणवन्तस्स	गुणवन्तानं, गुणवतं,
पञ्चमी	गुणवता/गुणवन्तस्मा/गुणवन्तम्हा	गुणवन्तेहि/गुणवन्तेभि
छट्ठी	गुणवतो/गुणवन्तस्स	गुणवन्तानं/गुणवतं
सत्तमी	गुणवति/गुणवन्ते/ गुणवन्तस्मिं/गुणवन्तम्हि	गुणवन्तेसु
आलपन	गुणवा/गुणव/गुणवन्त	गुणवन्तो/गुणवन्ता

(इस रूप की और 'अन्त' प्रत्ययान्त पुल्लिङ्ग वर्तमान कालिक कृदन्त के रूपों की समानता की ओर ध्यान दीजिए)

'मन्तु' प्रत्ययान्त विशेषण के रूप 'चक्खुना' चक्खुमन्तो आदि की तरह होते हैं।

नपुंसकलिङ्ग –

ओजवन्तु - ओजवाला

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	ओजवन्तं	ओजवन्तानि
दुतिया	ओजवन्तं	ओजवन्तानि

शेष रूप वन्तु/मन्तु प्रत्ययान्त पुल्लिङ्ग विशेषण के समान होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग –

गुणवती/गुणवन्ती और चक्खुमती/चक्खुमन्ती ये वन्तु/मन्तु प्रत्ययान्त विशेषणों के स्त्रीलिङ्ग के रूप हैं। इनके रूप ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'कुमारी' शब्द के समान होते हैं।

२. वन्तु/मन्तु प्रत्ययान्त विशेषण

धनवन्तु	- धनवान	चक्खुमन्तु	- आँखवाला
भगवन्तु	- भाग्यवाला, बुद्ध	बलवन्तु	- बलवान्
यसवन्तु	- यशवाला	पञ्ञवन्तु	- प्रज्ञावान
कुलवन्तु	- अच्छे कुलवाला	पुञ्ञवन्तु	- पुण्यवाला, भाग्यवान्
सोतवन्तु	- कानवाला	फलवन्तु	- फलवाला
सीलवन्तु	- शीलवान	हिमवन्तु	- हिमालय
सद्धावन्तु	- श्रद्धावान	वण्णवन्तु	- वर्णवाला
सतिमन्तु	- स्मृतिमान	भानुमन्तु	- प्रकाशमान सूर्य
बन्धुमन्तु	- बन्धुओंवाला	बुद्धिमन्तु	- बुद्धिमान

अभ्यास -३०

हिन्दी में अनुवाद करें ।

१. बलवन्तेहि भूपतीहि अरयो पराजिता होन्ति।

२. मयं चक्खूहि भानुमन्तस्स सुरियस्स रस्मियो ओलोकेतुं न सक्कोम।

३. भिक्खवो भगवता देसितं धम्मं सुत्वा सतिमन्ता भवितुं वायमिंसु।

४. सीलवन्ता उपासका भगवन्तं वन्दित्वा धम्मं सुत्वा सतिमन्ता भवितुं वायमिंसु।

५. पञ्ञवन्तेहि इच्छितं पत्थितं समिज्झिस्सति।

६. कुलवतो भाता भगवता सह मन्तेन्तो भूमियं पत्थरिताय किलञ्जायं निसिन्नो अहोसि।

७. फलवन्तेसु तरूसु निसिन्ना पक्खिनो फलानि खादित्वा अट्ठीनि भूमियं पातेसुं।

८. हिमवति बहू पसवो च पक्खी च उरगा च वसन्ति।

९. सीलवन्ता धम्मं सुत्वा चक्खुमन्ता भवितुं उस्सहिस्सन्ति।

१०. गुणवतो बन्धु सीलवतिं पञ्हं पुच्छि।

११. गुणवती युवती सीलं रक्खन्ती मातरं पोसेसि।

१२. यसवतिया बन्धवो बलवन्तो पभुनो अभविंसु।

१३. धनवन्तस्स सप्पुरिसस्स भरिया पुञ्ञवती अहोसि।

१४. सीलवन्तेसु वसन्ता असप्पुरिसा पि गुणवन्ता भवेय्युं।

१५. सीलवतियो मातरो पुत्ते गुणवन्ते कातुं उस्सहन्ति।

१६. बुद्धिमा पुरिसो पापं करोन्ते पुत्ते अनुसासितुं पञ्ञावन्तं भिक्खुं पक्कोसि।

१७. कुलवतो नत्ता सीलवता भिक्खुना धम्मं सुत्वा पसीदित्वा गेहं पहाय भिक्खूसु पब्बजि।

१८. बलवन्ता पभुनो गुणवन्तो भवन्तु।

१९. धनवन्ता बलवन्ता कदाचि करहचि गुणवन्ता भवन्ति।

२०. हिमवन्तस्मा आगतो पञ्ञवा इसि सीलवतिया मातुया उय्याने अतिथि अहोसि।

२१. दुब्बलं सीलवतिं इत्थिं दिस्वा अनुकम्पमाना धनवती तं पोसेसि।

२२. हिमवति फलवन्ता तरवो न छिन्दितब्बा होन्ति।

२३. धम्मस्स विञ्ञातारो यसवन्ता भवितुं न उस्सहन्ति।

२४. बन्धुमा बलवा होति, धनवा बन्धुमा होति।

२५. सीलवती राजिनी गुणवतीहि इत्थीहि सद्धिं सालायं निसीदित्वा यसवतिया कञ्ञाय कथं सुणि।

२६. गुणवा पुरिसो रुक्खम्हा ओजवन्तानि फलानि ओचिनित्वा विहारे वसन्तानं सीलवन्तानं भिक्खूनं विभजि।

२७. बलवतिया राजिनिया अमच्चा धम्मेन दीपे मनुस्से पालेसुं।

२८. यसवन्तीनं नारीनं धीतरो पि यसवन्तियो भविस्सन्ति।

२९. पञ्ञवन्तिया युवतिया पुट्ठो धनवा पञ्हं व्याकातुं असक्कोन्तो सभायं निसीदि।

३०. भानुमा सुरियो मनुस्सानं आलोकं देति।

पालि में अनुवाद करें -

१. हिमालय में रहते हुए ऋषि कभी-कभी नगर में आते हैं।

२. स्मृतिमान भिक्षुओं ने प्रज्ञावान उपासकों को धर्म का उपदेश दिया।

३. पुण्यवान मनुष्यों के गुणवान मित्र और बन्धु होते हैं।

४. धनवान व्यापारी सामान बेचते हुए गाँव से गाँव जाते हैं।

५. गुणवती तरुणी घनवान आचार्य की पत्नी थी।

६. प्रज्ञावान भिक्षु ने बलवान एवं प्रसिद्ध व्यक्ति द्वारा पूछे गए प्रश्न को स्पष्ट किया।

७. शीलवती युवती के हाथ में मालाएँ हैं।

८. धनवान यशवान होते हैं, प्रज्ञावान शीलवान होते हैं।

९. तुम लोग प्रज्ञावान और शीलवानों से दूर मत रहो।

१०. बलवान राजा द्वारा शासित प्रसिद्ध द्वीप में (पर) भगवान/भाग्यवान विहार करते हैं।

११. अगर शीलवान भिक्षु गाँव में रहें तो मनुष्य गुणवान होंगे।

१२. अच्छे कुलवाले मनुष्य गुणवान और प्रज्ञावान हों।

१३. मनुष्य धनवानों और बलवानों का अनुगमन करेंगे।

१४. यशवान राजा ने बलवान बांधववाले शत्रु को पराजित किया।

१५. चक्षुमान मनुष्य प्रकाशमान सूरज को देखते हैं।

पाठ - ३१

१. पुरुषवाचक सर्वनाम के रूप –

प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम 'अम्ह'

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	अहं = मैं	मयं/अम्हे = हम
दुतिया	मं/ममं - मुझे	अम्हे/अम्हाकं/नो = हमें
ततिया	मया, मे	अम्हेहि/नो/अम्हेभि
चतुत्थी	मम, मय्हं, मे, ममं	अम्हं/अम्हाकं/नो
पञ्चमी	मया	अम्हेहि/अम्हेभि
छट्ठी	मम, मय्हं, मे, ममं	अम्हं/अम्हाकं/नो
सत्तमी	मयि	अम्हेसु

२. मज्झिम पुरुषवाचक सर्वनाम 'तुम्ह'

	एकवचन	बहुवचन
पठमा	त्वं/तुवं = तू	तुम्हे = तुम
दुतिया	तं/त्वं/तुवं	तुम्हे/तुम्हाकं/वो
ततिया	त्वया/तया/ते	तुम्हेहि/वो/तुम्हेभि
चतुत्थी	तव/तुय्हं/ते	तुम्हं/तुम्हाकं/वो
पञ्चमी	त्वया/तया	तुम्हेहि/वो/तुम्हेभि
छट्ठी	तव/तुय्हं/ते	तुम्हं/तुम्हाकं/वो
सत्तमी	त्वयि/तयि	तुम्हेसु

अभ्यास - ३१

हिन्दी में अनुवाद करें ।

१. मम आचरियो मं वाचेन्तो पोत्थकं लिखि।
२. मय्हं भगिनी गिलानं पितरं पोसेसि।
३. दातारो भिक्खूनं दानं देन्ता अम्हे पि भोजापेसुं।
४. तुम्हाकं धीतरो कुहिं गमिस्सन्ति?
५. अम्हाकं धीतरो सत्थारं नमस्सितुं वेळुवनं गमिस्सन्ति।
६. अम्हं कम्मानि करोन्ता दासा पि सप्पुरिसा भवन्ति।
७. अम्हेहि कतानि पुञ्ञानि च पापानि च अम्हे अनुबन्धन्ति।
८. तया कीतानि भण्डानि तव धीता मञ्जूसासु पक्खिपित्वा ठपेसि।
९. कुलवन्ता च चण्डाला च अम्हेसु भिक्खूसु पब्बजन्ति।
१०. अम्हाकं उय्याने फलवन्तेसु तरूसु वण्णवन्ता पक्खिनो चरन्ति।
११. उय्यानं आगन्त्वा तिणानि खादन्ता मिगा अम्हे पस्सित्वा भायित्वा अटविं धाविंसु।
१२. अम्हाकं भत्तारो नावाय उदधिं तरित्वा दीपं पापुणिंसु।
१३. अम्हं भूपतयो बलवन्ता जेतारो भवन्ति।
१४. तुम्हाकं नत्तारो च मम भातरो च सहायका अभविंसु/अहेसुं।
१५. तुम्हेहि आहटेहि चीवरेहि मम माता भिक्खू पूजेसि।
१६. उय्याने निसिन्नो अहं नत्तारेहि किळन्तं तवं अपस्सिं।
१७. धञ्ञं मिनन्तो अहं तया सद्धिं कथेतुं न सक्कोमि।
१८. अहं तव न कुज्झामि त्वं मे कुज्झसि।
१९. मम धनवन्तो बन्धवो विञ्ञू विदुनो भवन्ति।
२०. दीपस्स अच्चिना अहं तव छायं पस्सितुं सक्कोमि।
२१. अम्हाकं भूपतयो जेतारो हुत्वा पासादेसु केतवो उस्सापेसुं।
२२. भातुनो पुत्ता मम गेहे विहरन्ता सिप्पं उग्गण्हिंसु।
२३. तव दुहिता भिक्खुनो ओवादे ठत्वा पतिनो कारुणिका सखी अहोसि।
२४. कुसलं करोन्ता नेतारो सग्गं गन्तारो भविस्सन्ति।
२५. सचे चोरो गेहं पविसति सीसं भिन्दित्वा नासेतब्बो होति।

२६. अम्हाकं सत्तुनो हत्थेसु च पादेसु च दट्ठु अत्थि।
२७. सीलवन्ता बुद्धिमन्तेहि सद्धिं लोके मनुस्सानं हितसुखाय नाना कम्मानि करोन्ति।
२८. सचे सुसूनं विनेता कारुणिको होति, ते सोतवन्ता सुसवो गुणवन्ता भविस्सन्ति।
२९. मयं खीरम्हा दधिं च दधिम्हा सप्पिं च लभाम।
३०. मयं सप्पिं च मधुं च सम्मिस्सेत्वा भोजनं पटियादेत्वा भुञ्जिस्साम।

पालि में अनुवाद करें ।

१. हमारे पुत्र और नाती सुखपूर्वक दीर्घजीवी हों।
२. हमारे या तुम्हारे द्वारा वृक्ष नहीं काटे जाने चाहिए।
३. तुम्हारे राजा ने मंत्रियों के साथ द्वीप जाकर शत्रुओं को पराजित किया।
४. मैंने तेरे द्वारा जमीनपर बिखेरे गए बीजों को एकत्र किया।
५. हमारे यशवान विद्वान आचार्य ने हमें धर्म सिखाया।
६. चोंच से फल ग्रहण करता हुआ पक्षी तेरे द्वारा देखा गया।
७. मेरा नाती वैद्य बनना चाहता है।
८. तुम लोगों ने हिमालय पर्वत पर गुफाओं में रहते हुए ऋषियों को देखा।
९. हमारे बेटे और बेटियाँ धनवान और गुणवान हों।
१०. मेरा नाती तुम्हारा श्रावक होगा।
११. तू धनवान और यशवान बने!
१२. भ्रमर पानी में जन्मे हुए कमल पर बैठा है/बैठा हुआ है।
१३. श्रद्धावान उपासक ने कुलवती युवती को फूल दिया।
१४. यशवती तरुणी के हाथ में वर्णवान मणि है।
१५. प्रकाशमान सूरज संसार को प्रकाशित करता है।

पाठ - ३२

१. सर्वनामों के रूप

सर्वनाम संबंधवाचक, निश्चयवाचक तथा प्रश्नावाचक होते हैं जिनके रूप तीनों लिङ्गों में मिलते हैं। 'आलपन' को छोड़ इनके रूप शेष सभी विभक्तियों में होते हैं। सर्वनाम विशेषण बन जाते हैं जब किसी नाम/संज्ञा के बारे में विशेष जानकारी देते हैं।

२. पुल्लिङ्ग एकवचन

संबंध वाचक सर्वनाम		निश्चय वाचक सर्वनाम	प्रश्न वाचक सर्वनाम
पठमा	यो - जो	सो - वह	को - कौन
दुतिया	यं	तं	कं
ततिया	येन	तेन	केन
चतुत्थी	यस्स	तस्स	कस्स/किस्स
पञ्चमी	यम्हा/यस्मा	तम्हा/तस्मा	कस्मा/किस्मा
छट्ठी	यस्स	तस्स	कस्स/किस्स
सत्तमी	यम्हि/यस्मिं	तम्हि/तस्मिं	कम्हि/कस्मिं/किम्हि/किस्मिं

३. नपुंसकलिङ्ग एकवचन

संबंधवाचक		निश्चयवाचक	प्रश्नवाचक
पठमा	यं	तं	किं - कौन सा
दुतिया	यं	तं	किं

शेष रूप पुल्लिंग के रूपों के समान होते हैं।

४. स्त्रीलिङ्ग एकवचन

संबंध वाचक सर्वनाम		निश्चय वाचक सर्वनाम	प्रश्न वाचक सर्वनाम
पठमा	या - जो	सा - वह	का - कौन
दुतिया	यं	तं	कं
ततिया	याय	ताय	काय
चतुत्थी	यस्सा/याय	तस्सा/ताय	कस्सा/काय
पञ्चमी	याय	ताय	काय
छट्ठी	यस्सा/याय	तस्सा/ताय	कस्सा/काय
सत्तमी	यस्सं/यायं	तस्सं/तायं	कस्सं/कायं

५. पुल्लिङ्ग बहुवचन -

संबंधवाचक		निश्चयवाचक	प्रश्नवाचक
पठमा	ये	ते	के
दुतिया	ये	ते	के
ततिया	येहि	तेहि	केहि
चतुत्थी	येसं/येसानं	तेसं/तेसानं	केसं/केसानं
पञ्चमी	येहि	तेहि	केहि
छट्ठी	येसं/येसानं	तेसं/तेसानं	केसं/केसानं
सत्तमी	येसु	तेसु	केसु

६. नपुंसकलिङ्ग बहुवचन -

संबंधवाचक		निश्चयवाचक	प्रश्नवाचक
पठमा	यानि/ये	तानि/ते	कानि/के
दुतिया	यानि/ये	तानि/ते	कानि/के

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होंगे।

७. स्त्रीलिङ्ग बहुवचन -

संबंध वाचक सर्वनाम		निश्चय वाचक	प्रश्न वाचक
पठमा	या/यायो	ता/तायो	का/कायो
दुतिया	या/यायो	ता/तायो	का/कायो
ततिया	याहि	ताहि	काहि
चतुत्थी	यासं/यासानं	तासं/तासानं	कासं/कासानं
पञ्चमी	याहि	ताहि	काहि
छट्ठी	यासं/यासानं	तासं/तासानं	कासं/कासानं
सत्तमी	यासु	तासु	कासु

८. अव्यय प्रत्यय 'चि'

अनियत निपात 'चि' जिसे सर्वनाम के रूपों के साथ जोड़ते है जिससे 'कोई एक', 'जो कोई भी', इन भावों को प्रगट किया जाता है।

पुल्लिङ्ग - कोचि पुरिसो - कोई पुरुष
- केनचि पुरिसेन - किसी पुरुष से/किसी पुरुष द्वारा

नपुंसकलिङ्ग - किञ्चि फलं - कुछ फल
- केनचि फलेन - कुछ फल से/किसी फल से

स्त्रीलिङ्ग - काचि इत्थि - कोई स्त्री
- कायचि इत्थिया - किसी स्त्री से/में/पर

९. (सार्वनामिक) क्रियाविशेषण

संबंधवाचक	निश्चयवाचक	प्रश्नवाचक
यत्थ - जहाँ	तत्थ - वहाँ	कत्थ - कहाँ
यत्र - जहाँ	तत्र - वहाँ	कुत्र - कहाँ
यतो - जहाँ से	ततो - वहाँ से	कुतो - कहाँ से
यथा - जैसे	तथा - वैसे	कथं - कैसे
यस्मा - क्योंकि	तस्मा - इसलिए	कस्मा - किसलिए
यदा - जब	तदा - तब	कदा - कब
येन - जिस हेतु से	तेन - वहां	
याव - जब तक/जितना	ताव - तब तक	

१०. वाक्यरचना के उदाहरण

१. यो अत्थञ्ञू होति सो कुमारे अनुसासितुं आगच्छतु।
जो अर्थज्ञ हैं वे लड़कों को अनुशासित करने के लिए आयें।

२. यं अहं आकङ्खमानो अहोसिं सो आगतो होति।
जिनकी मैं अपेक्षा कर रहा था वे आ गये।

३. येन मग्गेन सो आगतो तेन गन्तुं अहं इच्छामि।
जिस मार्ग से वह आया है उसी (मार्ग) से मैं जाने की इच्छा करता हूँ।

४. यस्स सा भरिया होति, सो भत्ता पुञ्ञवन्तो होति।
जिसकी वह पत्नी है, वह पति पुण्यवान है।

५. यस्मिं हत्थे दद्दू अत्थि तेन हत्थेन पत्तो न गण्हितब्बो होति।
जिस हाथ में दाद है उस हाथ से पात्र नहीं ग्रहण किया जाना चाहिए।

६. यानि कम्मानि सुखं आवहन्ति तानि पुञ्ञानि होन्ति।
जो कर्म सुख लाते हैं वे पुण्य कर्म होते हैं।

७. या भरिया सीलवती होति सा भत्तुनो पिया होति।
जो पत्नी शीलवती होती है वह पति को प्रिय होती है।

८. याय राजिनिया सा वापी कारापिता तं अहं न अनुस्सरामि।

जिस रानी द्वारा वह पुष्करिणी बनवाई गई उसका स्मरण मैं नहीं कर सका अर्थात मुझे उनका नाम याद नहीं है।

९. यस्सं सभायं सो कथं पवत्तेसि तत्थ बहू मनुस्सा सन्निपतिता अभविंसु/अहेसुं।

जिस सभा में उसने बात चलाई वहां बहुत मनुष्य एकत्रित थे।

१०. यासं इत्थीनं मञ्जूसासु सुवण्णं अत्थि तायो द्वारानि थकेत्वा गेहेहि निक्खमन्ति।

जिन स्त्रियों की पेटियों में स्वर्ण है वे दरवाजे बंद कर घर से निकलती हैं।

११. यासु इत्थीसु कोधो नत्थि तायो विनीता भरियायो च मातरो च भवन्ति।

जिन स्त्रियों में क्रोध नहीं होता वे अनुशासित पत्नियाँ तथा माताएँ बनती हैं।

१२. यत्थ भूपतयो धम्मिका होन्ति तत्थ मनुस्सा सुखं विन्दन्ति।

जहाँ राजा धार्मिक होते हैं वहाँ लोग सुख अनुभव करते हैं।

१३. यतो भानुमा रवि लोकं ओभासेति ततो चक्खुमन्ता रूपानि पस्सन्ति।

जब से/जब तक प्रकाशमान सूरज संसार को प्रकाशित करता है तब से/तब तक चक्षुमान लोग रूपों को देखते हैं।

(चूंकि प्रकाशमान सूरज ..... करता है इसलिए चक्षुमान लोग .... देखते हैं)

१४. यथा भगवा धम्मं देसेति तथा तुम्हेहि पटिपज्जितब्बं।

जिस प्रकार भगवान धर्म का उपदेश करते हैं उस प्रकार तुम लोगों का व्यवहार होना चाहिए।

१५. यस्मा पितरो रुक्खे रोपेसुं तस्मा मयं फलानि भुञ्जाम।

चूंकि पिताओं ने पेड़ लगाए इसलिए हम लोग फल खाते हैं।

१६. यदा अम्हेहि इच्छितं पत्थितं समिज्झति तदा अम्हे मोदाम।

जब हमारे द्वारा इच्छा किया गया (इच्छित) कामना किया गया (प्रार्थित) पूर्ण होता है तब हम खुश होते हैं।

१७. को त्वं असि? के तुम्हे होथ।

तू कौन है? तुम लोग कौन हो?

१८. केन धेनु अटविया आनिता?

किसके द्वारा गाय जंगल में से लायी गयी?

१९. कस्स भूपतिना पासादो कारापितो?

राजा द्वारा किसके लिए महल बनवाया गया?

२०. कस्मा अम्हेहि सच्चं भासितब्बं?
किसलिए हमें सच बोलना चाहिए?
२१. असप्पुरिसेहि पालिते दीपे कुतो मयं धम्मिकं विनेतारं लभिस्साम?
असत्पुरुषों द्वारा शासित द्वीप पर कहाँ से हम धार्मिक मार्गदर्शक प्राप्त करेंगे।
२२. केहि कतं कम्मं दिस्वा तुम्हे कुज्झथ?
किसके द्वारा किए काम को देखकर तुम लोग गुस्सा होते हो?
२३. केसं नत्तारो तुय्हं ओवादे ठस्सन्ति?
किसके नाती तेरे उपदेशों का पालन करेंगे?
२४. केहि रोपितासु लतासु पुप्फानि च फलानि च भवन्ति ?
किसके द्वारा लगायी गयीं बेलाओं पर फूल और फल हैं?
२५. काय इत्थिया पादेसु दद्दु अत्थि?
किस स्त्री के पैरों में दाद है?

अभ्यास - ३२

हिन्दी में अनुवाद करें

१. यस्सा सो पुत्तो होति सा माता पुञ्ञवती होति।
२. यो तं दीपं पालेति सो धम्मिको भूपति होति।
३. केन अज्ज नवो जीवितमग्गो न परियेसितब्बो?
४. सचे तुम्हे असप्पुरिसा लोकं दूसेय्याथ कत्थ पुत्तधीतरेहि सद्धिं तुम्हे वसिस्सथ?
५. यदा भिक्खवो सन्निपतित्वा सालायं किलञ्जासु निसीदिंसु तदा बुद्धो पाविसि।
६. यस्मिं पदेसे बुद्धो विहरति तत्थ गन्तुं अहं इच्छामि।
७. यायं गुहायं सीहा वसन्ति तं पसवो न उपसङ्कमन्ति।
८. यो धनवा होति, सो सीलवा भवितब्बो।
९. सचे तुम्हे मं पञ्हं पुच्छिस्सथ अहं विस्सज्जेतुं उस्सहिस्सामि।
१०. यत्थ सीलवन्ता भिक्खवो वसन्ति तत्थ मनुस्सा सप्पुरिसा होन्ति।
११. कदा त्वं मातरं पस्सितुं भरियाय सद्धिं गच्छसि?
१२. याहि रुक्खा छिन्ना तायो पुच्छितुं कस्सको आगतो होति।
१३. कथं तुम्हे उदधिं तरितुं आकङ्खथ?
१४. कुतो ता इत्थियो मणयो आहरिंसु?
१५. यासु मञ्जूसासु अहं सुवण्णं निक्खिपिं ता चोरा चोरेसुं।

१६. यो अज्ज नगरं गच्छति सो तरूसु केतवो पस्सिस्सति।
१७. यो मया यागुना पूजितो सो भिक्खु तव पुत्तो होति।
१८. कुतो अहं धम्मस्स विञ्ञातारं पञ्ञावन्तं भिक्खुं लभिस्सामि?
१९. यस्मा सो भिक्खूसु पब्बजि तस्मा सा पि पब्बजितुं इच्छति।
२०. यं अहं जानामि तुम्हे पि तं जानाथ।
२१. यासं इत्थीनं धनं सो इच्छति ताहि तं लभितुं सो न सक्कोति।
२२. यतो अम्हाकं भूपति अरयो पराजेसि तस्मा मयं तरूसु केतवो बन्धिम्ह।
२३. कदा अम्हाकं पत्थना समिज्झन्ति।
२४. सब्बे ते सप्पुरिसा तेसं पञ्हे विस्सज्जेतुं वायमन्ता सालाय निसिन्ना होति।
२५. सचे त्वं द्वारं थकेसि अहं पविसितुं न सक्कोमि।
२६. अम्हेहि कतानि कम्मानि छायायो विय अम्हे अनुबन्धन्ति।
२७. सुसवो मातरं रक्खन्ति।
२८. अहं सामिना सद्धिं गेहे विहरन्ती मोदामि।
२९. तुम्हाकं पुत्ता च धीतरो च उदधिं तरित्वा भण्डानि विक्किणन्ता मूलं परियेसितुं इच्छन्ति।
३०. त्वं सुरं पिवसि तस्मा सा तव कुज्झति।

पालि में अनुवाद करें -

१. जो शीलवान होता है वह शत्रु को पराजित करेगा।
२. वह लड़की जो सभा में बोली मेरी रिश्तेदार नहीं है।
३. जब माँ घर आयगी तब लड़की मणियों को देगी।
४. वह कुत्ता जिसको मैंने भात दिया, मेरे भाई का है।
५. किस कारण से/क्यों तुम लोग श्रमणों की वन्दना करने आज घर नहीं आये?
६. जिन चीवरों को तुम लोगों ने भिक्षुओं को अर्पित किए उनको तुम लोगों ने कहाँ से प्राप्त किए?
७. जिस स्वर्ण को मैंने तुमको दिया था उसको तुमने किसको दिया?
८. जो इच्छा हो वह खाओ।
९. जब तक तुम नदी में नहाते हो तब तक मैं शिला पर बैठूँगा।
१०. जहाँ समझदार लोग रहते हैं वहाँ मैं रहने की इच्छा करता हूँ।

क्रियापदों की तालिका

उपसर्ग और क्रियापदों के धातुरूप संस्कृत में दिये गये हैं।

अक्कोसति (अ+कृश्)..... - डाँटता है, गाली देता है।
अत्थि (अस्) - है।
अधिगच्छति (अधि + गम्) - प्राप्त करता है।
अनुकम्पति (अनु + कम्प) - करुणा करता है।
अनुबन्धति (अनु + बध्) - पीछा करता है, पीछे चलता है।
अनुसासति (अनु + शास्) - शासन करता/सलाह/चेतावनी देता है।
आकङ्खति (आ + काङ्क्ष)..... - अपेक्षा करता है।
आकड्ढति (आ + कृश्) - खींचता है।
आगच्छति (आ + गम्) - आता है।
आददाति (आ + दा) - लेता है।
आनेति (आ + नी) - लाता है।
आमन्तेति (आ + मंत्र) - आमंत्रित करता है।
आमसति (आ + मृश्) - स्पर्श करता है।
आरभति (आ + रभ्) - आरंभ करता है।
आरुहति (आ + रुह्) - चढ़ता है।
आरोचेति (आ + रुच्) - सूचना देता है।
आवहति (आ + वह्) - लाता है।
आसिञ्चति (आ + सिच) - सींचता है।
आहरति (आ + हृ) - लाता है।
आहिण्डति (आ + हिण्ड्) - घूमता है।
इच्छति (इष्)..... - इच्छा करना है।
उग्गण्हाति (उद् + गृह्)..... - सीखता है।
उट्ठहति (उद् + स्था) - उठता है।
उड्डेति (उद् + डी) - उड़ता है।
उत्तरति (उद् + तृ) - पानी से बाहर आता है, पार करता है।
उदेति (उद + इ) - उदय होता है।
उपसङ्कमति (उप + सं + क्रम्) - पास आता है।
उपज्जति (उद् + पद्) - जन्मता है, उत्पन्न होता है।

उप्पतति (उद् + पत) - उड़ जाता है, कूदता है।
उस्सहति (उद् + सह्) - प्रयत्न करता है ।
उस्सापेति (उद् + श्र) - ऊपर उठाता है/ऊँचा उठाता है।
ओचिनाति (अव् + चि)..... - चुनता है।
ओतरति (अव + त्र्) - उतरता है।
ओभासेति (अव + भाष) - प्रकाशित करता है/चमकाता है।
ओरुहति (अब + रुह्) - उतरता है।
ओलोकेति (अव + लोक्) - देखता है।
ओवदति (अव + वद्) - उपदेश देता है।
कथेति (कथ्)..... - कहता है।
करोति (कृ) - करता है।
कसति (कृष्) - जोतता है।
किणाति (क्री) - खरीदता है।
कीळति (क्रीड़्) - खेलता है।
खणति (खण्)..... - खोदता है।
खादति (खाद्) - खाता है।
खिपति (क्षिप्) - फेंकता है।
कुज्झति (क्रुध्) - गुस्सा होता है (क्रोध करता है।)
गच्छति (गम्)..... - जाता है।
गण्हाति (गृह) - लेता है।
गायति (गाय्) - गाता है।
चरति (चर्)..... - घूमता है, आचरण करता है।
चवति (च्यु) - मरता है।
चिन्तेति (चित्) - चिंतन करता है।
चुम्बति (चुम्ब्) - चूमता है।
चोरेति (चुर्) - चोरी करता है।
छड्डेति (छड्ड)..... - फेंकता है।
छादेति (छद्) - ढँकता है।
छिन्दति (छिद्) - तोड़ता है, काटता है।
जानाति (ज्ञा)..... - जानता है।
जालेति (ज्वल्) - जलाता है।

जिनाति (जि) - जीतता है।
जीवति (जीव्) - जीता है।
ठपेति (स्था).....- रखता है।
डसति (डस्).....- डँसता है, काटता है।
तरति (तृ).....- पार करता है।
तिट्ठति (स्था) - खड़ा रहता है।
थकेति (स्थग्).....- बंद करता है।
ददाति/देति (दा).....- देता है।
दस्सति (दृश्) - देखता है।
दुहति (दुह्) - दुहता है।
दूसेति (दुष्) - दूषित करता है। बदनाम करता है।
देसेति (दिश्) - उपदेश देता है। सूचित करता है।
धावति (धाव).....- दौड़ता है।
धोवति (धोव) - धोता है।
नच्चति (नृत्).....- नाचता है।
नमस्सति (नमस्) - नमस्कार करता है।
नहायति (स्ना) - नहाता है।
नासेति (नश्) - नष्ट करता है।
निक्खमति (निस् + क्रम्) - निकल जाता है, गृहत्याग करता है।
निक्खिपति (नि + क्षिप्) - एक ओर रखता है।
निमन्तेति (नि + मंत्र) - निमंत्रित करता है।
निलीयति (नि + ली) - छिपता है।
निवारेति (नि + वृ) - निवारण करता है।
निसीदति (नि + सद्) - बैठता है।
नीहरति (नि + हृ) - बाहर ले जाता है।
नेति (नी) - ले जाता है।
पक्कोसति (प्र + क्रुश्).....- बुलाता है।
पक्खिपति (प्र + क्षिप्) - रखता है।
पचति (पच्) - पकाता है।
पजहति (हा) - त्याग करता है।
पटिच्छादेति (प्रति + छद्) - छिपाता है।

पटियादेति (प्रति + यत्) - तैयार करता है।
पतति (पत्) - गिरता है।
पत्थरति (प्र + स्तृ) - फैलाता है/पसारता है।
पत्थेति (प्र + अर्थ्) - इच्छा/कामना करता है।
पप्पोति (देखें पापुणाति) - प्राप्त करता है।
पब्बजति (प्र + व्रज्) - प्रव्रजित होता है, संसार त्याग करता है।
पराजेति (परा + जि) - पराजित करता है।
परियेसति (परी + इष्) - खोजता है।
परिवज्जेति (परि + वृज) - टालता है।
परिवारेति (परि + वृ) - साथ देता है, घेर लेता है।
पलोभति (प्र + लुभ्) - प्रलोभन देता है।
पवत्तेति (प्र + वृत्) - प्रवर्त्तित/चालू करता है।
पविसति (प्र + विश्) - प्रवेश करता है।
पसीदति (प्र + सद्) - प्रसन्न/श्रद्धावान होता है।
पस्सति (पश्) - देखता है।
पहरति (प्र + हृ) - पीटता है, प्रहार करता है।
पहिणति (प्र + हि) - भेजता है।
पाजेति (प्र + अज्) - वाहन चलाता है, हाँकता है।
पातेति (पत्) - गिराता है।
पापुणाति (प्र + आप्) - प्राप्त करता है, पहुँचता है।
पालेति (पाल्) - पालता है, राज करता है।
पियायति (पिय) - प्रिय होता है।
पिवति (पा) - पीता है।
पीळेति (पीड़्) - पीड़ा देता है।
पुच्छति (पृच्छ्) - पूछता है।
पूजेति (पुज्) - पूजा करता है, आदर/सम्मान करता है।
पूरेति (पृ) - भरता है, पूर्ति करता है।
पेसेति (प्र + इष्) - भेजता है।
पोसेति (पुष्) - पोषण करता है।
फुसति (स्पर्श्).....- स्पर्श करता है।
बन्धति (बध्).....- बाँधता है।

भजति (भज्).....- संगति करता है।
भज्जति (भञ्ज्) - तोड़ता है।
भवति (भू) - होता है।
भायति (भी) - डरता है।
भासति (भाष्) - बोलता है।
भिन्दति (भिद्) - तोड़ता है, फाड़ता है।
भुञ्जति (भुज्) - खाता है।
मन्तेति (मंत्र).....- मंत्रणा/वार्तालाप करता है।
मापेति (मा) - निर्माण करता है, रचता है।
मारेति (मृ) - हत्या करता है।
मिनाति (मा) - मापता है।
मुञ्चति (मुच्) - मुक्त करता है।
मोदति (मुद्) - मुदित होता है।
याचति (यच्).....- याचना करता है।
रक्खति (रक्ष्).....- रक्षा करता है, निरीक्षण करता है, शील का पालन करता है।
रोदति (रुद्) - रोता है।
रोपेति (रुप्) - रोपण करता है।
लभति (लभ्).....- प्राप्त करता है।
लिखति (लिख्) - लिखता है।
वड्ढेति (वृध्).....- वृद्धि करता है, बढ़ाता है।
वन्दति (वन्द) - वन्दन करता है।
वपति (वप्) - बोता है।
वसति (वस्) - रहता है।
वाचेति (वच्) - सिखाता है।
वायमति (वि + आ + यम्) - प्रयत्न करता है।
विक्किणाति (वि + क्री) - बेचता है।
विज्झति (व्यध्) - बींधता है, छेदन करता है, मार देता है।
विन्दति (विद्) - अनुभव करता है।
विप्पकिरति (वि + प्र + कृ) - चारों तरफ बिखेरता है।
विभजति (वि + भज्) - बँटवारा/वर्गीकरण करता है।

विवरति (वि + वृ) - उघाड़ता है, स्पष्ट करता है।
विस्सज्जेति (वि + सृज्) - खर्च करता है, उत्तर देता है।
विहरति (वि + हृ) - रहता है।
विहिंसति (वि + हिंस्) - कष्ट पहुँचाता है।
विहेठेति (वि + हीड्) - पीड़ा देता है, दुःख पहुँचाता है।
वेठेति (वेष्ट्) - लपेटता है।
व्याकरोति (वि + आ + कृ) - स्पष्ट करता है।
संहरति (सं +हृ).....- एकत्र करता है।
सक्कोति (शक्) - सकता है, समर्थ होता है।
सन्निपतति (सं + नि + पत्) - एकत्रित होता है।
समस्सासेति (सं + आ + श्वस) - सान्त्वना देता है, आश्वासन देता है ।
समिज्झति (सं + ऋध्) - सफल होता है।
सम्मज्जति (सं + मृज्) - झाड़ू लगाता है।
सम्मिस्सेति (सं + मिश्र्) - मिश्रण करता है।
सयति (शी) - सोता है।
सल्लपति (सं + लप्) - वार्तालाप करता है।
सादियति (+ स्वद्) - आनंद प्राप्त करना
सिब्बति (सीव्) - सीता है।
सुणाति (श्रु) - सुनता है।
हनति (हन्).....- मारता है।
हरति (हृ) - हरण करता है।
हसति (हस्) - हँसता है।
होति (भू) - है, होता है।

पालि शब्दसंग्रह

पु. - पुल्लिङ्ग वि. - विशेषण क्रि. वि. - क्रियाविशेषण स्त्री. - स्त्रीलिङ्ग
नपु. - नपुसकलिङ्ग अ. - अव्यय स. - सर्वनाम

अकुसल (वि.)	- अकुशल
अक्खि (नपु.)	- आँख
अग्गि (पु.)	- आग
अंगुलि(स्त्री.)	- उँगली
अच्चि (नपु.)	- ज्वाला, लौ
अज (पु.)	- बकरी
अज्ज (अ.)	- आज
अटवि (स्त्री.)	- जंगल
अट्ठि (नपु.)	- हड्डी
अतिथि (पु.)	- अतिथि, मेहमान
अत्थञ्ञू (पु.)	- अर्थज्ञ, हितकर बातों का जानकार
अद्धा (अ.)	- निश्चित
अधिपति (पु.)	- राजा, प्रमुख, शासक
अनिच्च (वि.)	- अनित्य
अन्तरा (अ.)	- बीच में
अमच्च (पु.)	- मंत्री
अम्बु (नपु.)	- पानी
अम्मा (स्त्री.)	- माता
अरञ्ञ (नपु.)	- जंगल
अरि (पु.)	- शत्रु
असनि (स्त्री.)	- बिजली
असप्पुरिस (पु.)	- असत्पुरुष
असि (पु.)	- तलवार
अस्स (पु.)	- घोड़ा
अस्सु (नपु.)	- आँसु
अहं (सर्वनाम)	- मैं
अहि (पु.)	- साँप
आकास (पु.)	- आकाश
आखु (पु.)	- चूहा
आचरिय (पु.)	- आचार्य
आपण (नपु.)	- बाजार, दुकान
आलोक (पु.)	- प्रकाश
आवाट (पु.)	- गड्ढा
आसन (नपु.)	- आसन
इत्थि (स्त्री.)	- स्त्री, औरत, महिला
इद्धि (स्त्री.)	- ऋद्धि
इसि (पु.)	- ऋषि
उच्छु (पु.)	- गन्ना
उदक (नपु.)	- पानी
उदधि (पु.)	- समुद्र
उपमा (स्त्री.)	- उपमा
उपलित्त (पु. स्त्री. नपु.)	- लेपन किया हुआ।
उपासक (पु.)	- उपासक/ गृहस्थ शिष्य
उय्यान (नपु.)	- बगीचा

उरग (पु.) - साँप, रेंगने वाला (पेट के बल)
ओदन (पु.) - भात
ओजवन्तु (वि.) - ओजवाला
ओवरक (पु.) - शयनकक्ष
ओवाद (नपु.) - उपदेश
ककच (पु.) - आरा
कञ्ञा (स्त्री.) - लड़की
कटच्छु (पु) - चमचा
कणेरु (स्त्री.) - हथिनी
कत्तु (पु.) - करने वाला, कर्ता
कत्थ (अव्यय वि.) - कहाँ
कथा (स्त्री.) - बात/भाषण
कथं (अव्यय) - कैसे
कदली (स्त्री.) - केला
कदा (अव्यय) - कब
कदाचि/करहचि (कि. वि.) - कभी-कभी
कपि (पु.) - बन्दर, वानर
कम्म (नपु.) - कर्म, कार्य
करी (पु.) - हाथी
कवि (पु.) - कवि
कस्मा (क्रि. वि.) - किसलिए, क्यों
काक (पु.) - कौआ
काय (पु.) - शरीर
कारुणिक (वि.) - कारुणिक, दयालु
कासु (स्त्री.) - गड्ढा
किलञ्जा (स्त्री.) - चटाई
कुक्कुर (पु.) - कुत्ता
कुच्छि (पु. स्त्री) - पेट
कुट्ठी (पु.) - कोढ़ी
कुतो (क्रि. वि.) - कहाँ से
कुत्र (कि. वि.) - कहाँ
कुमार (पु.) - लड़का
कुमारी (स्त्री.) - लड़की
कुलवन्तु (वि.) - अच्छे कुलवाला
कुशल (वि.) - कुशल
कुसुम (नपु.) - फूल
कुहिं (क्रि. वि) - कहाँ
केतु (पु.) - पताका, झण्डा
खग्ग (पु.) - तलवार
खण्ड (नपु.) - टुकड़ा
खादनीय (क्रि. वि.) - अन्न/खाद्य पदार्थ
खिप्पं (क्रि. वि.) - शीघ्र
खीर (नपु.) - दूध
खुदा (स्त्री.) - भूख
खेत्त (नपु.) - खेत
गङ्गा (स्त्री.) - गङ्गा, नदी
गन्तु (पु.) - जानेवाला
गरु (पु.) - आचार्य, गुरु
गहपति (पु.) - गृहपति
गाम (पु.) - गाँव
गावि (स्त्री.) - गाय
गिरि (पु.) - पहाड़, पर्वत
गिलान (पु.) - बीमार आदमी
गीत (नपु.) - गीत

गीवा (स्त्री.) - गला
गुणवन्तु (वि.) - गुणवान
गुहा (स्त्री.) - गुफा
गेह (नपु.) - घर
गोण (पु.) - बैल
घट (नपु.) - गागर
घर (नपु.) - घर
च (अ.) - और
चक्खु (नपु.) - आँख
चंडाल (पु.) - चंडाल/चांडाल/अस्पृश्य
चन्द (पु.) - चाँद, चन्द्रमा
चित्त (नपु.) - मन
चीवर (नपु.) - चीवर
चोर (पु.) - चोर
छाया (स्त्री.) - छाँव
जाणु/जण्णु (नपु.) - घुटना
जल (नपु.) - पानी
जात (पु. स्त्री. नपु.) - पैदा हुआ
जिव्हा (स्त्री.) - जीभ
जेतु (पु.) - जेता, विजयी
तण्डुल (नपु.) - चावल
ततो (क्रि.वि.) - वहाँ से, इसलिए
तत्थ (क्रि. वि.) - वहाँ
तत्र (क्रि.वि.) - वहाँ
तथा (क्रि. वि.) - वैसे, इस प्रकार
तथागत (पु.) - बुद्ध
तदा (क्रि. वि.) - तब
तरु (पु.) - वृक्ष
तरुणी (स्त्री.) - युवती
तस्मा (क्रि. वि.) - इसलिए
तापस (पु.) - ऋषि
ताव (क्रि. वि.) - तब तक
तिण (नपु.) - घास
तीर (नपु.) - तट
तुण्ड (नपु.) - चोंच
तेल (नपु.) - तेल
त्वं (अ.) - तू
दक्ख (वि.) - दक्ष, होशियार
दद्दु (स्त्री. नपु.) - खुजली
दधि (नपु.) - दही
दाठी(पु.) - लंबे दांतवाला जानवर, हाथी, जंगली सूअर
दातु (पु.) - देने वाला
दान (नपु.) - दान
दारक (पु.) - लड़का, बच्चा
दारु (नपु.) - जलावन, लकड़ी
दास (पु.) - दास, सेवक
दीघजीवी (पु.) - दीर्घजीवी
दीप (पु.) - द्वीप, दीपक
दीपी (पु.) - चीता
दुक्खं (नपु.) - दुःख
दुब्बल (वि.) - दुर्बल, कमजोर
दुस्स (नपु.) - कपड़ा
दुहितु (स्त्री.) - बेटी, दुहिता

दूत (पु.) - दूत, संदेशवाहक
देव (पु.) - देवता, राजा, बादल, आकाश
देवता (स्त्री.) - देवता
देवी (स्त्री.) - रानी
दोणि (स्त्री.) - नौका
द्वार (नपु.) - द्वार, दरवाजा
धञ्ञ (नपु.) - धान्य
धन (नपु.) - धन, दौलत
धनु (नपु.) - धनुष
धम्म (पु.) - सिद्धान्त, स्वभाव, धर्म
धातु (स्त्री.) - पवित्र अस्थि, शब्द का मूल-स्वरूप
धीतु (स्त्री.) - बेटी
धीवर (पु.) - मछुआ, मछलीमार
धेनु (स्त्री.) - गौ, गाय
न (अ.) - नहीं
नगर (नपु.) - नगर, छोटा शहर
नदी (स्त्री.) - नदी
नयन (नपु.) - आँख
नर (पु.) - आदमी
नरक (नपु.) - नरक
नव (वि.) - नया, नवीन
नाना (अ.) - अनेक, भिन्न-भिन्न
नारी (स्त्री.) - स्त्री, औरत
नालि (स्त्री.) - माप-विशेष
नावा (स्त्री.) - जहाज
नाविक (पु.) - मल्लाह, माँझी
निधि (पु.) - छिपा खजाना
निवास (पु.) - घर, रहने की जगह
नेतु (पु.) - नेता
पक्खी (पु.) - पक्षी
पञ्जर (पु. नपु.) - पिंजरा
पञ्ञा (स्त्री.) - प्रज्ञा, अन्तर्दृष्टि
पञ्ह (पु.) - प्रश्न, जिज्ञासा
पण्डित (पु.) - विद्वान, पंडित
पण्ण (नपु.) - पत्ता, पत्र, चिट्ठी
पति (पु.) - पति, स्वामी
पत्त (पु.) - पात्र, भिक्षा पात्र
पत्थना (स्त्री.) - प्रार्थना, कामना
पदुम (नपु.) - कमल
पब्बत (पु.) - पर्वत
पभात (नपु.) - प्रभात, सवेरा
पभू (पु.) - स्वामी, प्रभु
पसु (पु.) - पशु, चौपाया
परिसा (स्त्री.) - परिषद

पवत्तु (पु.) - पठन करने वाला
पहूत (वि.) - बहुत, अधिक, पर्याप्त
पाणि (पु.) - हाथ, हथेली
पाणी (पु.) - प्राणी
पाद (पु. नपु.) - पाँव, टाँग
पानीय (नपु.) - पीने का पानी
पाप (नपु.) - अकुशल कर्म
पासाण (पु.) - पत्थर, पाषाण
पासाद (पु.) - प्रासाद, महल
पि (अ.) - अपि, भी
पिटक (नपु.) - पिटारी
पितु (पु.) - पिता
पिपासा (स्त्री.) - प्यास
पिपासित (पु. स्त्री. नपु.) - प्यासा
पुञ्ञ (नपु.) - पुण्य
पुत्त (पु.) - पुत्र, बेटा
पुत्त-दार (पु.) - पुत्र तथा पत्नी
पुन (अ.) - फिर
पुप्फ (नपु.) - पुष्प
पुप्फासन (नपु.) - फूलों की वेदी/वेदिका
पुब्बक (पु.स्त्री,नपु.) - प्राचीन, पहले का
पुरिस (पु.) - पुरुष, आदमी
पोक्खरणी (स्त्री.) - तालाब, पुष्करणी
पोत्थक (नपु.) - पुस्तक
फरसु (पु.) - कुल्हाड़ी
फल (नपु.) - फल
बन्धु (पु.) - सगा-सम्बन्धी
बलवन्तु (पु. स्त्री.नपु.) - बलवान, शक्तिशाली
बली (पु.) - बलवान
बहु (वि.) - बहुत, अनेक
बीज (नपु.) - बीज
बुद्ध (पु.) - बुद्ध, सम्पूर्ण ज्ञानी
बुद्धि (स्त्री.) - बुद्धि
ब्राह्मण (पु.) - ब्राह्मण
ब्राह्मणी (स्त्री.) - ब्राह्मण स्त्री
भगिनी (स्त्री.) - बहन
भगवा (पु.) - भगवान बुद्ध
भण्ड (नपु.) - सामान
भत्त (पु. नपु.) - भात
भत्तु (पु.) - पति
भरिया (स्त्री.) - पत्नी, भार्या
भातु (पु.) - भाई
भानुमा (पु.) - सूरज
भिक्खु (पु.) - भिक्षु
भूपति (पु.) - राजा
भूपाल (पु.) - राजा
भूमि (स्त्री.) - पृथ्वी, जमीन
भोजन (नपु.) - खाद्य सामग्री
भोजनीय (नपु.) - नरम खाद्य सामग्री
मक्कट (पु.) - बंदर

मग्ग (पु.)	- पथ, रास्ता
मच्छ (पु.)	- मछली
मञ्च (पु.)	- चारपाई
मञ्जूसा (स्त्री.)	- पेटी
मणि (पु.)	- मणि, जवाहिर
मत्तञ्ञू (पु.)	- मात्रज्ञ, मात्रा का जानकार
मधु (नपु.)	- मधु, शहद
मधुकर (पु.)	- भौंरा, मधुमक्खी
मनुस्स (पु.)	- मनुष्य
मन्त (नपु.)	- मन्त्र
मन्ती (पु.)	- मन्त्री
मा (अ.)	- मत, निषेधार्थक
मातु (स्त्री.)	- माता
मातुल (पु.)	- मामा
मार (पु.)	- कामदेव, अकुशल वृत्तियों की साकार मूर्ति
माला (स्त्री.)	- (फूलों की) माला
मिग (पु.)	- चौपाया, हिरण
मित्त (पु. नपु.)	- मित्र
मुख (नपु.)	- मुँह, चेहरा
मुट्ठि (पु.)	- मुट्ठी
मुनि (पु.)	- मुनि, मनन करने वाला साधु
मूल (नपु.)	- जड़, धन, उत्पत्ति, कारण
मोदक (नपु.)	- लड्डू
यट्ठि (स्त्री.)	- लाठी
यतो (क्रि.वि.)	- जहाँ से, जब से
यत्थ (क्रि.वि.)	- जहाँ कहीं
यत्र (क्रि.वि.)	- जहाँ
यथा (क्रि.वि.)	- जैसे
यदा (क्रि.वि.)	- जब
यदि (अ.)	- अगर
यसवन्तु (पु. स्त्री.नपु.)	- प्रसिद्ध, यशवाला
यस्मा (क्रि.वि.)	- जिस कारण से, चूंकि
यागु (स्त्री.)	- यवागु
याचक (पु.)	- भिखारी
याव (क्रि.वि.)	- जब तक
युवती (स्त्री.)	- तरुणी
रजक (पु.)	- धोबी
रज्जु (स्त्री.)	- रस्सी
रत्ति (स्त्री.)	- रात
रथ (पु.)	- रथ, वाहन
रवि (पु.)	- सूरज
रस (नपु.)	- स्वाद, रस
रस्मि (स्त्री.)	- किरण
राजिनी (स्त्री.)	- रानी
रासि (पु.)	- ढेर
रुक्ख (पु.)	- वृक्ष
रुक्खमूल (नपु.)	- वृक्ष की जड़, वृक्ष के नीचे

रूप (नपु.) - रूप, आकार, भौतिक पदार्थ
लता (स्त्री.) - बेल
लाभ (पु.) - लाभ, फायदा
लुद्दक (पु.) - शिकारी
लोक (पु.) - संसार
लोचन (नपु.) - आँख
वड्ढकी (पु.) - सुतार/बढ़ई
वण्णवन्तु (पु. स्त्री. नपु.) - वर्णवाला
वत्तु (पु.) - वक्ता
वत्थ (नपु.) - वस्त्र
वत्थु (नपु.) - वस्तु, संपत्ति, स्थान, भूमि
वदञ्ञू (पु.) - उदार
वधू (स्त्री.) - वधू, बहू, पत्नी
वन (नपु.) - जंगल
वम्मिक (पु. नपु) - दीमक की बाँबी
वराह (पु.) - सूअर
वसु (नपु.) - धन, संपत्ति
वा (अ.) - या
वाणिज (पु.) - व्यापारी
वात (पु.) - वायु, हवा
वानर (पु.) - बन्दर
वापी (स्त्री.) - तालाब, पुष्करणी
वारि (नपु.) - जल
वालुका (स्त्री.) - वालू
विज्जु (स्त्री.) - बिजली
विञ्ञातु (पु.) - जानने वाला
विञ्ञू (पु.) - विद्वान
विदू (पु.) - बुद्धिमान्
विनेतु (पु.) - विनय सिखानेवाल, शिक्षक
विय (अ.) - जैसा, समान
विहार (पु.) - विहार
बीसति (स्त्री.) - बीस
वीहि (पु.) - धान
वेग (नपु.) - वेग, गति
वेतन (नपु.) - रोजगार, वेतन
वेळु (पु.) - बाँस
व्याधि (पु.) - रोग, बीमारी
सकट (पु.) - गाड़ी
सकल (वि.) - सभी, सब
सकुण (पु.) - पंछी
सखी (पु. स्त्री) - सहेली, मित्र, सखा
सग्ग (नपु.) - स्वर्ग
सचे (अ.) - अगर
सच्च (नपु.) - सत्य
सत्तु (पु.) - शत्रु
सत्थि (नपु.) - जाँघ
सत्थु (पु.) - शास्ता
सद्द (पु.) - शब्द, आवाज
सद्धा (स्त्री.) - श्रद्धा
सद्धिं (अ.) - साथ
सप्प (पु.) - साँप
सप्पि (नपु.) - घी

सप्पुरिस (पु.) - सत्पुरुष
सब्ब (पु. स्त्री. नपु.)- सब
सब्बञ्ञू (पु.) - सर्वज्ञ
सभा (स्त्री.) - सभा
समण (पु.) - श्रमण, भिक्षु
समुद्द (पु.) - समुद्र
सम्मज्जनी (स्त्री.) - झाड़ू
सम्मा (अ.) - सही, सम्यक्
सर (पु.) - बाण
सस्सु (स्त्री.) - सास
सह (अ.) - साथ
सहाय (क) (पु.) - मित्र
साखा (स्त्री.) - शाखा, डाली
साटक (पु.) - वस्त्र
सामी (पु.) - पति, मालिक, स्वामी
सारथी (पु.) - सारथी
साला (स्त्री.) - सभागृह, भवन
सावक (पु.) - शिष्य, श्रावक
सिखी (पु.) - मोर
सिगाल (पु.) - गीदड़
सिन्धु (पु.) - समुद्र
सिप्प (नपु.) - कला, हुनर, धंधा
सिस्स (पु.) - शिष्य
सीघं (क्रि.वि.) - शीघ्र
सील (नपु.) - शील
सीस (नपु.) - सिर, शीर्ष
सीह (पु.) - शेर
सुक (पु.) - तोता
सुखं (क्रि.वि.) - सुख से, आसानी से, आराम से
सुखी (पु.) - सुखी
सुगत (पु.) - सुगत, बुद्ध
सुनख (पु.) - कुत्ता
सुर (पु.) - देवता
सुरा (पु.) - शराब
सुरिय (पु.) - सूरज
सुव (पु.) - तोता
सुवण्ण (नपु.) - सुवर्ण, स्वर्ण
सुसु (पु.) - शिशु
सूकर (पु.) - सूअर
सेट्ठी (पु.) - श्रेष्ठी
सेतु (नपु.) - पुल
सोण (पु.) - कुत्ता
सोत (नपु.) - कान
सोतु (पु.) - सुनने वाला
सोपान (पु.) - सीढी
हत्थ (पु.) - हाथ
हत्थी (पु.) - हाथी
हिमवन्तु (पु. स्त्री. नपु.) - हिमालय
हिरञ्ञ (नपु.) - सोना/स्वर्ण

शब्दावली (हिन्दी - पालि)

साथ-साथ चलना/संगति करना	- भजति/परिवारेति
कर्म/कार्य	- कम्म
सम्बोधित करना	- आमन्तेति
फटकारना, समझाना	- अनुसासति/ ओवदति
परामर्श, सलाह	- ओवाद
परामर्श देना	- ओवदति
पुनः, फिर	- पुन
सब	- सब्ब
भिक्षा, दान	- दान
प्राचीन, पुरातन	- पुब्बक
और	- च
क्रुद्ध होना, क्रोध करना	- कुज्झति
पशु, जानवर	- पसु
बांबी, बल्मीक	- वम्मिक
पास आना, पहुंचना	- उपसङ्कमति
तीर, शर	- सर
शिल्प (कला और विज्ञान)	- सिप्प
एकत्र होना	- सन्निपतति
सभा	- सभा
प्राप्त करना	- पापुणाति/पप्पोति
(से) बचना, दूर रहना, टालना	- परिवज्जेति
कुल्हाड़ी, परशु	- फरसु
केला, कदली	- कदली
बांस	- वेळु
किनारा, तीर	- तीर
श्रेष्ठी	- सेट्ठी
स्नान करना	- नहायति
पिटारी	- पिटक
चोंच, तुण्ड	- तुण्ड
क्योंकि	- यतो/यस्मा
होना	- भवति/होति
खटिया, चारपाई, मंच	- मञ्च
मधुमक्खी	- भमर/मधुकर
मांगना, भिक्षा मांगना	- याचति
भिखारी, याचक	- याचक
पेट	- कुच्छि
हितैषी, शुभचिन्तक	- अत्थञ्जू
बीच में	- अंतरा
बांधना	- बन्धति
पक्षी, चिड़िया	- सकुण/पक्खी

काटना, डंसना	- डसति
द्रोणि, नाव	- दोणि
काया, शरीर	- काय
पुस्तक, किताब	- पोत्थक
जन्म लेना, पैदा करना	- उप्पज्जति
धनुष	- धनु
पात्र	- पत्त
बक्शा, मंजूषा	- मञ्जूषा
लड़का, कुमार	- कुमार
ब्राह्मण	- ब्राह्मण
शाखा	- साखा
तोड़ना	- भिन्दति/भञ्जति
सेतु, पुल	- सेतु
लाना	- आहरति/आनेति/ आवहति
झाड़ू	- सम्मज्जनी
भाई, भ्राता	- भातु
बुद्ध	- तथागत/सुगत/ भगवा
खरीदना	- किणाति
पिंजरा	- पञ्जर
पुकारना	- पक्कोसति
सकना, समर्थ होना	- सक्कोति
बढ़ई	- वड्ढकी
ले जाना, ढोना	- हरति
गाड़ी, शकट	- सकट
जाति, कुल	- कुल
गुफा	- गुहा
सारथि	- सारथी
पीछा करना	- अनुबन्धति
प्रधान, अधिपति	- अधिपति
बच्चा	- दारक
नगर, शहर	- नगर
चतुर, दक्ष	- दक्ख
चढ़ना	- आरुहति
बंद करना	- थकेति
कपड़ा, वस्त्र	- वत्थ/दुस्स/साटक
जमा करना, चुनना	- ओचिनाति/संहरति
रंगीन, रग-बिरंगा	- वण्णवन्तु
आना	- आगच्छति
कारुणिक, दयालु	- कारुणिक
छिपाना	- छादेति/पटिच्छादेति
सान्त्वना देना, दिलासा देना	- समस्सासेति
बातचीत करना	- सल्लपति
पकाना	- पचति
अनाज, धान	- धञ्ञ
गौ, गाय	- गावी/धेनु

हथिनी - कणेरु
सृष्टि करना, निर्माण करना - मापेति
लता - लता
पार करना, पार उतरना - तरति/उत्तरति
कौआ, काक - काक
दही - दधि
काटना - छिन्दति
नाचना - नच्चति
बेटी - दारिका/धीतु/दुहितु
प्यारा होना - पियायति
मृग, हिरण - मिग
पराजित करना, हराना - पराजेति
देवता - देव/देवता/सुर
प्रसन्न होना, आनंदित होना - मोदति
दोष, अवगुण - अकुसल/पाप
प्रस्थान करना, चले जाना - निक्खमति
नीचे उतरना - ओतरति/ओरुहति
नाश करना, बर्बाद करना - नासेति
विकसित करना, बढ़ाना - वड्ढेति
खोदना - खणति
शिष्य - सावक

अनुशासक - विनेतु
विचार विमर्श करना - मन्तेति
भेजना - पेसेति/पहिणाति
बांटना - विभजति
करना - करोति
मत करें - मा
धर्म, शिक्षा - धम्म
कर्त्ता - कत्तु
कुत्ता - कुक्कुर/सुनख/सोण
द्वार - द्वार
पीना - पिवति/पिबति
पेय जल - पानीय
हांकना, प्रेरित करना - पाजेति
रहना, वसना - विहरति/वसति
श्रोत, कान - सोत
खाना - खादति/भुञ्जति
दाद - दद्दु
हाथी - हत्थी/करी
धातु - धातु
प्रतिष्ठित व्यक्ति - पभु
शत्रु - सत्तु, अरि
भोग करना, उपभोग करना, रस लेना - भुञ्जति
प्रवेश करना - पविसति
पूरा, सकल - सकल
जायदाद - वत्थु

पाप	- पाप
मार	- मार
प्रत्याशा करना	- आकङ्खति/पत्थेति
समझाना, व्याख्या करना	- व्याकरोति
छान-बीन करना, खोज करना	- परियेसति
आंख	- अक्खि/चक्खु/ लोचन/नयन
मुख	- मुख
श्रद्धा, विश्वास	- सद्धा
गिरना	- पतति
प्रसिद्ध	- यसवन्तु
तेज	- सीघं
पिता	- पितु
डरना	- भायति
अनुभव करना	- विन्दति
अनुकंपा करना	- अनुकम्पति
गिराना	- पातेति
क्षेत्र	- खेत्त
भरना	- पूरेति
अंगुलि	- अंगुलि
आग	- अग्गि
जलावन	- दारु
मछली	- मच्छ
मछुआ	- धीवर
मुट्ठी	- मुट्ठि
झंडा	- केतु
लौ, अग्निशिखा, ज्वाला	- अच्चि
फूल	- कुसुम, पुप्फ
फल की वेदी, पुष्पासन	- पुप्फासन
उड़ना	- उड्डेति/उप्पतति
पीछे-पीछे जाना	- अनुगच्छति/ अनुबन्धति
भोजन	- भोजन/ खादनीय/भोजनीय
पाद	- पाद
वृक्ष मूल	- रुक्खमूल
जंगल, वन	- अरञ्ञ/वन/अटवि
रूप	- रूप
मित्र, दोस्त	- मित्त/सहायक
सखी	- सखी
फल	- फल
पूरा करना, पूरा होना	- समिज्झति
लाभ	- लाभ
माला	- माला
पोशाक	- साटक/वत्थ
मणि	- मणि
उदार व्यक्ति	- वदञ्ञू
पाना	- लभति
घी	- सप्पि

लड़की - दारिका/कञ्ञा/कुमारी/युवति
देना - ददाति/देति
दाता - दातु
जाना - गच्छति
बकरी - अजा
जाने वाला - गन्तु
सोना, स्वर्ण - सुवण्ण/हिरञ्ञ
सत्पुरुष - सप्पुरिस
माल - भण्ड
तृण, घास - तिण
जमीन - भूमि
खिचड़ी, यागु - यागु
अतिथि, पहुना - अतिथि
हॉल, भवन - साला
हाथ - हत्थ
सुखी व्यक्ति - सुखि
सुख से - सुखं
तंग करना, तकलीफ देना - पीळेति
हानि पहुंचाना, नुकशान करना - हिंसति
माथा, सर - सीस
राशि, ढेर - रासि
स्वर्ग - सग्ग
तपस्वी - तापस
छिपाना - छादेति/पटिच्छादेति

हिमालय - हिमवन्तु
प्रहार करना, मारना - पहरति
कुदाल - कुद्दाल
फहराना - उस्सापेति
मधु - मधु
पूजा करना, वंदना करना - पूजेति/वन्दति
आशा करना - पत्थेति/आकङ्खति
घोड़ा, अश्व - अस्स
घर, आवास - निवास/गेह/घर
गृहपति - गहपति
कैसे - कथं
कितनी दूर तक - याव...ताव
क्षुधा, भूख - खुदा
शिकारी - लुद्दक
पति - पति/भत्तु/सामी
मैं - अहं
अगर, यदि - सचे/यदि
प्रकाशित करना - ओभासेति
अनित्य - अनिच्च
सचमुच में - अद्धा
सूचना देना - आरोचेति
बुद्धि, प्रज्ञा - पञ्ञा
प्रज्ञावान व्यक्ति (बुद्धिमान) - पञ्ञवन्तु/विञ्ञातु
निमंत्रण देना - निमन्तेति
है - अत्थि/भवति/होति

गीदड़, शृगाल	- सिगाल
रखना	- ठपेति
मारना	- हनति/मारेति
राजा	- भूपाल/भूपति
चूमना	- चुम्बति
घुटना	- जाणु/जण्णु
जानना	- जानाति
विज्ञपुरुष	- विदू/विञ्ञू
चिराग, दीप	- दीप
हंसना	- हसति
उपासक	- उपासक
ले जाना, पथ प्रदर्शित करना	- नेति/नयति
नेता	- नेतु
पत्ता	- पण्ण
सीखना	- उग्गण्हाति
(बाहर) निकलना	- निक्खमति
चीता	- दीपि
कोढ़ी	- कुट्ठी
प्रकाश, आलोक	- (सं) आलोक/ (क्रिया) जलेति
बिजली	- असनि
(के) समान	- विय
शेर	- सिह
दारु, सुरा	- सुरा
सुनना	- सुणाति
सुनने वाला	- सोतु
जीना	- जीवति
प्राणी	- पाणी
दीर्घायु	- दीघजीवी
देखना	- ओलोकेति
कमल	- पदुम
सुस्वादु, ज्यादा मीठा	- ओजवन्तु
मंत्र	- मन्त
नर, मनुष्य	- नर/पुरिस/मनुस्स
प्रासाद	- पासाद
बहुत	- बहु
चटाई	- किलञ्जा
नाप	- (सं)नाळि/ (क्रिया)मिनाति
व्यापारी	- वाणिज
पुण्य	- कुसल/पुञ्ञ
दूत	- दूत
दूध	- (सं)खीर/ (क्रिया)दुहति
चित्त, मन	- चित्त
मंत्री	- मन्ती
मिलाना	- सम्मिस्सेति
मात्रा में संतुलित, मध्यम	- मत्तञ्ञू
विहार	- विहार
श्रमण, भिक्षु	- समण/भिक्खु
वानर, मर्कट,	- वानर/मक्कट/कपि बन्दर
चन्द्रमा	- चन्दा
प्रभात, सुबह	- पभात
मां, माता	- अम्मा/मातु

सास - सस्सु
पहाड़, पर्वत - पब्बत/गिरि
मुंह - मुख
अधिक - पहूत
गर्दन - गीवा
घोंसला/नीड़/खोता - कुलावक
नया - नव
रात - रत्ति
नहीं - न
पोषण करना - पोसेति
वस्तु, पदार्थ - रूप
महासमुद्र - समुद्द/उदधि
तेल - तेल
सर्वज्ञ - सब्बञ्ञू
खोलना - विवरति
तंग करना, पीड़ा देना - पीळेति
या - वा
चाण्डाल - चण्डाल
बैल - गोण
धान - वीहि
तलहत्थी - पाणि
उद्यान - उय्याान
तोता, सुग्गा - सुक/सुव
मोर - सिखी
टुकड़ा - खण्ड
सूअर - वराह/सूकर
गड्ढा - आवाट/कासु
रोपना - रोपेति

खेलना - कीळति
प्रसन्न होना - पसीदति
जोतना - कसति
कवि - कवि
दूषित करना - दूसेति
पोखर, तालाब - पोक्खरणी
बर्त्तन - घट
शक्तिशाली - बली, बलवन्तु
उपदेश देना - देसेति
तैयार करना - पटियादेति
रोकना - निवारेति
रक्षा करना - रक्खति
ऋद्धिशक्ति - इद्धि
खींचना - आकड्ढति
शिष्य - सिस्स
नरक - नरक
रखना - पक्खिपति
रानी - राजिनी
प्रश्न - (सं)पञ्ह/(क्रिया)पुच्छति
किरण - रस्मि
प्राप्त करना - लभति
कविता पाठ करने वाला - पवत्तु
अस्वीकार करना, त्यागना - पजहति
संबंधी, बंधु - बंधु
छोड़ देना, मुक्त करना - मुञ्चति

धातु - धातु
प्रव्रजित होना - पब्बजति
सांप की जाति का - उरग
परिषद - परिसा
चावल, भात - भत्त/ओदान/तण्दुल
ठीक - सम्मा
उगना - उदेति
नदी - नदी/वारि
सड़क, मार्ग - मग्ग
घूमना (इधर-उधर) - आहिण्डति/चरति
चीवर - चीवर
कमरा - ओवरक
रस्सी - रज्जु
शासन करना - पालेति
दौड़ना - धावति
ऋषि, साधु - इसि/मुनि
नाविक, जहाज - नाविक
बालू - वालुका
आरा - ककच
छींटना, बिखरना - विकिरति
शिल्प (विज्ञान और कला) - सिप्प
डांटना, फटकारना - विगरहति
समुद्र - समुद्द/उदधि/सिंधु
आसन - आसन

देखना - पस्सति
बीज - बीज
बेचना - विक्किणाति
भेजना - पेसेति/पहिणाति
सांप - सप्प/अहि/उरग
दास, नौकर - दास
सीना (कपड़ा) - सिब्बति
छाया - छाया
जहाज - नावा
बींधना - विज्झति
दूकान - आपण
रोग, व्याधि - व्याधि
बीमार आदमी - गिलान
उपमा - उपमा
से (जैसे १९६० से) - यतो
गाना - गायति
बहन - भगिनी
बैठना - निसीदति
आकाश - आकास
सोना (शयन करना) - सयति
लेपा हुआ - उपलित्त
कभी-कभी - कदाचि/करहचि
लड़का - पुत्त
गीत - गीत
शीघ्र - खिप्पं

शब्द, आवाज	- सद्द
बोना (बीज)	- वपति
बोलना	- भासति/कथेति
बोलने वाला, वक्ता	- वत्तु
भाषण	- कथा
खर्च करना, बिताना	- विस्सज्जेति
बर्बाद करना	- दूसेति
चम्मच	- कटच्छु
चलाना	- पत्थरति
छिड़कना या सींचना	- सिञ्चति
सोपान, सीढ़ी	- सोपान
खड़ा रहना	- तिट्ठति
चुराना	- चोरेति
पत्थर	- पासाण
दुःख	- दुक्ख
गन्ना (ईख)	- उच्छु
सूरज	- सुरिय/रवि/ भानुमन्तु
झाड़ना, बुहारना	- सम्मज्जति
मिठाई	- मोदक
तलवार	- खग्ग/असि
लेना	- आददाति/गण्हाति
बाहर निकलना	- नीहरति
तालाब	- वापि
रस	- रस
सिखाना	- वाचेति
आचार्य, शिक्षक	- आचरिय/गरु/सत्थु
आंसू	- अस्सु
प्रलोभित करना	- पलोभेति
तब	- तदा
वहां	- तत्थ
इसलिए	- तस्मा
चोर	- चोर
सोचना	- चिन्तेति
प्यास	- पिपासा
प्यासा	- पिपासित
बिजली	- असनि
इस प्रकार	- तथा
आज	- अज्ज
जिह्वा, जीभ	- जिव्हा
छूना, स्पर्श करना	- फुसति
नगर	- नगर
खजाना	- निधि
वृक्ष	- रुक्ख/तरु
कोशिश करना	- उस्सहति/वायमति
फेंकना	- छड्डेति
सत्य	- सच्च
घुमाना	- पवत्तेति
हाथी (दांत वाला)	- दाठी
बीस	- विसति

चाचा, मामा - मातुल
समझना - अधिगच्छति
जब तक - याव-ताव
नाना प्रकार - नाना
यान - रथ
विजेता - जेतु
गांव - गाम
शील, गुण - सील/गुण
शीलवान - गुणवन्तु/सीलवन्तु
वेतन, मजदूरी - वेतन
लाठी - यट्ठि
घूमना - आहिण्डति/चरति
धोना - धोवति
धोबी - रजक
पानी - उदक/जल/पानीय
कमजोर, दुर्बल - दुब्बल
धन - धन/वसु
रोना - रोदति
कब - कदा
कब से - कुतो
कहां - कुहिं/कत्थ
क्यों - कस्मा
दुष्ट व्यक्ति, असत्पुरुष - असप्पुरिस
पत्नी - भरिया/वधू
पत्नी एवं पुत्र - पुत्तदारा
जीतना - जयति
हवा - वात
प्रज्ञा - पञ्ञा
बुद्धिमान - विदू/विञ्ञू/ पञ्ञवन्तु
इच्छा करना - इच्छति/पत्थेति
साथ में - सद्धिं/सह
स्त्री - इत्थी/नारि/ युवति/वनिता
संसार - लोक
पूजा करना - वन्दति/नमस्सति
लपेटना - वेठेति
लिखना - लिखति
तुम - त्वं (एकवचन)/ (बहुवचन) तुम्हे
शिशु - सुसु
युवती स्त्री - युवति

विपश्यना साहित्य

हिंदी

- inml DArA Dm kþlþ - (pAc idvsly áAvcn) .... rE. 65/-
- áAvcn sArAÕ (iÕivr-áAvcn) .... rE. 50/-
- jAg pAvn áArfA .... rE. 90/-
- jAg StboD .... rE. 85/-
- Dm: SAdÕ jlvn kþA SADAr .... rE. 45/-
- DArf kþr to Dm .... rE. 80/-
- EyA bÂ dEKvAdl T? .... rE. 45/-
- mgl jg ghl jlvn m .... rE. 50/-
- DýmvAfl sgh (pAil gATAa av ˜hdl Snu) .... rE. 45/-
- ivpÎynA pgozA %mAirkþA .... rE. 100/-
- sØlsAr BAg 1 (dlG av mVÀJm inkþAy)............... rE. 95/-
- sØlsAr BAg 2 (syØinkþAy) .... rE. 90/-
- sØlsAr BAg 3 (SgØr av Kuþkþinkþ Ay) .... rE. 80/-
- D®y bAbA!................................. rE. 58/-
- kþ£yAfim© s¥ynArAyf goy®kþA (¯yVEt¥v SAr kþit¥v) .... rE. 50/-
- pAtjl yogs©........................... rE. 60/-
- SAhdrty, pAhdrty, Sjilkþrfly - zA. Som pkþAÕ jl .... rE. 40/-
- rAjDm [kþC aithAiskþ áAsg] .... rE. 45/-
- SA¥m-kþTn BAg-1 .... rE. 50/-
- SgØr inkþAy, BAg-1 .... rE. 125/-
- kþdly kþArAgh jypru ivpÎynA kþA pTm jl iÕivr .... rE. 50/-
- ivpÎynA : lokþmt BAg-1 .... rE. 65/-
- ivpÎynA : lokþmt BAg-2 .... rE. 70/-
- SgpAl rAjv¬ jlvkþ .... rE. 30/-
- mgl hSA áABAt (˜hdl doh) .... rE. 120/-
- pT-áAdiÕkþA .... rE. 2/-
- ivpÎynA EyA? .... rE. 1/-
- smAx SÕokþ kþ SiBlK................ rE. 85/-
- SAcAy ül s¥ynArAyf jl goy®kþA kþA sVöðA jlvn-pircy ..... rE. 30/-
- S˜hsA ikþs kþh?......................... rE. 10/-
- lkþuzkþ Bi¡y............................. rE. 10/-
- gEtm bÂ: jlvn-pircy SEr iÕöA rE. 30/-
- BgvAn bÂ kþl sÁýpdAiykþtA-ivhln iÕöA............. rE. 15/-
- bÂ-jlvn-icÛAAvll .... rE. 330/-
- BgvAn bÂ kþ SgüAvkþþmhAmoŸg£lAn .... rE. 45/-
- EyA bÂ nA‰tkþ T?..................... rE. 100/-
- itipxkþ m sýykþ sbÂ, (6 BAgA m) भाग-१ रु. ६५/-, भाग-२ रु. ८५/-, भाग-३ रु. ९०/-, भाग-४ रु. ७५/-, भाग-५ रु. ८०/-, भाग-६ रु. ८५/-
- mhAmAnv bÂ kþl mhAn iv¬A ivpÎynA kþA wdgm SEr ivkþAs (116 ic©A kþA sgh) sij£d .... rE. 625/-
- mhAkþ‰sp (DtuAgDAiryA m ‘Sg’) ... rE. 40/-
- mhAmAnv bÂ kþl mhAn iv¬A ivpÎynA kþA wdgm SEr ivkþAs ..... rE. 145/-
- BgvAn bÂ kþ SgwpAskþ SnATipV»zkþ .... rE. 50/-
- BgvAn bÂ kþl SgüAivkþA ikþsAgotml .... rE. 30/-
- icØA ghpit av h¥Tkþ SALvkþ....... rE. 35/-
- KiÛyA kþl rAh .... rE. 150/-
- ivsAKA imgArmAtA........................ rE. 45/-
- mgDrAj siny ibVýbsAr............... rE. 55/-
- bÂsh‰snAmAvll (pAil av ihdl) .. rE. 35/-
- SAn®d – BgvAn bÂ kþ wp‰TAkþ .. rE. 130/-
- jln kþl kþlA.............................. rE. 80/-
- prm tp‰vl ül rAm˜sh jl............. rE. 55/-
- BgvAn bÂ kþl SgwpAiskþAa KÙujUrA av sAmAvtl tTA wHrAn®dmAtA ..... rE. 25/-
- ivpÎynA pi©kþA sgh BAg - 1 .... rE. 80/-
- ivpÎynA pi©kþA sgh BAg - 2 .... rE. 75/-
- SAdÕ dpit nkþUliptA av nkþUlmAtA rE. 25/-
- itkþ-p§An (siöFt ÁprKA)............ rE. 35/-
- BgvAn bÂ kþ SgüAvkþ sAirpØ..... rE. 65/-
- brmA m ilKl gy™ mrl kþivtAa ...... rE. 300/-
- bAihy dArEcliry av B¡A kþuzlkþsA rE. 30/-
- rAhul av r§pAl .... rE. 40/-
- puf m®tAifpH av Dýmidÿ A .... rE. 30/-
- sof kþoiLivs av sofA................ rE. 30/-
- rAhulmAtA (yÕoDrA)..................... rE. 35/-
- BgvAn bÂ kþ mhAüAvkþ SAyÜnAn SnrûÂ....................... rE. 35/-
- ivpÎynA pi©kþA sgh BAg - 3 .... rE. 74/-
- ivpÎynA pi©kþA sgh BAg - 4 .... rE. 84/-
- KmA av wFplv»fA..................... rE. 30/-
- pxAcArA av B¡A kþAiplAnl .... rE. 30/-
- ivpÎynA pi©kþA sgh BAg - 5 .... rE. 80/-
- ivpÎynA pi©kþA sgh BAg - 6 .... rE. 85/-
- SA¥m-kþTn BAg-2 .... rE. 80/-
- mhApjApit gotml .... rE. 30/-
- cAr mhØvpf lK: lokþ gru bÂ, dÕ kþl

bAh¿ smöA, gfrAÀy kþI smöA kþs ho!,
....ÕAEyA SAr kþilyA kþ gft© kþA ivnAÕ
EyA hSA?..................................rß.35/-

- mHAivhAirfl mAtAjl....................rß. 80/-
- ivpÎynA pi©kþA sgh BAg - 7.......rß. 100/-
- BgvAn bÂ kþ mhAüAvkþpwpAil ......rß. 30/-
- Dým-vdnA
  (pAil gATAa, ˜hdl SnuAd) ....rß. 50/-
- Dýmpd
  (sÕoiDt ˜hdl SnuAd siht).........rß. 50/-
- mhAsitp§AnsØ
  (smlöA av BAúAnuAd)..................rß.65/-
- mhAsitp§AnsØ (BAúAnuAd) ....rß. 35/-
- pAriBkþ pAil ....rß. 85/-
- pAriBkþ pAil kþI kuj I ....rß. 50/-
- ivÎv ivpÎynA ‰tp kþA sdÕ (˜hdl,
  mrAXI, Sgjl) ....rß. 15/-
- bÂgfigATAvlI (pAil) ....rß. 30/
- bÂsh‰snAmAvlI (pAil)...............rß. 15/-
- jAgo logA jgt rA (rAj‰TAnl dhA) .rß. 45/-
- pirBAúA Drm rI (rAj‰TAnl) ....rß. 10/-
- 5 rAj‰TAnl pùtkþASA kþA sx........rß. 5/-

मराठी

- jg»yAcl kþIA.............................rß. 75/-
- jAg pAvn áArfA ....rß. 80/-
- áAvcn sArAÕ ....rß. 45/-
- Dm: SAdÕ jlvnAcA SADAr............rß. 45/-
- jAg StboD...............................rß. 65/-
- inmL DArA DmAcl ....rß. 45/-
- mhAsitp§AnsØ (BAúAnuAd) ....rß. 45/-
- mhAsitp§AnsØ (smlöA) ....rß. 40/-
- mglmy gh‰T-jlvn.....................rß. 40/-
- BgvAn bÂAcl
  sAáAdAiykþtA-ivhln iÕkþvfkþ........rß. 12/-
- bÂjlvn-icÛAAvlI........................rß. 330/-
- SAndÆyA vAxvr...........................rß. 150/-
- SA¥m-kþTn BAg-1 ....rß. 50/-
- SgpAl rAjv¬ jlvkþ...................rß. 20/-
- mhAmAnv bÂAcl mhAn iv¬A
  ivpÎynA: wgm SAif ivkþAs ....rß. 125/-
- lokþ gui bÂ ....rß. 10/-
- Ikþuzkþ Bi¡y............................rß. 12/-
- pmK ivpÎynAcAy ül s¥ynArAyfjl
  goykþA yAcA siöFt jlvn-pircy.....rß. 25/-
- BgvAn bÂAc SgwpAskþ
  SnATipV»zkþ..............................rß. 45/-
- BgvAn bÂAcl SgwpAiskþA
  ivsAKA imgArmAtA........................rß. 35/-
- BgvAn bÂAc SgwpAskþ icØA
  ghpit v h¥Tkþ SALvkþ................rß. 30/-
- BgvAn bÂAcl SgüAivkþA ikþsAgotml rß. 25/-
- Dýmpd (pAil-mrAXI).....................rß. 45/-
- ivpÎynA kþÕAsAXI?.....................rß. 1/-
- mgDrAj siny ibÝbsAr................rß. 50/-
- mhAmAnv bÂAcI mhAn iv¬A ivpÎynA:
  wgm SAif ivkþAs........................rß. 525/-
- pAriBkþ pAlI................................rß. 65/-
- pAriBkþ pAlIcI kuj I ....rß. 40/-
- BgvAn bÂAc mhAüAvkþmhAkþ‰sp
  (DuAgDAr™t ‘Sg’) ....rß. 35/-
- kþAy bÂ duKvAdI hot? ....rß. 40/-
- BgvAn bÂAcþ SgüAvkþmhAmoŸg£lAn..rß. 45/-
- D®ybAbA .... rß. 55/-

गुजराती

- áAvcn sArAÕ ....rß. 45/-
- Dm: SAdÕ jlvnno SADAr............rß. 60/-
- mhAsitp§AnsØ...........................rß. 20/-
- jAg StboD................................rß. 85/-
- DArf kþr to Dm ....rß. 80/-
- jAg pAvn prfA ....rß. 105/-
- EyA bÂ duKvAdI T? ....rß. 40/-
- ivpÎynA ÕA mAx? (pùtkþA) ....rß. 02/-
- mgl jg ghl jlvn m.................rß. 50/-
- inml DArA Dm kþlþ.......................rß. 70/-
- bÂjlvn-icÛAAvlI........................rß. 330/-
- lokþ gui bÂ ....rß. 15/-
- BgvAn bÂ kþl
  sAýpdAiykþtA-ivhln iÕöA.............rß. 10/-
- smAx SÕokþ kþ SiBlK................rß. 75/-
- KiÕyA kþI rAh ....rß. 175/-

अन्य भाषाओं में

- d SAx SAPþ il˜vg (timL)...........rß. 90/-
- iz‰kþos smrlj (timL)................rß. 55/-
- gisys Êlo SAPþ Dým (timL).......rß. 55/-
- mgl jg ghl jlvn m (tlgu).......rß. 55/-
- áAvcn sArAÕ (bgAll)...................rß. 65/-
- Dm: SAdÕ jlvn kþA SADAr (bgAll).rß. 60/-
- mhAsitp§AnsØ (bgAll) ....rß. 90/-
- áAvcn sArAÕ (mlyAlm)...............rß. 45/-
- inml DArA Dm kþl (mlyAlm) ....rß. 45/-
- jln kþA hur (wd) ....rß. 75/-
- Dm: SAdÕ jlvn kþA SADAr (pjAbl) rß. 50/-
- inmL DArA DmAcl (pjAbl) ....rß. 70/-
- mgl jg ghI jlvn m (pjAbl) .....rß. 50/-
- ikþsAgotmI (pjAbl).....................rß. 30/-

पालि तिपिटक सेटः

अङ्गुत्तरनिकाय (अजिल्द) (१२ ग्रंथ)	रु. १५००/-
खुद्दकनिकाय – सेट १ (९ ग्रंथ)	रु. ५४००/-
दीघनिकाय अभिनवटीका (रोमन)	
(भाग १ और २)	रु. १०००/-

English Publications

- Sayagyi U Ba Khin Journal ..... Rs. 325/-
- Essence of Tipitaka by U Ko Lay ..... Rs. 155/-
- The Art of Living by Bill Hart ..... Rs. 100/-
- The Discourse Summaries ..... Rs. 65/-
- Healing the Healer by Dr. Paul Fleischman..... Rs. 45/-
- Come People of the World..... Rs. 40/-
- Gotama the Buddha: His Life and His Teaching ..... Rs. 50/-
- The Gracious Flow of Dharma ..... Rs. 55/-
- Discourses on Satipaṭṭhāna Sutta..... Rs. 90/-
- The Wheel of Dhamma Rotates..... Rs. 850/-
- Vipassana : Its Relevance to the Present World..... Rs. 160/-
- Dharma: Its True Nature ..... Rs. 115/-
- Vipassana : Addictions & Health (Seminar 1989)..... Rs. 115/-
- The Importance of Vedanā and Sampajañña..... Rs. 165/-
- Pagoda Seminar, Oct. 1997..... Rs. 80/
- Pagoda Souvenir, Oct. 1997 ..... Rs. 50/-
- A Re-appraisal of Patanjali's Yoga- Sutra by S. N. Tandon.... Rs. 96/-
- The Manuals Of Dhamma by Ven. Ledi Sayadaw..... Rs. 280/-
- Was the Buddha a Pessimist? ..... Rs. 65/-
- Psychological Effects of Vipassana on Tihar Jail Inmates..... Rs. 80/-
- Effect of Vipassana Meditation on Quality of Life (Tihar Jail) Rs. 100/-
- For the Benefit of Many..... Rs. 220/-
- Manual of Vipassana Meditation ..... Rs. 85/-
- Realising Change..... Rs. 160/-
- The Clock of Vipassana Has Struck ..... Rs. 150/-
- Meditation Now : Inner Peace through Inner Wisdom..... Rs. 90/-
- S. N. Goenka at the United Nations..... Rs. 25/-
- Mahāsatipaṭṭhāna Sutta..... Rs. 70/-
- Pali Primer ..... Rs. 95/-
- Key to Pali Primer..... Rs. 55/-
- Guidelines for the Practice of Vipassana ..... Rs. 2/-
- Vipassana In Government..... Rs. 1/-
- The Caravan of Dhamma..... Rs. 90/-
- Peace Within Oneself ..... Rs. 30/-
- The Global Pagoda Souvenir 29 Oct.2006 (English & Hindi) Rs. 60/-
- The Gem Set In Gold ..... Rs. 145/-
- The Buddha's Non-Sectarian Teaching ..... Rs. 20/-
- Acharya S. N. Goenka An Introduction..... Rs. 35/-
- Value Inculcation through Self-Observation ..... Rs. 55/-

- Glimpses of the Buddha's Life ..... Rs. 330/-
- Pilgrimage to the Sacred Land of Dhamma (Hard Bound) ..... Rs. 750/-
- An Ancient Path ..... Rs. 120/-
- Vipassana Meditation and the Scientific World View ..... Rs. 30/-
- Path of Joy ..... Rs. 200/-
- The Great Buddha's Noble Teachings The Origin & Spread of Vipassana (Small) ..... Rs. 195/-
- Vipassana Meditation and Its Relevance to the World (Coffee Table Book) ..... Rs. 800/-
- The Great Buddha's Noble Teachings The Origin & Spread of Vipassana (HB) ..... Rs. 650/-
- Chronicles Of Dhamma ..... Rs. 260/-
- Views on Vipassana ..... Rs. 70/-
- Be Happy! (A Life Story of Meditation Teacher S.N.Goenka) ..... Rs. 165/-
- Three Important Papers: Defence Against External Invasion, How To Defend The Republic and Why was the Sakyan Republic Destroyed? ..... Rs. 40/-
- Vipassana Newsletter Collection Part 1 ..... Rs. 95/-
- Vipassana Newsletter Collection Part 2 ..... Rs. 120/-
- Vipassana Newsletter Collection Part 3 ..... Rs. 115/-
- Buddhaguṇagāthāvalī (in three scripts) ..... Rs. 30/-
- Buddhasahassanāmāvalī (in seven scripts) ..... Rs. 15/-
- English Pamphlets, Set of 9 ..... Rs. 11/-
- Set of 10 Post Card ..... Rs. 35/-
- Gotama the Buddha: His Life and His Teaching (French) ..... Rs. 50/-
- Meditation Now: Inner Peace through Inner Wisdom (French) Rs. 80/-
- For the Benefit of Many (French) ..... Rs. 195/-
- The Discourse Summaries (French) ..... Rs. 105/-
- Discourses on Satipaṭṭhāna Sutta (French) ..... Rs. 115/-
- Mahāsatipaṭṭhāna Sutta (French) ..... Rs. 100/-
- The Clock of Vipassana Has Struck (French) ..... Rs. 210/-
- For the Benefit of Many (Spanish) ..... Rs. 190/-
- The Art of Living (Spanish) ..... Rs. 130/-
- Path of Joy (German, Italian, Spanish, French) ..... Rs. 300/-

संपर्कः विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, जि. नाशिक, महाराष्ट्र.
फोनः ०२५५३-२४४९९८, २४४०७६, २४४०८६, २४३७१२, २४३२३८. फैक्सः ०२५५३-२४४१७६. (दक्षिण भारतीय भाषाओं में अनुवादित विपश्यना साहित्य, स्थानीय केंद्रों पर उपलब्ध है)
Email: vri_admin@dhamma.net.in;

विपश्यना विशोधन विन्यास के प्रकाशन अब ऑनलाइन भी खरीदे जा सकते हैं। कृपया देखें www.vridhamma.org

विपश्यना साधना केंद्र

ivÎvBr m ivpÎynA E§ E§ul 194 E§d h ijnm BArt m 89 E§d h wnm s E§G kþªA E§ nAm yhA idy jA rh h¦ qn kþªA pr pAy: hr mAh ds idvsIy SAvAsIy iÕivr SAyoi jt hot h¦ qœCkþ ¯yVEt ikþsI BI kþª s BAvI iÕivr-kþAykþmA kþI jAnkþArI áAAðA kþrkþ, SpnI suivDAnusAr sVÿmilt ho skþt h:þ–

प्रमुख केंद्र = धम्मगिरि, धम्मतपोवनः ivpÎynA ivÎv iv¬ApIX, qgtpurI-422403, nAiÕkþ. Pþon: [91] (02553) 244076, 244086, 243712, 243238; PþEs: 02553-244176. Website: www.vridhamma.org, Email: <info@giri.dhamma.org> (kþvl kþAyAly kþ smy STAt subh 10 bj s sAy 5 bj tkþ).

धम्मपत्तनः a‰sl v£z kþ pAs, gorAq KAzI, borIvlI (piòcm) mubq – 400 091 **व्यवस्थापक,** Pþon: (91) (022) 2845-2238, 3374-7501, mobA. 97730-69975, (subh 11 s sAy 5 bj tk); xil-PþEs: (022) 3374-7531, Email: info@pattana.dhamma.org; Website: www.pattana.dhamma.org

धम्मथलीः ivpÎynA kþª, po.bA. 208, jypur-302001, rAj‰TAn, Pþon: [91] 0141-2680220, mobA. 0-96104-01401, 09982049732, PþEs: 2576283. Email: info@thali.dhamma.org

धम्मसिन्धुः kþœC ivpÎynA kþ®ª, gAm- bAzA, tA. mAzvI, ijlA- kþœC 370475. Pþon: (02834) 273303, PþEs: 224488, 288911; Email: info@sindhu.dhamma.org **संपर्कः** ülI ÕAh, mobA. 99091-70200.

धम्मखेत्तः ivpÎynA S®trAÏxIy sADnA kþª, mAql ‰xon nAgAjur sAgr roz, kþusum ngr, vn‰TlIpurm hdrAbAd-500070, (SAD áAdÕ) Pþon: (040) 24240290, 32460762, Email: info@khetta.dhamma.org

धर्मश्रृंगः npAl ivpÎynA kþª, mulAn poKrI, bZAnIlkþX, po. bA. 12896, kþAXmAz, Pþon: 977 (01) 4371655, 4371007, 4250581, 4225490; Email: info@sringa.dhamma.org;

Myanmar

Dhamma Joti: Vipassana Centre, Wingaba Yele Kyaung, Nga Htat Gyi Pagoda Road, Bahan, Yangon, Myanmar Tel: [95] (1) 549 290, 546660; Office: No. 77, Shwe Bon Tha Street, Yangon, Myanmar. Fax: [95] (1) 248 174, Email: bandoola@mptmail.net.mm; goenka@ mptmail.net.mm; Email: dhammajoti@mptmail.net.mm

Dhamma Ratana: Oak Pho Monastery, Myoma Quarter, Mogok, Myanmar Contact: Dr. Myo Aung, Shansu Quarter, Mogok. Mobile: [95] (09) 6970 840, 9031 861;

Sri Lanka

Dhamma Kūṭa: Vipassana Meditation Centre, Mowbray, Hindagala, Peradeniya, Sri Lanka Tel/Fax: [94] (081) 238 5774; Tel: [94] (060) 280 0057; Website: www.lanka.com/dhamma/dhammakuta; Email: dhamma@sltnet.lk

Thailand

Dhamma Kamala: Thailand Vipassana Centre, 200 Yoo Pha Suk Road, Ban Nuen Pha Suk, Tambon Dong Khi Lek, Muang District, Prachinburi Province, 25000, Thailand Tel. [66] (037) 403- 514-6, [66] (037) 403 185; Email: info@kamala.dhamma.org

Australia & New Zealand

Dhamma Bhūmi: Vipassana Centre, P. O. Box 103, Blackheath, NSW 2785, Australia Tel: [61] (02) 4787 7436; Fax: [61] (02) 4787 7221, Email: info@bhumi.dhamma.org

Europe

Dhamma Dīpa: PENCOYD, ST. OWENS CROSS, HR2 8NG, UK Tel: [44] (01989) 730 234; Fax: [44] (01989) 730 450; Email: info@dipa.dhamma.org

North America

Dhamma Dharā: VMC, 386 Colrain-Shelburne Road, Shelburne MA 01370-9672, USA Tel: [1] (413) 625 2160; Fax: [1] (413) 625 2170; Email: info@dhara.dhamma.org

South Africa

Dhamma Patākā: (Rustig) Brandwacht, Worcester, 6850, P. O. Box 1771, Worcester 6849, South Africa Tel: [27] (23) 347 5446; Email: info@pataka.dhamma.org

---

शेष विपश्यना केन्द्र के पते, फोन, इमेल निम्न वेबसाइट पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैंः-

Website: www.vridhamma.org, www.dhamma.org

ISBN 978-81-7414-323-5

VRI - H60